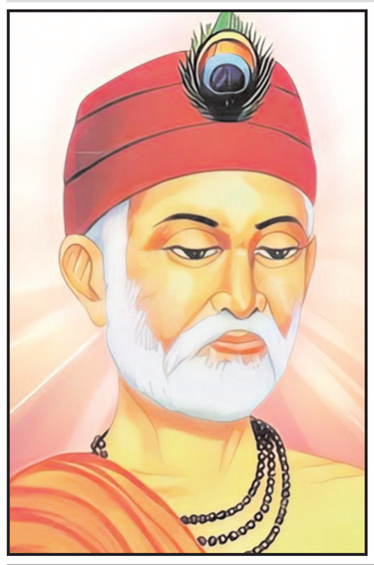

दैनिक
मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, छत्तीसगढ़ से प्रकाशित
चम्बल सुर्खी
उत्कृष्ट एवं सफल प्रकाशन के 37 वर्ष
निष्पक्ष एवं निर्भीक विचारों का प्रवक्ता

आज का तापमान
अधिकतम 44 डिग्री
न्यूनतम 30 डिग्री

दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी पुलिस हिरासत में

कालकाजी में झुग्गियों को तोड़ने का विरोध करने पहुंची थीं, बोलीं- गरीबों की हाय लगेगी

नई दिल्ली,ए.।

दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को पूर्व सीएम आतिशी को हिरासत में ले लिया। वे कालकाजी के भूमिहीन कैंप में झुग्गियां को तोड़े जाने का विरोध कर रही थीं।

पूर्व सीएम ने कहा, बीजेपी इन झुग्गियां को तोड़ने वाली है। आज मुझे जेल लेकर जा रही है, क्योंकि मैं इन झुग्गी वालों की आवाज उठा रही हूं। बीजेपी, सीएम रेखा गुप्ता जी आप लोगों को झुग्गी वालों की हाय लगेगी। बीजेपी कभी वापस नहीं आएगी, इन गरीबों की हाय लगेगी।

AAP के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर कहा, मात्र तीन महीनों में इन्होंने दिल्ली को बर्बाद कर दिया। बीजेपी सरकार पूरी दिल्ली में गरीबों के आशियाने उजाड़ रही है, लोगों को बेघर कर रही है। जब आम आदमी पार्टी गरीबों के साथ खड़ी होती है और उनकी आवाज़ उठाती है, तो हमारे नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाता है।

दिल्ली में अपार्टमेंट के सातवें फ्लोर पर आग लगीः दो बच्चों और पिता ने बालकनी से छलांग लगाई; तीनों की मौत

नई दिल्ली। दिल्ली के द्वारका सेक्टर-13 स्थित शबद अपार्टमेंट की सातवीं मंजिल के एक फ्लैट में मंगलवार सुबह आग लग गई। फ्लैट के अंदर एक पिता अपने दो बच्चों (एक लड़का-एक लड़की) के साथ फंस गए थे। बचने के लिए 10 साल के दोनों बच्चों ने बालकनी से छलांग लगाई। उनके साथ उनके पिता यश यादव (35) ने भी छलांग लगा दी। तीनों को अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दिल्ली फायर सर्विस ने बताया कि उन्हें सुबह 10:01 बजे इस घटना की सूचना मिली, जिसके बाद तुरंत आठ फायर टेंडर मौके पर भेजे गए। दमकल कर्मियों ने बिना देर किए बचाव और आग बुझाने का अभियान शुरू कर दिया था। आग लगने के कारण का पता लगाया जा रहा है।

मोदी सरकार के 11 साल सीएम योगी बोले-

नया भारत शांति की रट नहीं लगाता... ऑपरेशन सिंदूर से मुंहतोड़ जवाब देता है

लखनऊ,ए.।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्ष का कार्यकाल भारत वर्ष के स्वर्णिम काल के रूप में जाना जाएगा। इस कार्यकाल में पीएम मोदी ने भारत को वैश्विक पहचान दी है। कांग्रेस समेत अन्य अस्थिर सरकारों में आमजन का विश्वास टूट गया था। वैश्विक स्तर पर भारत की छवि तार-तार हो गई थी। पीएम मोदी के भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण और परिवारवाद से मुक्त नेतृत्व ने देश को विकसित और आत्मनिर्भर बनाकर अगले 25 वर्ष के लिए कार्ययोजना प्रस्तुत की है। इन 11 वर्षों ने सामाजिक और संस्कृतिक पक्ष के साथ ही सेवा, सुशासन के साथ आर्थिक मोर्चे पर देश को एक नई पहचान दी है।शासन की नीति स्पष्टता, कार्य प्रणाली की पारदर्शिता और जनता के प्रति जवाबदेही शासन की नई पहचान बनी है। विकास केवल नारे नहीं हैं। इन वर्षों ने विरासत और विकास का समन्वय करते हुए हुए देश को दुनिया में नई पहचान दिलाई। अब चेहरा देख कर नहीं बल्कि जरूरत देख कर सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जाता है। मुख्यमंत्री योगी मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर भाजपा मुख्यालय में मीडिया को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पिछले 11 साल में राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस को हमने देखा है। यह 11 साल का समय उस वक्त पूरा हो रहा है जब भारत की सामरिक शक्ति को पूरे विश्व ने देखा है। पाकिस्तान में टेस्टेड और दुनिया में ट्रस्टेड भारत की सैन्य शक्ति मानी गई है। कोई हम पर युद्ध थोपेगा तो उसका जवाब सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और आपरेशन सिंदूर से दिया जाएगा। अब भारत दुनिया में शांति की रट लगाने वाला देश नहीं है बल्कि युद्ध थोपने पर कड़ा जवाब देने वाला देश है।

देश को एक भारत श्रेष्ठ भारत के रूप में प्रस्तुत किया गया

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि इन 11 वर्षों में भारत को एक भारत श्रेष्ठ भारत के रूप में प्रदर्शित किया गया है। विकसित भारत के लिए पंच प्रण और 11 संकल्प बताए गए हैं। 11 साल में भारत ने विकसित भारत की आधारशिला पंच प्रण के आधार पर रखी है। समावेशी विकास शुरू किए गए हैं। ढांचागत विकास का मॉडल बनाया है। तकनीक के उपयोग के माध्यम से भ्रष्टाचार पर काबू पाया गया।

सामाजिक न्याय के साथ ही अर्थव्यवस्था को मजबूत किया

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि मोदी सरकार के कार्यकाल में हर हाल में आरक्षण की सुरक्षा की गई है। सामाजिक न्याय को सुरक्षित किया गया है। पिछले 11 साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमने नए भारत का दर्शन किया। पिछले 11 वर्ष में भारत ने 11वीं से चौथी अर्थव्यवस्था बनने का गौरव प्राप्त किया। हमने उस ब्रिटेन को पछाड़ा जो हम पर 200 साल तक राज कर चुका है। भारत ने अपनी प्रति व्यक्ति आय को 11 साल में दोगुना किया है। भारत का निर्यात कई गुना बढ़ा है। भारत की विकास दर जिस तरह बढ़ रही है उससे 2027 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा।

पहलगाम आतंकी हमला केंद्र की लापरवाही का नतीजाः ममता

विधानसभा में पूछा- हमले वाली जगह पर सिक्योरिटी क्यों नहीं थी; कहा- मोदी सरकार इस्तीफा दे

कोलकाता,ए.।

पश्चिम बंगाल विधानसभा में मंगलवार को सशस्त्र बलों की प्रशंसा करने वाला प्रस्ताव पेश किया गया। इस दौरान श्रृरू ममता ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा। ममता ने कहा- पहलगाम आतंकी हमला केंद्र की लापरवाही का नतीजा था। ममता ने पूछा- आतंकी हमले वाली जगह पर सुरक्षाकर्मी क्यों नदारद थे। ममता ने कहा कि भाजपा सशस्त्र बलों की वीरता का राजनीतिकरण करने की कोशिश कर रही है, भाजपा सरकार को चले जाना चाहिए क्योंकि वह देश के लोगों को सुरक्षा देने में नाकाम है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर कटाक्ष करते हुए आरोप लगाया कि पीएम मोदी केवल अपने बारे में विज्ञापन देने में बिजी हैं।

ममता ने विधानसभा में यह भी कहा कि पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान पर किया की गई एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर पीओके (पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर) को वापस लेने का एक अच्छा मौका था। ममता ने आरोप लगाया कि जब-जब चुनाव नजदीक आते हैं, तब-तब भाजपा पुलवामा जैसी घटनाएं करवाती है। हालांकि इन सबके बावजूद, राष्ट्र की सुरक्षा में सशस्त्र बलों के साहस की सराहना करते हुए प्रस्ताव पेश किया गया, जिसे बिना किसी विरोध के पारित कर दिया गया।

बनास-नदी में डूबने से जयपुर के 8 युवकों की मौत

पिकनिक मनाने गए थे, एक-दूसरे को बचाने में डूब गए

टोंक,ए.।

टोंक की बनास नदी में डूबने से 8 लोगों की मौत हो गई है। तीन युवकों को बचा लिया गया। पुलिस और बचाव दल मौके पर पहुंचा था। मरने वाले सभी लोग जयपुर के रहने वाले थे। ये पिकनिक मनाने गए थे। एसपी विकास सांगवान ने बताया कि हादसा आज (मंगलवार) दोपहर सदर थाना क्षेत्र के कच्चा बांध, पुराना बनास पुलिया पर हुआ। 11 युवक नदी में डूबे थे, 8 की मौत हो गई और तीन को स्थानीय लोगों ने बचा लिया है। जयपुर पुलिस से कॉन्टैक्ट किया गया है। एसपी ने बताया कि ये सभी दोस्त थे। प्रारंभिक जानकारी में सामने आया कि इनमें से कुछ युवक नहाने के लिए नदी में उतरे थे और डूबने लगे। इन्हें बचाने के लिए बाकी दोस्त भी नदी में उतर गए और वे हादसे का शिकार हो गए।

देश में 6800 कोरोना केस, 68 मौतः 24 घंटे में 300 से ज्यादा मामले बढ़े

ग्वालियर में 3 डॉक्टर पॉजिटिव, हेल्थ डिपार्टमेंट अलर्ट पर

नई दिल्ली/ मुंबई/ बेंगलुरु/तिरुवनंतपुरम

देश में कोरोनावायरस के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। एक्टिव केसों की संख्या 6815 पहुंच गई है। बीते 24 घंटे में 324 नए मामले सामने आए हैं। केरल में सबसे ज्यादा 2053 केस हैं। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, कोरोना के नए वैरिएंट्स से 12 राज्यों में 68 मरीजों की मौत हुई हैं। सोमवार को केरल, दिल्ली और झारखंड में 1-1 मरीज ने जान गंवाई है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा 18 मौतें हुई हैं। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में सोमवार को 3 डॉक्टर समेत 6 नए केस सामने आए। इसके बाद से जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग हाई अलर्ट पर है। MP में फिलहाल 43 एक्टिव केस हैं। कोरोना के बढ़ते मामले के बीच पश्चिम बंगाल की CM ममता बनर्जी ने सोमवार को राज्य के सभी प्रमुख विभागों के अधिकारियों से बैठक की। ममता ने कहा- उम्मीद है कि महामारी दोबारा न लौटे, लेकिन हमें तैयार रहना होगा। राज्य के सरकारी अस्पतालों में इलाज की पूरी व्यवस्था है, ऐसे में लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है।

प्रदेश की 20 हजार 600 सुदूर बसाहटों को मुख्य मार्ग से जोड़ने 21 हजार 630 करोड़

मुख्यमंत्री मजरा-टोला सड़क योजना अंतर्गत 30 हजार 900 किलोमीटर सड़क का होगा निर्माण

प्रदेश के बाहर से आयातित तुअर पर मंडी फीस से पूर्णतः छूट दिए जाने का निर्णय

भोपाल ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा मुख्यमंत्री मजरा-टोला सड़क योजना अंतर्गत प्रदेश के सुदूर बसाहटों मजरा/टोला/धोनी/पुरा इत्यादि को बारहमासी सम्पर्कता प्रदान करने 21 हजार 630 करोड़ रूपये की सैद्धांतिक स्वीकृति दी गई। स्वीकृति अनुसार योजना का क्रियान्वयन 2 चरणों में किया जायेगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 से 2029-30 तक पहले चरण एवं वित्तीय वर्ष 2030-31 से 2034-35 तक दूसरे चरण में कुल अनुमानित 30 हजार 900 कि.मी. मार्ग का निर्माण होगा। योजना का क्रियान्वयन राज्य मद से किया जायेगा।

योजना के संबंध में मध्यप्रदेश ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण की साधिकार समिति को निर्णय लिये जाने के लिए अधिकृत किया गया है। स्वीकृति अनुसार न्यूनतम 20 आवास और 100 से अधिक जनसंख्या वाले 6 हजार वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्रफल वाले ऐसे क्षेत्र, जिसके 50 मीटर की दूरी में पूर्व से बारहमासी सड़क न हो, को बसाहट के अंतर्गत लिया जायेगा। इसके लिए बसाहट की जनसंख्या के घटते क्रम में विधानसभा क्षेत्रवार प्राथमिकता सूची तैयार की जायेगी। सांसद, क्षेत्रीय विधायक और जिला पंचायत सदस्यों के परामर्श पर ग्रामीणजनों की स्थानीय आवश्यकता जैसे - सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के आधार पर बसाहटों की प्राथमिकता में कलेक्टर द्वारा लिपिबद्ध कारणों से सूची में परिवर्तन किया जा सकेगा। अंतिम प्राथमिकता सूची का राज्य स्तर पर प्रकाशन किया जायेगा।

योजना अंतर्गत 20 हजार 600 बसाहटों को मुख्य मार्ग से जोड़ने के लिए लगभग 30 हजार 900 किलोमीटर मार्ग का निर्माण किया जायेगा।

सेना को नया एयर डिफेंस सिस्टम QRSAM मिलेगाः इसकी खासियत मूविंग टारगेट तबाह करना

DRDO से 30 हजार करोड़ में 3 रेजिमेंट खरीदी जाएंगी

नई दिल्ली। भारतीय सेना को जल्द ही नया एयर डिफेंस सिस्टम मिल सकता है। डिफेंस के अधिकारियों के मुताबिक- रक्षा मंत्रालय चीन और पाकिस्तान बॉर्डर पर तैनाती के लिए क्विक रिएक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल सिस्टम (QRSAM) की तीन रेजिमेंट खरीदने को लेकर विचार कर रहा है। ये डील ?30 हजार करोड़ की होगी। QRSAM दिन और रात दोनों समय कारगर है, इसकी सफल टेस्टिंग भी की जा चुकी है। अधिकारियों के मुताबिक, इस डिफेंस सिस्टम को डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (DRDO) ने तैयार किया है। ये एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता है। QRSAM सिस्टम में मूविंग टारगेट खोजने, ट्रैक करने और कम समय में फायर करने की कैपेसिटी है। लगभग 30 KM की रेंज के साथ QRSAM मीडियम से कम डिस्टेंस में मीडियम रेज सरफेस टू एयर मिसाइल सिस्टम (MRSAM) और आकाश जैसी मौजूदा एयर डिफेंस सिस्टम को सपोर्ट करेगी।

हरियाणा में मुआवजा नहीं मिलने पर हाईवे पर कब्जाः ट्रैक्टर-ट्रॉली खड़े कर दीवार बनाने लगे

पुलिस उठा ले गई; किसान समेत 5 पर FIR

कुरुक्षेत्र,ए.।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र में मंगलवार सुबह कुछ लोगों ने पिहोवा में स्टेट हाईवे नंबर 6 पर कब्जा कर लिया। उन्होंने बीच सड़क पर ट्रैक्टर ट्रॉली अड़ाकर दीवार बनानी शुरू कर दी। सूचना मिलते ही नायब तहसीलदार पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने समझाने की कोशिश की, लेकिन कब्जा करने वाले नहीं माने। इसके बाद पुलिस ने कुछ लोगों को हिरासत में ले लिया। इसके बाद हाईवे पर रखी ईंटें उठाई गईं और ट्रैफिक चालू कराया गया। किसान का आरोप है कि PWD ने सन 1987 में उसकी जमीन पर सड़क बना दी। मैं 3 बार कोर्ट से केस जीत चुका हूं। अभी तक मुझे इसका मुआवजा नहीं मिला है। इसलिए परेशान होकर कब्जा करने का फैसला लेना पड़ा। पिहोवा सिटी थाना के SHO जानपाल सिंह ने बताया कि FIR में किसान बलविंद्र सिंह के साथ नरेंद्र सिंह, विपिन सिंह, अमृतपाल सिंह, दलजीत सिंह को नामजद किया गया है। PWD के SDO सुरेंद्र कुमार ने शिकायत दी थी। अभी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

22 मरले जमीन पर बनी सड़क- अमृतसरी फार्म के रहने वाले किसान बलविंद्र सिंह ने बताया कि मेरी 22 मरले जमीन पर PWD ने बिना मुआवजा दिए सड़क बना दी। 2006 में मैंने सिविल कोर्ट में केस दायर किया। 2013 में पिहोवा कोर्ट ने आदेश दिया कि 6 महीने में या तो किसान को मुआवजा दें या फिर सड़क को हटा लें।

2018 में कोर्ट ने कब्जा दिलवाया- बलविंद्र ने आगे बताया कि सरकार द्वारा कोई कार्रवाई न किए जाने पर हमने कोर्ट में एक्जीक्यूशन फाइल की। सरकार की आपत्तियां खारिज होने के बाद 2018 में कोर्ट ने कब्जा दिलवाया। इसके बाद सरकार हाईकोर्ट चली गई, जहां भी उनकी याचिका खारिज हो गई। 2023 में भी सड़क पर ईंटें लगाईं- किसान ने कहा कि 2023 में मैंने सड़क पर कब्जा लेने की कोशिश की। तब SDM ने कहा कि 2-4 दिन में मुआवजे का पैसा दे देंगे। उनके आश्वासन पर सड़क से ईंटें हटाईं। फिर भी मुआवजा देने के बजाय वे कोर्ट में चले गए। वहां से भी PWD को राहत नहीं मिली। किसान बोला- कब्जा नहीं छोड़ेंगे- बलविंद्र सिंह ने बताया कि मंगलवार सुबह 11 बजे अपने साथियों के साथ डंपिंग जोन के पास सड़क पर ट्रैक्टर-ट्रॉली लगाकर दीवार खड़ी कर दी। देखते ही देखते दोनों तरफ लंबा जाम लग गया।

बेताल, पवन एवं दुलारी बाई को मिली 10-10 हजार रूपये की आर्थिक सहायता

दिव्यांग दंपत्ति के बच्चों को मिलेगा स्पोन्सरशिप योजना का लाभ, जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा जनसुनवाई के दौरान प्राप्त आवेदनों का निराकरण करते हुए हितग्राहीमूलक योजनाओं में जहां हितग्राहियों को लाभ प्रदान किया गया, वही जरूरतमंद परिवारों को तात्कलिक सहायता के रूप में रेडक्रॉस के माध्यम से आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई। इसके साथ ही बुजुर्ग श्री रामचरण प्रजापति निवासी रन्नौद को सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में लाभ दिये जाने के निर्देश दिये गये। आवास से संबंधित श्री प्रदीप आदिवासी निवासी सेवला नहरखेडा के आवेदन का मौके पर ही निराकरण करते हुए आवास की प्रथम किस्त का एफटीओ किया गया तथा जनसुनवाई कार्यक्रम में ही आवास की प्रथम किस्त खाते में हस्तातंरित की गई। जनसुनवाई के दौरान कुल 170 आवेदन प्राप्त हुए। जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर, डिप्टी कलेक्टर श्री संजय जैन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहें।

बेताल, पवन एवं दुलारी बाई को मिली 10-10 हजार रूपये की आर्थिक सहायता

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा ग्राम अर्रोदरी निवासी श्री बेताल बंजारा को परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के चलते तात्कालिक सहायता के रूप में 10 हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई, साथ ही उनके दिव्यांग पुत्र हेमराज बंजारा का आधार बनवाकर पेंशन चालू कराने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये। इसी प्रकार निराश्रित महिला श्रीमती दुलाई बाई निवासी बडौदिया घाट को भी आर्थिक सहायता प्रदान करते हुए 10 हजार रूपये की राशि का चैक सौपा गया। महिला ने बताया कि उसे सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि 600 रूपये मिलती है, परिवार में कोई नही है, जीवनयापन में कठिनाई हो रही है तथा देखरेख के अभाव में पुश्तैनी घर भी गिर गया है। इस पर कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा 10 हजार रूपये की सहायता राशि प्रदान की गई, साथ ही तहसीलदार को आरबीसी 6-4 के तहत सहायता राशि का प्रकरण तैयार करने के निर्देश दिये। इसी प्रकार श्री पवन शर्मा निवासी मधुवन कॉलोनी श्योपुर को पुत्र के उपचार हेतु 10 हजार रूपये की आर्थिक सहायता दी गई, साथ ही आयुष्मान योजना के तहत निशुल्क उपचार हेतु व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश आरबीएसके प्रभारी श्रीमती स्नेहलता गुर्जर को दिये गये।

दिव्यांग दंपत्ति के बच्चों को मिलेगा स्पोन्सरशिप योजना का लाभ

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा जनसुनवाई के दौरान वार्ड नंबर 11 श्योपुर निवासी दिव्यांग दंपत्ति श्री छोटेलाल डोम के बच्चों का नाम स्पोन्सरशिप योजना में जोडे जाने के निर्देश महिला बाल विकास अधिकारी श्री रिशु सुमन को दिये। इसके साथ ही दिव्यांग दंपत्ति का नाम बीपीएल सूची में शामिल करने के निर्देश तहसीलदार श्री अर्जुन सिंह भदौरिया को दिये गये। इसके अलावा पात्रता पर्ची बनाने के निर्देश फूड आफिसर श्री सुनील शर्मा को दिये गये। दिव्यांग दंपत्ति ने जनसुनवाई में अवगत कराया कि दोनो को सामाजिक सुरक्षा पेंशन मिलती है, लेकिन दोनो पति-पत्नि दिव्यांग होने से मजदूरी करने में असमर्थ है। इस पर बच्चों के नाम स्पोन्सरशिप योजना में जोडने, बीपीएल में नाम शामिल करने तथा पात्रता पर्ची बनाने के निर्देश दिये गये। स्पोन्सरशिप योजना में नाम जुडने से दोनो बच्चों को 4-4 हजार रूपये की राशि प्रत्येक माह मिलेगी।

कमलेश को मिलेगा संबल योजना का लाभ, उद्यम क्रांति में ऋण देने के भी निर्देश

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा जनसुनवाई के दौरान ग्राम सोई निवासी श्री कमलेश सेन के पत्नि स्व. श्रीमती पप्पी बाई सेन की मृत्यु पर अनुग्रह राशि दिये जाने संबंधी आवेदन पर अवगत कराया गया कि मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना के तहत दो लाख रूपये की राशि स्वीकृत होकर ईपीओ जारी हो चुका है, शीघ्र ही दो लाख रूपये की बैंक खाते में आयेगी। इसके साथ ही आवेदक श्री कमलेश सेन का आवेदन मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति स्वरोजगार योजना में ऑनलाइन कराने के निर्देश सहायक संचालक उद्योग श्री शुभम अग्निहोत्री को दिये। आवेदक द्वारा बताया गया कि वह रोजगार के लिए दोना पत्तल का कारोबार शुरू करना चाहता है।

विकसित कृषि संकल्प अभियान अंतर्गत किसानों को किया प्रोत्साहित

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में श्योपुर जिले में विकसित कृषि संकल्प अभियान अंतर्गत गठित टीमों द्वारा किसानों को गांव-गांव जाकर खेती, किसानी की उन्नत तकनीको एवं नवाचारों के साथ ही जैविक एवं प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। साथ ही नरवाई के उचित प्रबंधन हेतु जागरूक किया जा रहा है। कृषि वैज्ञानिक डॉ कायम सिंह ने बताया कि इसी क्रम में निर्धारित कार्यक्रम अनुसार कृषि विज्ञान केन्द्र बड़ौदा के वैज्ञानिको सहित कृषि, पशुपालन, मत्स्य, उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों तथा प्रगतिशील कृषको, एफपीओ के प्रतिनिधियों की टीम द्वारा विकासखण्ड श्योपुर के ग्राम उतनवाडा, लुहाड एवं गलमान्या में पहुंचकर 590 किसानों के मध्य मध्यप्रदेश शासन के द्वारा चलाई जा रही किसान हितेषी योजनाओं एवं कृषि की उन्नत तकनीकी को विस्तार से समझाया गया। विकासखण्ड कराहल के दल द्वारा ग्राम करियादेह, चकरामपुरा एवं खैरी में पहुंचकर 330 किसानों को जानकारी प्रदान की गई। इसी प्रकार विकासखण्ड विजयपुर के दल द्वारा ग्राम लीलदा, वीरपुर एवं तैलीपुरा ग्रामों के मध्य पहुंचकर 512 किसानों को योजनाओं के संबंध में अवगत कराया गया और खरीफ फसल की विभिन्न किस्मो सहित फसलो के विविधिकरण एवं रासायनिक खाद के संतुलित उपयोग की जानकारी देते हुए प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया गया।

बुधवार को इन ग्रामों में पहुंचेगी टीमें

श्योपुर विकासखण्ड की टीम द्वारा 11 जून को ग्राम रतोदन, हीरापुर एवं बागल्दा में भ्रमण कर जानकारी प्रदान की जायेगी। विकासखण्ड कराहल की टीम 11 जून को लुहारी, कुरकुटा एवं कुण्ड का भ्रमण करेंगी। इसी प्रकार विजयपुर विकासखण्ड की टीम गोहर, नदीगांव एवं घुघस में किसानों को खेती की नवीन तकनीकी तथा उन्नत फसलों के संबंध में अवगत करायेगी।

विद्यालयों में नामांकन बढाने चलाये विशेष अभियान-डीएम

संकुल प्राचार्यो की बैठक में विद्यालयो में आधारभूत सुविधाएं बढाने पर जोर

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने कहा है कि जिले के सभी सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों को नामांकन बढाने के लिए विशेष अभियान चलाया जायें। संकुल प्राचार्य यह सुनिश्चित करें कि उनके अधीन आने वाले विद्यालयों में कक्षा 5, 8, 10 में पासआउट बच्चें अगली कक्षाओं में प्रवेश जरूर लें, इसके लिए अभिभावको की कांउसलिंग की जायें। उन्होने कहा कि किसी भी कक्षा में बच्चें ड्रॉपआउट न रहें, इसकी नियमित रूप से समीक्षा करते हुए ऐसे बच्चों के परिवारों से संपर्क कर उन्हें स्कूल में एडमिशन दिलाया जायें। वे आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित संकुल प्राचार्यो की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में जिला शिक्षा अधिकारी श्री एमएल गर्ग, डीपीसी डॉ पीएस गोयल, सहायक संचालक श्री यश जैन, प्राचार्य आईटीआई श्री आशीष जैन सहित बीईओ, बीआरसी एवं संकुल प्राचार्य उपस्थित थे। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने निर्देश दिये कि विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएं सुनिश्चित की जायें तथा अकादमिक वातावरण का निर्माण करते हुए शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार लाया जायें। उन्होने कहा कि कक्षा 1 में नामांकन में आ रही समस्याओं से जिला लेबिल पर अवगत करायें, जिससे उनका निराकरण किया जा सकें, यदि बच्चों के नवीन आधारकार्ड बनने है तो इस संबंध में सूची प्रदान की जायें तथा पंचायत सचिवों के माध्यम से समग्र आईडी बनाई जायें। उन्होने गिरधरपुर और वीरपुर के स्कूलों में नामांकन का पोर्टल तत्काल अपडेट करने के निर्देश भी दियें। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने बोर्ड परीक्षा परिणामों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि श्यामपुर और मेवाड़ा के स्कूलों में परीक्षा परिणामों में सुधार लाने के लिए विशेष कार्ययोजना बनाई जायें। उन्होंने कहा कि जो स्कूल प्रदर्शन में निचले पायदान पर हैं, उनके स्टॉफ की पृथक से बैठक लेकर आवश्यकताओं और समस्याओं का निराकरण किया जाए। उन्होने विद्यालयों में रंग-रोगन और वॉशरूम की मरम्मत सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने बैठक में एक पेड़ माँ के नाम अभियान को गति देने पर भी चर्चा करते हुए निर्देश दिए कि विद्यालयों में प्रत्येक बच्चे से पौधारोपण कराया जाए ताकि पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनमें जागरूकता की भावना विकसित हों। उन्होने एनीमिया भारत मुक्त अभियान के तहत किशोर वर्ग की छात्रों एवं बच्चों को आयरन की टेबलेट नियमित रूप से खिलाये जाने के निर्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक स्कूल में दो शिक्षको को इसका दायित्व सौपा जायें, जो अपने समक्ष बच्चों को टेबलेट का सेवन करायें। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने संकुल प्राचार्यो को निर्देश दिये कि 10वी पास ऐसे बच्चे जो कौशल विकास के क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते है, उन्हें जिले के शासकीय आईटीआई संस्थानों में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित करे, इसके लिए पंजीयन की अंतिम तिथि 16 जून है।

परियोजना अधिकारी द्वारा ई-केवायसी की समीक्षा

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अ2र्पत वर्मा के निर्देशन में जिले में जनपद पंचायतों एवं नगरीय निकायों द्वारा सभी नागरिकों एवं ग्रामीणों की समग्र ई-केवायसी का कार्य संचालित है। जिसकी प्रगति को लेकर समय-समय पर कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा बैठक एवं वीसी के माध्यम से निर्देश जारी किये गये है। इसी क्रम में परियोजना अधिकारी शहरी विकास अभिकरण श्री मिलन पटेल द्वारा नगरपालिका परिषद श्योपुर में बैठक लेकर नगरीय क्षेत्र श्योपुर में समग्र ई-केवायसी के कार्य की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान जिन कर्मचारियों की प्रगति कम पायी गयी उन्हें 03 दिवस में प्रगति बढ़ाने के निर्देश दिये गये तथा वार्ड प्रभारियों को अपात्र लोगों के नाम काटने के संबंध में निर्देश दिये। उन्होने कहा कि ऐसे परिवार जो कि शहर से पलयान कर चुके है या मृत हो गये है या विवाहित हो चुकी है के नाम सूची से विलोपित करने के निर्देश दिये गये है। वार्ड क्रमांक 14 के वार्ड प्रभारी श्री रवि गुर्जर व वार्ड क्रमांक 09 के वार्ड प्रभारी श्री अशोक नागर को निर्देशित किया कि उक्त कार्य पूर्ण नही होने की स्थिति में 07 दिवस का वेतन काटने की कार्यवाही की जावेगी। बैठक में मुख्य नपरपालिका अधिकारी श्री राधेरमण यादव, नोडल अधिकारी श्री नीरज निगम, प्रभारी एचओ श्री सत्यभानू जाटव आदि उपस्थित रहें।

आबकारी के 3 प्रकरण दर्ज, 1 लाख 29 हजार रूपये की अवैध शराब जब्त

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा मदिरा के अवैध संग्रह, विक्रय, परिवहन पर कड़ा नियंत्रण रखने के लिए दिये गये निर्देशो के क्रम में जिला आबकारी अधिकारी श्री कमल सिंह सिकरवार के नेतृत्व में श्योपुर जिले में अवैध मदिरा पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में जिले में आबकारी पुलिस द्वारा वृत्त श्योपुर के ग्राम रतोधन और हलगावाड़ा में दबिश दी गई। कार्यवाही में मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम की धारा 34(1) के तहत 3 प्रकरण दर्ज किए गए। उक्त कार्रवाई में 45 लीटर हाथ भट्टी मदिरा जप्त की गयी एवं लगभग 1200 किलोग्राम लाहन मौके पर नष्ट किया गया, जप्त शुदा सामग्री की कुल कीमत लगभग 129000 रुपये पाई गई। कार्यवाही के दौरान आबकारी उपनिरीक्षक श्री संजीव कुमार धुर्वे, आबकारी आरक्षक एवं होमगार्ड सैनिक शामिल रहें।

मॉडल स्कूल कराहल में प्रवेश जारी

श्योपुर ब्यूरो। मॉडल स्कूल कराहल में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा 9वीं और 11वीं में प्रवेश हेतु आवेदन प्रक्रिया जारी है। स्कूल प्रबंधन ने बताया कि प्रत्येक कक्षा (9वीं और 11वीं) में 100-100 सीटें उपलब्ध हैं, कुल 200 छात्रों को मॉडल स्कूल कराहल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। स्कूल प्रबंधन द्वारा फिजीकल रुप में आवेदन स्वीकार किए जा रहे हैं। इच्छुक छात्र-छात्राएं विद्यालय पहुंचकर आवेदन फार्म जमा कर सकते है।

कुख्यात डकैत मलखान सिंह के खिलाफ शीघ्र हो मामला दर्ज

भिंड जिले के समाजसेवियों ने पुलिस अधीक्षक को मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

भिंड ब्यूरो। भिंड जिले में कुख्यात डकैत मलखान सिंह के खिलाफ जिले के सभी समाजसेवियों ने एकजुट होकर समाजसेवी मुकेश दीक्षित के नेतृत्व में मुख्यमंत्री के नाम भिंड अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव पाठक को ज्ञापन सौंपा गया, इस अवसर पर मुकेश दीक्षित ने कहा की मलखान सिंह डकैत जो कि बहुत बड़ा अपराधी रहा है जिसके ऊपर मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश,राजस्थान में एक सैकड़ा से अधिक अपराध हत्याओं के मामले भी दर्ज रहे हैं उन्होंने आगे कहा इस डकैत के द्वारा मेरे दादाजी स्वर्गीय कैलाश नारायण दीक्षित सरपंच की हत्या सन 1980 में भिंड गोल मार्केट पर गोली मारकर कर दी गई थी इस डकैत की दहशत गुंडागर्दी के चलते कई वर्षों तक ग्राम बिलाव में मेरी जमीन कृषि भूमि पट्ट डली रही, निरंतर 14 वर्षों तक मलखान सिंह डकैत मेरे दादाजी के ऊपर फरार रहा और धोखे से इस डकैत ने मेरे दादाजी स्वर्गीय कैलाश नारायण दीक्षित सरपंच की छल पूर्वक 1980 में हत्या करवाई गई थी, मुकेश दीक्षित ने आगे का यह डकैत निरंतर मेरे स्वर्गीय दादाजी के खिलाफ अनर्गल मीडिया पर बयान बाजी करता रहता है जिसके कारण मेरे परिवार की मान सम्मान प्रतिष्ठा निरंतर धूमिल हो रही है, उन्होंने आगे कहा कि ऐसे अपराधी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए, उन्होंने आगे कहा कि कुछ वर्ष पूर्व मलखान सिंह डकैत के ऊपर एक फिल्म गलत तथ्यों के आधार पर बनाई जा रही थी, जिसको रोकने का काम भी भिंड जिले के सभी समाजसेवियों ने किया था, मुकेश दीक्षित ने आगे कहा की मलखान सिंह डकैत मेरे परिवार से पिछले कई वर्षों से ईर्ष्या द्वेष भावना रखता चला आ रहा है, और यह डकैत आए दिन निरंतर साजिश करता रहता है।

जिसके चलते आए दिन आज भी मेरा परिवार दहशत में अपना जीवन यापन कर रहा है, उन्होंने आगे कहा कि 2013 में जिला पंचायत चुनाव के दौरान मुझ प्रार्थी को अज्ञात लोगों द्वारा मलखान सिंह का नाम लेकर धमकी भी दिलवाई गई थी, जिसकी शिकायत उसे समय मेरे द्वारा पुलिस प्रशासन की वरिष्ठ अधिकारियों को की गई थी उस समय भिंड प्रशाशन ने मुझे सुरक्षा व्यवस्था भी उपलब्ध कराई गई थी, मुकेश दीक्षित ने आगे कहा कि मेरा परिवार जिले का प्रतिष्ठित जमींदारी परिवार रहा है मेरे दादाजी जो संभ्रांत और सामाजिक व्यक्ति थे, और यह डकैत आए दिन मेरे परिवार के ऊपर अनर्गल टिप्पणी करता रहता है, अभी कुछ दिवस पूर्व ही मीडिया को दिए बयानों में उक्त डकैत ने मेरे दादाजी कैलाश सरपंच, एवं उनके चाचा नरसिंह राव दीक्षित जो कि मध्य प्रदेश के लगातार 15 वर्षों तक होम मिनिस्टर रहे, तथा कैलाश नारायण दीक्षित भी 30 वर्षों तक ग्राम के सरपंच रहे,उनके खिलाफ अनर्गल भाषा और झूठे आरोप प्रत्यारोप लगाने का आए दिन मलखान सिंह डकैत कार्य करता रहता है, जो की बहुत ही निंदनीय तथा अशोभनीय है, उन्होंने आगे कहा कि जिस राम जानकी मंदिर की 100 बीघा जमीन की बात यह डकैत बार-बार करता है, जो की असत्य एवं निराधार है, उन्होंने आगे का मलखान सिंह डकैत हमेशा से अपराधी किस्म का इंसान रहा है, जिससे मुझे मेरे परिवार को जान ओर माल दोनों का खतरा है, तथा मेरे गांव के कुछ असामाजिक आपराधिक किस्म के लोग भी इस डकैत से जुड़े हुए हैं, उन्होंने आगे कहा कि मध्य प्रदेश सरकार मुझे तथा मेरे परिवार को सुरक्षा व्यवस्था शीघ्र उपलब्ध कराए और ऐसे कुख्यात अपराधी डकैत मलखान सिंह के खिलाफ शीघ्र कानूनी कार्रवाई करे, ज्ञापन अवसर पर उपस्थित ब्राह्मण महासभा के संरक्षक बाबा भगवान दास सैंथिया ,क्षत्रिय महासभा के प्रसिद्ध समाजसेवी अरुण सिंह भदोरिया, शंभू सिंह राजावत प्रदेश महासचिव , रॉकी तोमर, विनोद दुबे, दलित एक्शन कमेटी के प्रदेश सचिव प्रेम सिंह शंखवार, अमित सिरोठिया, संजीव सिंहराजावत, यशपाल सिंह भदोरिया, मोती सिंह कुशवाहा,दीपक बरुआ, दिलीप शर्मा, आर्यन शर्मा, अमित जैन, सतीश जैन, राम जी शर्मा, गुड्डू ठेकेदार, सहत कई ग्रामवासी समाजसेवी मौजूद रहे, ज्ञापन में उपस्थित सभी समाजसेवियों ने मलखान सिंह डकैत के इस घृणित बयान बाजी कृत्य की निंदा की।

अपर कलेक्टर ने जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी से अनुबंधित आरएफपी की शर्तों का उल्लंघन करने पर संचालक लोक सेवा केन्द्र गोरमी को दिया नोटिस

भिण्ड ब्यूरो। अपर कलेक्टर भिण्ड श्री एल.के. पाण्डेय ने जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी से अनुबंधित आरएफपी की शर्तों का उल्लंघन एवं जारी आदेश की अवहेलना करने पर अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र गोरमी शिव कंप्यूटर्स को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया है। अपर कलेक्टर श्री पाण्डेय ने नोटिस जारी कर कहा है कि दिनांक 09 जून 2025 को जिला प्रबंधक लोक सेवा द्वारा किये गए औचक निरीक्षण में तथ्यध्कमियाँ परिलक्षित हुई हैं, जिसमें अ श्रेणी के लोक सेवा केंद्र में सिर्फ 2 लोगों का स्टाफ उपस्थित था। जो की नियम अनुसार 5 कर्मचारियों का स्टाफ होना चाहिए। अनुबंध की शर्तो अनुसार आपको कम से कम 2 महिला स्टाफ रखना अनिवार्य है किन्तु निरीक्षण के दौरान कोई भी महिला कर्मचारी उपस्थित नहीं पाई गई। अनुबंध की शर्तो के अनुसार आपको कम से कम 3 काउंटर प्रत्येक समय चालू रखने होते हैं, निरिक्षण के दौरान सिर्फ 2 काउंटर चालू पाए गए। अपर कलेक्टर भिण्ड द्वारा जारी निर्देशों का पालन ना करते हुए पीआरओ डेस्क संचालित नहीं पायी गयी। लोक सेवा केंद्र में स्टाफ की अनुपस्थिति पर जब आपसे स्टाफ की बायोमेट्रिक अटेंडेंस के रिकॉर्ड प्रस्तुत करने हेतु कहा गया तो कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं करवाया गया, आरएफपी अनुबंध की शर्तो के विरुद्ध लोक सेवा केंद्र परिसर में सीसीटीवी कैमरा नहीं पाए गए। समाधान एक दिवस हेतु जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी द्वारा उपलब्ध करवाया गया लैपटॉप लोक सेवा केंद्र पर उपलब्ध नहीं था, जो की सिर्फ प्राधिकृत अधिकारी को एक दिवस के आवेदन के निराकरण हेतु उपलब्ध करवाया गया था। जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी द्वारा प्रदान एलईडी टीवी जो शासन की योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु उपलब्ध करवाई गयी थी, बंद पायी गयी। जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी द्वारा प्रदान उपकरणों का कोई भी रिकॉर्ड संधारित होना नहीं पाया गया। उपरोक्त कृत्य आपके द्वारा जिला ई-गवर्नेंस सोसाइटी से अनुबंधित आरएफपी की शर्तो का उल्लंघन एवं जारी आदेश की अवहेलना है क्यों न आपके विरूद्ध शर्तो के उल्लंघन हेतु नियमानुसार दडांत्मक कार्यवाही की जाऐ आप अपना जवाव नियत समय में प्रस्तुत करें अथवा आपके विरूद्ध एक पक्षीय कार्यवाही की जाएगी जिसके लिए आप स्वयं जिम्मेदार होंगे।

जिला अंतर्गत नशामुक्ति जनजागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन हेतु बैठक हुई आयोजित

भिण्ड ब्यूरो। भारत सरकार सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष 26 जून को अन्तर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस के अवसर पर मद्यपान, मादक पदार्थ एवं उनके द्रव्यों के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों से युवा, छात्र-छात्राओं, आमजन को अवगत कराकर उनमें जागरूकता लाने हेतु राज्यों, जिलों और शैक्षणिक संस्थानों में जनजागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाता है। इसी अनुक्रम में इस वर्ष भी नशामुक्त भारत अभियान अंतर्गत 26 जून अन्तर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस के अवसर पर 1 जून से 26 जून 2025 तक मद्यपान, मादक पदार्थ एवं उनके द्रव्यों के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों से युवा, छात्र-छात्राओं, आमजन को अवगत कराकर उनमें जागरूकता लाने हेतु नशा मुक्त भारत अभियान गतिविधि कैलेण्डर एवं सुझावात्मक गतिविधि की जायेगी। अपर कलेक्टर श्री एल.के. पाण्डेय की अध्यक्षता में जिला भिण्ड में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत जागरूकता गतिविधियों के आयोजन के संबंध में जिला स्तरीय नशा मुक्ति निवारण समिति की बैठक कलेक्टर कार्यालय भिण्ड के सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में नशा मुक्ति कार्यक्रम के आयोजन हेतु 1 जून से 26 जून 2025 तक के लिए विस्तृत कार्य योजना तैयार की गई जिसके अनुसार विभिन्न विभागों को आवश्यक दायित्व सौंपे गए तथा निर्देशित किया गया। कैलेंडर अनुसार विभागों द्वारा नशा मुक्ति जन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये। इस दौरान डिप्टी कलेक्टर श्री विकास कैमोर, जिला आबकारी अधिकारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

नालसा व सालसा की योजनाओं से किया ग्रामीणजन को जागरूक

श्योपुर ब्यूरो। माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री पवन कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में श्री योगेश बंसल जिला विधिक सहायता अधिकारी द्वारा ग्राम आवदा, सारसिल्ली एवं फतेहपुर में नालसा व सालसा की योजनाओं का विस्तृत रूप से प्रचार-प्रसार व ग्रामीणजन को लाभांवित किये जाने हेतु विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। श्री योगेश बंसल विधिक सहायता अधिकारी ने उक्त ग्राम क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों को नालसा द्वारा चलाई जा रही हितकारी योजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। साथ ही नालसा द्वारा जारी योजना नालसा (डॉन- ड्रग जागरूकता और कल्याण नेविगेशन ड्रग मुक्त भारत के लिये योजना, 2025) म.प्र. अपराध पीड़ित प्रतिकर योजना, लोकोपयोगी लोक अदालत, नालसा एप, नालसा हेल्पलाईन नम्बर 15100 के बारे में भी जानकारी दी व साथी अभियान के बारे में भी अवगत कराया कि ये योजना उन बेसहारा बच्चों के लिये चलाई जा रही है, जिनके आधार व अन्य दस्तावेजों से वह वंछित रह जाते है। जिससे उनको शासन द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता है। साथ ही ग्रामीणजन को योजनाओं से सबंधित पेम्पलेट्स वितरित किये गये। उक्त शिविर के ग्राम पंचायत सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक, आगनबाड़ी कार्यकर्ता व ग्रामीणजन उपस्थित रहें।

जिला मुख्यालय पर संयुक्त कलेक्टर ने की जनसुनवाई

जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों पर तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए

भिण्ड ब्यूरो। कलेक्ट्रेट में आयोजित शासन की महत्वाकांक्षी योजना जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर श्रीमती शिवांगी अग्रवाल ने आवेदकों की समस्याओं, शिकायतों को सुना और उनका निराकरण किया। कुछ प्रकरणों में संबंधित जिला अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही एवं शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई के दौरान 91 से अधिक आवेदन आए जिन पर संबंधितों को भेजकर कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में डिप्टी कलेक्टर श्री विकास कैमोर, विभिन्न विभाग अधिकारी सहित शहरी एवं ग्रामीणजन उपस्थित थे। जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान संयुक्त कलेक्टर श्रीमती शिवांगी अग्रवाल ने गंभीर बीमारी से संबंधित इलाज, विद्युत बिलों में सुधार, हैण्डपंपों का संधारण, पेंशन, सड़क दुघर्टना सहायता, हितग्राही मूलक योजनाओं में बैंक ऋण, बीपीएल राशन कार्ड, जमीन पर कब्जा एवं प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत कराने से संबंधित आवेदनों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके संबंध में आवेदक को भी कार्यवाही से अवगत कराने के निर्देश दिए।

गुलाब जामुन, मावा बर्फी के लिया सैम्पल, जांच के लिए भोपाल भेजा

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा दिये गये निर्देशों के क्रम में खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा आमजन को मानक खाद्य सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से जिले में लगातार खाद्य पदार्थो के सैम्पल लिये जा रहे है। इसी क्रम में आज फूड सेफ्टी विभाग द्वारा पाली रोड श्योपुर मारवाडी स्वीट्स से गुलाब जामुन, मावा बर्फी एवं श्रीनाथ स्वीट्स से मिल्क कैक, बेसन के लड्डू के सेम्पल लेने की कार्यवाही की गई। सैम्पलों को जांच के लिए राज्य स्तरीय प्रयोगशाला भोपाल भेजा गया है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री धमेन्द्र जैन ने बताया कि कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में कार्यवाही करते हुए उक्त फर्मो से सैम्पल लिये गये है।

नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने की विभागीय कार्यों की समीक्षा, दिए आवश्यक दिशा निर्देश

ग्वालियर। नगर निगम सीमांतर्गत बरसात से पूर्व सभी नालों की सफाई कराने के साथ ही नालों पर किए गए अतिक्रमण को चिन्हित कर हटाने की कार्यवाही करें। जिससे बरसात में जलभराव की समस्या उत्पन्न न हो। उक्ताशय के निर्देश नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने विभागीय कार्यों की समीक्षा बैठक के दौरान संबंधित अधिकारियों को दिए। बैठक में अपर आयुक्त श्री विजय राज, श्री मुनीष सिंह सिकरवार, श्री अनिल दुबे, अपर आयुक्त वित्त श्रीमती रजनी शुक्ला, उपायुक्त श्री अमर सत्य गुप्ता, डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। निगम मुख्यालय में आयोजित बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने विभागीय कार्यों की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि शहर में नालों पर किए गए अतिक्रमण को अभियान चलाकर 30 जून 2025 तक हटाने की कार्यवाही करें। बैठक में समग्र ई केवायसी की समीक्षा करते हुए नाराजगी व्यक्त की तथा अभियान चलाकर समग्र ई केवाईसी का कार्य करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए तथा संबंधित अधिकारी प्रतिदिन समग्र ई केवायसी की मॉनिटरिंग करें जिससे 30 जून तक 50 प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। बैठक में सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि 15 जून तक मई माह की शिकायतों का संतुष्टि के साथ निराकरण कराएं जिससे इस बार रैंकिंग अच्छी आये। साथ ही निर्देशित किया कि 50 दिवस से अधिक दिन की शिकायतें लंबित न रहे, इन पर विशेष ध्यान दिया जाए। बैठक में निगम के सभी भवनों पर रैन वाटर हार्वेस्टिंग कराने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। साथ ही यह भी निर्देश दिए कि बरसात के दौरान कहीं भी जलभराव न हो इसके लिए अभी से जलभराव वाले स्थानों को चिन्हित कर आवश्यक कार्यवाही करें। बैठक में विभागीय कार्यों की समीक्षा के दौरान निर्देश दिए कि बरसात से पहले सड़कों पर सीवर व पानी की लाइन के जो भी कार्य करना हैं वह कर लें, बरसात के दौरान कहीं भी सडक न खोदी जाए तथा खराब सड़कों के रेस्टोरेशन का कार्य भी 30 जून तक पूर्ण करें। बैठक के दौरान पौधा रोपण की रूपरेखा बनाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। साथ ही जल गंगा संवर्धन अभियान में प्रभावी रूप से कार्य करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।

निगमायुक्त ने सुनी आमजन की समस्याएं, दिए निराकरण के निर्देश

मेट्रो टॉवर रहवासी संघ ने लिफ्ट की जांच के लिए निगमायुक्त को दिया आवेदन

ग्वालियर। मेट्रो टॉवर रहवासी संघ के नागरिकों द्वारा नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय को जनसुनवाई में आवेदन देकर आग्रह किया कि मेट्रो टॉवर में संचालित हो रही जर्जर लिफ्ट की जांच कराकर आवश्यक कार्यवाही की जाए। जिस पर निगमायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में अपर आयुक्त श्री विजय राज, श्री मुनीष सिंह सिकरवार, श्री अनिल दुबे, अपर आयुक्त वित्त श्रीमती रजनी शुक्ला, उपायुक्त श्री अमर सत्य गुप्ता, डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। सिटी सेंटर स्थित निगम मुख्यालय में आयोजित जनसुनवाई के दौरान मेट्रो टॉवर रहवासी संघ की ओर से श्री संजय त्रिपाठी, श्री ऋषि कुमार कटारे सहित अन्य रहवासियों ने निगमायुक्त से आग्रह किया कि मेट्रो टॉवर में पांच लिफ्टों का संचालन नगर निगम के प्रमाण पत्र के बिना किया जा रहा है। जिसकी जांच कराई जाए एवं संबंधित के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही की जाए। इसके साथ ही वार्ड 19 गोले का मंदिर निवासी श्रीमती विश्रुता शर्मा ने आवेदन देते हुए बताया कि अमलताश कॉलोनी के मुख्य मार्ग पर अनाधिकृत लोगों द्वारा अतिक्रमण कर झुग्गी झोंपडी बना ली हैं आवेदिका ने उचित कार्यवाही के संबंध में, वार्ड 64 पुरानी छावनी निवासी श्री अनिल ने शासकीय भूमि पर भू-माफियाओं द्वारा किए गए अवैध अतिक्रमण को हटाने के संबंध में, वार्ड 62 वीरपुर निवासी श्रीमती दुर्गादेवी ने आवेदन देते हुए बताया कि भू-माफियाओं द्वारा वार्ड 62 में अवैध कॉलोनी का निर्माण किया जा रहा है। आवेदिका ने उचित कार्यवाही के संबंध में, वार्ड 54 मिस्त्री खाना चना कोठार निवासी श्री कौशलेन्द्र सिंह भदौरिया ने नामांकन निरस्त होने के बाद शासकीय भूमि से अतिक्रमण हटाने के संबंध सहित अनेक समस्याओं के आवेदन आवेदकों ने निगमायुक्त को दिये। निगमायुक्त ने सुनवाई करते हुए कुछ समस्याओं का निराकरण त्वरित करते हुए बांकी समस्याओं के निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। इसके साथ ही जनसुनवाई में पेयजल, अतिक्रमण, सफाई, विद्युत, आवास, सीवर सफाई, नामांतरण आदि से संबंधित 50 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए, जिनके निराकरण के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही के निर्देश निगमायुक्त ने दिए।

चेतकपुरी पेट्रोल पंप से मांडरे की माता चौराहे से होते हुए हजार बिस्तर हॉस्पिटल तक चलाया स्वच्छता अभियान

ग्वालियर। नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत ग्वालियर में वायु सुधार हेतु जन जागरूकता कार्य के अंतर्गत मेगा ड्राइव फॉर माइक्रो डस्ट क्लीनिंग प्रोग्राम के तहत चेतकपुरी पेट्रोल पंप से मांडरे की माता चौराहे से होते हुए हजार बिस्तर हॉस्पिटल तक अभियान चलाकर सडकों की साफ सफाई कराई गई तथा आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार शहर की वायु सुधार हेतु अनेक कार्य किए जा रहे हैं। इसी के तहत आज मेगा ड्राइव फॉर माइक्रो डस्ट क्लीनिंग प्रोग्राम के तहत आज नगर पालिक निगम ग्वालियर की सहयोगी संस्था म्यूज फाउंडेशन एवं संस्था डिवाईन द्वारा नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत चेतकपुरी पेट्रोल पंप से मांडरे की माता चौराहे से होते हुए हजार बिस्तर हॉस्पिटल तक का कार्य किया गया एवं दुकानों पर जागरूकता के लिए पम्पलेट्स भी लगाए गए और समझाइश दी गई। इसमें डिवाइडर और फुटपाथ के आस पास की मिट्टी और कचरा साफ करवाया गया, रोड पर सभी आमजनों को साफ सफाई रखने, डस्टबिन का उपयोग करने कचरा न जलाने की सलाह दी एवं वायु प्रदूषण के रोकथाम के उपायों के बारे में समझाया गया, कचरा डस्टबिन में ही डालने हेतु जुर्माना सम्बन्धी बोर्ड और स्टीकर लगाए गए। अपना शहर अपनी धरोहर क्षेत्र में कार्य करते जलीय संरचनाओं के आस पास साफ सफाई का अभियान चलाया गया। जिसमे टीम के द्वारा जलीय संरचनाओं के आस पास एवं किनारों पर साफ सफाई एवं जल में तैरते अपशिष्ट को निकाला गया एवं सौंदर्यकरण करवाया गया। टीम द्वारा जनसाधारण को भी जल प्रदूषण के रोकथाम के लिए उपाय बताते हुए स्वच्छता का संकल्प दिलवाया गया।

तानसेन होटल से राजमाता चौराहा तक नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम आज

नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत सुबह 7 बजे से दिनांक 11 जून 2026 को तानसेन होटल से राजमाता चौराहा तक जन भागीदारी द्वारा वायु सुधार कार्यक्रम हेतु साफ सफाई कर नागरिकों को जागरुक किया जाएगा।

गंदगी फैलाने पर भैंस डेयरी संचालक से वसूला जुर्माना

ग्वालियर। शहर स्वच्छ व साफ रहे इसलिए गंदगी फैलाने वालों, अमानक पॉलीथिन, गोबर नालियों में बहाने वालों पर निगम द्वारा निरंतर कार्रवाई की जा रही है। मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी वैभव श्रीवास्तव ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार गंदगी फैलाने वालों पर जुर्माने की कार्रवाई निरंतर की जा रही है, जिसके तहत आज स्वास्थ्य अधिकारी किशोर चौहान के निर्देशन में वार्ड 45 जिंसी नाला नम्बर दो थोराट की गोट में अवैध डेयरी संचालित मिलने एवं सडक पर गोबर फैंकने पर संचालक से 5000 रूपये का जुर्माना वसूला गया एवं सफाई रखने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही क्षेत्र क्रमांक 11 के अंतर्गत भवन निर्माण सामग्री सडक पर डालने पर संबंधित से 5000 रूपये का जुर्माना वसूला गया। कार्यवाही के दौरान क्षेत्रीय अधिकारी क्षेत्र क्रमांक 11 श्री अनिल श्रीवास्तव, जेडएचओ एवं डब्ल्यूएचओ उपस्थित रहे।

शहर में संचालित शासकीय एवं अशासकीय स्विमिंग पूलों को कराना होगा निगम के खेल विभाग में पंजीयन

निरीक्षण में पंजीयन न मिलने पर दिया नोटिस

ग्वालियर। नगर निगम सीमान्तर्गत आने वाले समस्त शासकीय एवं अशासकीय स्थलों जैसे स्कूलों, होटलों, क्लबों, सस्थाओं, एजेंसियों, मैरिज गार्डनों आदि पर संचालित तरण तालों को निर्धारित मापदण्डों की पूर्ति कराये जाने हेतु निगम के जांच दल द्वारा निरीक्षण कर नोटिस जारी किये गए। निरीक्षण के दौरान समिति सचिव डॉ. वैभव श्रीवास्तव उपस्थित रहे। जांच समिति के सदस्य एवं सहायक खेल अधिकारी श्री अयोध्या शरण शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार शहर में शासकीय एवं अशासकीय स्थलों पर संचालित तरण तालों के निर्धारित मापदण्डों की पूर्ति हेतु निरीक्षण किया जा रहा है। जिसके तहत समिति के सदस्यों द्वारा खुरैरी में बंशी वाटर पार्क, भारत वाटर पार्क, ठाकुर बाबा रिसोर्ट, इम्पीरियल रिसोर्ट डबरा रोड, विलायती रेस्टोरेंट, हवेली रेस्टोरेंट, कोकीना रेस्टोरेंट, जीवाजी क्लब, जीवायएमसी क्लब आदि का निरीक्षण कर तरण ताल के लिए दी जानी वाली एनओसी एवं अन्य व्यवस्थाओं को देखा। समिति द्वारा संबंधित तरण तालों को नोटिस जारी कर सात दिवस में निगम के खेल विभाग से एनओसी लेने के लिए नोटिस जारी किया गया। इस अवसर पर श्री आनंद नामदेव सहित जांच समिति के सदस्य एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

थाना ग्वालियर पुलिस ने अलग-अलग कार्यवाही में दो शराब तस्करों को पकड़कर उनसे देषी शराब के कुल 630 क्वाटर किये जप्त

ग्वालियर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री धर्मवीर सिंह(भापुसे) के निर्देश पर ग्वालियर पुलिस द्वारा अवैध मादक पदार्थो, अवैध शराब की खरीद-फरोख्त करने वालों के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। इसी तारतम्य में अति0 पुलिस अधीक्षक शहर(मध्य) श्रीमती सुमन गुर्जर द्वारा अपने अधीनस्थ समस्त थाना प्रभारियों को अवैध शराब तस्करों के विरूद्ध कार्यवाही करने हेतु निर्देषित किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों के परिपालन में सीएसपी ग्वालियर श्री कृष्णपाल सिंह के कुषल मार्गदर्शन में थाना प्रभारी ग्वालियर निरी0 मिर्जा आसिफ बेग के द्वारा थाना बल की टीम को अवैध शराब का व्यापार करने वालों खिलाफकार्यवाही करने हेतु लगाया गया। आज दिनांक 10.06.2025 को पुलिस टीम को जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति सफेद रंग की एक्टिवा स्कूटी क्र0- एमपी-07-जेडजी-3989 से अवैध शराब बैचने के लिये सोना गार्डन के पीछे से ले जा रहा है। उक्त सूचना पर से पुलिस टीम द्वारा सोना गार्डन के पीछे जाकर देखा तो मुखबिर के बताये हुलिया का एक व्यक्ति सफेद रंग की एक्टिवा स्कूटी को लेकर आता दिखाई दिया, जिसे पुलिस टीम द्वारा घेराबंदी कर पकड़ लिया गया। पकड़े गये व्यक्ति की स्कूटी पर रखी दो प्लास्टिक की सफेद रंग बोरियों को खोलकर चेक किया तो दोनों बोरियों में कुल 300 क्वाटर देशी प्लेन शराब कीमती करीबन 21,000/- रुपये की रखी मिली। पकड़े गये व्यक्ति से नाम पता पूछने पर उसने स्वयं को बजरिया गोसपुरा न.01 जिला ग्वालियर का रहने वाला बताया। उक्त व्यक्ति का यह कृत्य धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के तहत दण्डनीय पाये जाने से उसके पास से मिले देशी प्लेन शराब के 300 क्वाटर तथा सफेद रंग की एक्टिवा स्कूटी क्र0-एमपी-07-जेडजी-3989 को विधिवत जप्त किया गया। पकड़े गये शराब तस्कर के खिलाफथाना ग्वालियर में धारा 34 (2) आबकारी एक्ट का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। इसी प्रकार दूसरी कार्यवाही में दिनांक 10.06.2025 को थाना ग्वालियर की पुलिस टीम को थाना क्षेत्र में भ्रमण के दौरान यादव धर्मशाला के पास एक बिना नम्बर की मोटर सायकिल पर दो संदिग्ध व्यक्ति तीन प्लास्टिक की बोरियों में कुछ सामान भरे आते हुये दिखे, जिन्होने पुलिस टीम को देखकर मोटर सायकिल लेकर भागने का प्रयास किया, पुलिस टीम द्वारा भाग रहे मोटर सायकिल सवार व्यक्तियों को भागकर पकड़ने का प्रयास किया तो पीछे बैठा हुआ व्यक्ति मय बोरियों के नीचे जमीन पर गिर गया तथा मोटर सायकिल चालक मय मोटर सायकल के लधेडी तरफभाग गया। पुलिस टीम द्वारा गिरे हुये व्यक्ति को पकड़कर उससे उसका नाम पता पूछा तो उसने स्वयं को गुदडी मौहल्ला थाना ग्वालियर का रहने वाला बताया। ग्वालियर पुलिस उक्त पकड़े गये व्यक्ति के पास से मिली तीनों बोरियों को खोलकर चेक किया तो उनमें 330 क्वाटर सफेद देषी शराब कीमती लगभग 26,400/- रूपये के रखे हुये मिले। पकड़े गये व्यक्ति से उक्त शराब के संबंध में पूछताछ की गई तो उसने बताया कि मौके से भागा उसका साथी शराब बेचने का कार्य करता है, यह शराब वह अपने घर पर ले जा रहा था। वह उसे अपने साथ शराब ले जाने के लिये मोटर सायकिल पर बैठा कर लाया था। पकड़े गये आरोपी का यह कृत्य धारा 34(2) आबकारी एक्ट का पाया जाने से उसके पास से मिले 330 क्वाटर सफेद देषी शराब के विधिवत जप्त कर आरोपी के खिलाफ थाना ग्वालियर में प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पकड़े गये आरोपी की निषादेही पर पुलिस टीम द्वारा उसके अन्य साथी निवासी अक्खड की बगिया की तलाश की जा रही है।

कलेक्ट्रेट की जन-सुनवाई में 159 लोगों की समस्याओं की हुई सुनवाई

ग्वालियर। मंगलवार को कलेक्ट्रेट में हुई जन-सुनवाई में 159 लोगों की समस्यायें सुनी गईं। संयुक्त कलेक्टर श्री विनोद सिंह व श्री सुरेश कुमार बरहादिया एवं एसडीएम मुरार श्री नरेश कुमार गुप्ता सहित जिला प्रशासन के अन्य अधिकारियों ने एक-एक कर सभी की समस्यायें सुनीं। साथ ही लोगों के आवेदनों के निराकरण की रूपरेखा तय की। जन-सुनवाई में प्राप्त हुए 159 आवेदनों में से 75 दर्ज किए गए। शेष 84 आवेदन संबंधित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों को सीधे ही निराकरण के लिये दिए गए। सभी अधिकारियों को समय-सीमा में आवेदनों का निराकरण करने के निर्देश दिए गए हैं। जन-सुनवाई में राजस्व, नगर निगम, बिजली इत्यादि से संबंधित समस्यायें प्राप्त हुईं। जमीन संबंधी समस्याओं के त्वरित निराकरण के निर्देश सभी एसडीएम व तहसीलदारों को दिए गए। जनसुनवाई में मदद की आस में पहुँचे जरूरतमंदों के निःशुल्क इलाज का इंतजाम भी कराया गया।

जिले में विश्व योग दिवस की तैयारियां जोर-शोर से जारी

आईआईटीएम में दिया जा रहा है योग कराने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण, मंगलवार को योग शिक्षक सह पदेन सचिव ग्राम योग समितियों को किया गया प्रशिक्षित

ग्वालियर। जिले में विश्व योग दिवस 21 जून को होने वाले सामूहिक योगाभ्यास की तैयारियाँ जोर-शोर से जारी हैं। तैयारियों के सिलसिले में मंगलवार को भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान (आईआईटीटीएम) योग शिक्षकों सह ग्राम योग समितियों के पदेन सचिवों को कॉमन योगा प्रोटोकॉल का प्रशिक्षण दिया गया। इससे पहले योगाभ्यास कराने वाले मास्टर ट्रेनर्स एवं योग क्लब प्रभारियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। आईआईटीटीएम में ग्राम योग समितियों के सचिवों का प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. कुमार संजीव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उन्होंने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिये योग की महत्ता को विशेष रूप से रेखांकित किया। साथ ही सभी से योग को अपनी दिनचर्या का अंग बनाने के लिये प्रेरित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में संयुक्त संचालक लोक शिक्षण श्री दीपक पाण्डेय सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे। जिला योग प्रभारी श्री दिनेश चाकणकर ने बताया कि विश्व योग दिवस पर जिले में विभिन्न स्थानों पर लगभग पाँच लाख विद्यार्थी व नागरिक सामूहिक योगाभ्यास करेंगे। जिले की प्रत्येक ग्राम में भी 21 जून को सामूहिक योगाभ्यास कराने की तैयारी की जा रही है। जिला प्रशासन के तत्वावधान में जिले के विविध योग संगठन क्रीड़ा भारती, आरोग्य भारती हार्टफुलनेस, पतंजलि योग समिति,आईएनओ सूर्या, ब्रह्मकुमारी,भारतीय योग संघ, आर्ट ऑफ लिविंग, भारतीय योग संस्थान ,जिला, विकासखंड ग्राम एवं वार्ड योग समितियां, मजदूर सेवार्थ पाठशाला आदि संस्थानों के सहयोग से जिले के 3 हजार से अधिक स्थानो पर योगाभ्यास कराने की तैयारी की जा रही है। श्री चाकणकर ने बताया कि विश्व योग दिवस की तैयारी के सिलसिले में प्रथम चरण में 6 व 7 जून को भारतीय यात्रा एवं पर्यटन प्रबंधन संस्थान में जिले के 100 से अधिक हायर सेकेंडरी हाई स्कूल के योग क्लब प्रभारियों को कोमन योगा प्रोटोकॉल का प्रशिक्षण दिया गया। दूसरे चरण में 9 से 11 जून तक जिले के समस्त प्राथमिक विद्यालयों के योग शिक्षकों सह पदेन सचिव ग्राम योग समिति को भी कोमन योगा प्रोटोकॉल का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। तीसरे चरण में 10 से 12 जून तक मुरार शहर क्रमांक एक, मुरार शहर क्रमांक दो मुरार ग्रामीण तथा घाटीगांव के माध्यमिक विद्यालयों के योग शिक्षको तथा शेष योग शिक्षको का प्रशिक्षण भारतीय यात्रा एवं पर्यटन प्रबंधन संस्थान, डबरा विकासखंड का उत्कृष्ट डबरा तथा भितरवार विकासखंड क्षेत्र का प्रशिक्षण उत्कृष्ट भितरवार में दिया जाएगा।

पारा 46 डिग्री के करीब, फिर भी विद्युत विभाग कर रहा अघोषित कटौती, बिल के नाम पर हो रही अवैध वसूली

मुरैना,कांस। जिले में 2 जून के बाद से प्रचंड गर्मी में लोगों को परेशान कर रखा है तो वहीं दूसरी ओर विद्युत की अघोषित कटौती ने आम जनता का जीना दुश्वार कर दिया है द्य दिन भर बिना किसी कारण के कई के घंटे मेंटेनेंस के नाम पर बिना सूचना के विद्युत कटौती की जा रही है द्य ऐसी भीषण गर्मी में लोग बीमार हो रहे हैं और अस्पतालों में मरीजों की लाइन लगी हुई है द्य विद्युत विभाग के अधिकारी कर्मचारी पूरी तरह लापरवाह हो चुके हैं द्य इसके साथ ही विद्युत विभाग के कर्मचारियों द्वारा बाजारों में उपभोक्ताओं से बिल के नाम पर अवैध वसूली की जा रही है द्य तमाम उपभोक्ताओं का कहना है कि जहां दो-दो महीने पहले उनके बिल 1000 ?1500 के आते थे, वह अब ?25000 एवं 3000 रुपए के करीब आ रहे हैं। विद्युत विभाग के अधिकारी कर्मचारी मनमानी पूर्वक विद्युत कटौती कर रहे हैं और जनता का जमकर आर्थिक शोषण करने में लगे हुए हैं द्य तमाम लोगों के द्वारा कनेक्शन कटवा दिए गए और पाबती भी ले ली गई, लेकिन उसके बावजूद उनको बिल दिए जा रहे हैं द्य ऐसे उपभोक्ता मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए विद्युत विभाग के चक्कर लगा रहे हैं और कोई सुनवाई नहीं कर रहा द्य इस समय मुरैना मुख्यालय एवं तहसीलों पर विद्युत कटौती में जनता को परेशान कर रखा है द्य शहरी एवं ग्रामीण जनता में विद्युत विभाग के प्रति भारी आक्रोश व्याप्त है द्य जिला मुख्यालय पर ही दिनभर बिजली की आंख मिचोली होती रहती है द्य लगातार विद्युत कटौती के कारण लोगों के उद्योग व्यापार प्रभावित हो रहे हैं, वहीं सरकारी विभागों के कामकाज भी प्रभावित हो रहे हैं और आम जनता को परेशानियां उठानी पड़ रही है द्य पिछले कुछ महीनो से विद्युत की हालत बद से बदतर हो गई है और बिजली 1 घंटे भी नहीं रुकती है।

विद्युत विभाग द्वारा आउटसोर्स कर्मचारी को बड़ी संख्या में विभिन्न पदों पर रख लिया गया है और तमाम आउटसोर्स कर्मचारी बिल भुगतान के लिए शहरी इलाकों में घूम रहे हैं द्य लोगों का कहना है कि यह कर्मचारी आम जनता के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं और भले लोगों पर प्रेशर बनाते हैं, जबकि जिन लोगों पर बकाया है उनके यहां कभी नहीं जाते द्य विद्युत विभाग में भ्रष्टाचार इस कदर हावी है कि लोग नए कनेक्शन लेने के लिए आवेदन देते हैं, लेकिन कई कई महीने तक उन पर कोई सुनवाई नहीं होती द्य लोग स्वेच्छा से कनेक्शन लेना चाहते हैं, उसके बावजूद विद्युत विभाग मनमानी कर रहा है और लोग भटक रहे हैं। अधिकारी कर्मचारियों के कारण विद्युत विभाग की साख पर बट्टा लग रहा है। गौरतलब बात यह है कि पिछले चार-पांच दिन से दिन और रात का तापमान बढ़ता जा रहा है तथा 40 डिग्री पर दिन का तापमान चल रहा है ऐसे में विद्युत कटौती ने लोगों को पूरी तरह मुसीबत में डाल दिया है घरों में बड़े बुजुर्ग बच्चे महिलाएं विद्युत की कई कई घंटे की कटौती से पसीने से तर्वतार हो रहे हैं और लोग बीमार होकर अस्पताल पहुंच रहे हैं जिससे शहर के जिला अस्पताल सहित प्राइवेट हॉस्पिटल इस समय हाउसफुल नजर आ रहे हैं विद्युत विभाग की मनमानी के कारण एवं जनता में आक्रोश बढ़ रहा है और कभी भी विद्युत मुख्यालय पर लोग हंगामा खड़ा कर सकते हैं।

मंगलवार को सड़कों पर फिर पसरा सन्नाटा

सोमवार की तरह मंगलवार का दिन भी लोगों को परेशान कर गया और पूरे दिन प्रचंड गर्मी से हलकान आम जनता भीषण गर्मी को देखकर सड़क पर निकलने से तौबा करती नजर आई द्य मंगलवार को भी तापमान 46 डिग्री के आसपास रहा, लेकिन लू के थपेड़ों ने लोगों को बुरी तरह परेशान कर दिया, जिस कारण दिनभर सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहा, जरूरी काम वाले लोग ही सड़कों पर नजर आए।

पार्किंग ठेकेदारों द्वारा अवैध वसूली करने पर नोटिस जारी

ग्वालियर। गांधी प्राणी उद्यान एवं किला स्थित पार्किंग ठेकेदार द्वारा सैलानियों से निर्धारित पार्किंग चार्ज से अधिक वसूलने पर नोटिस जारी किया गया है। नोडल अधिकारी राजस्व ने जानकारी देते हुए बताया कि उपायुक्त राजस्व के जारी आदेशानुसार एच.आर. मैन पॉवर सॉल्यूशन श्री ऊदल सिंह बुंदेला निवासी क्यू अमलतास दीनदयाल नगर, ठेका पेड पार्किंग चिड़ियाघर नवीन गेट दो,चार पहिया वाहन आपके नाम से स्वीकृत है। गांधी प्राणी उद्यान पर सैलानियों से 10 की जगह 30 रूपये वसूल रहे वाहन पार्किंग के कर्मचारी पार्किंग स्थल पर निगम द्वारा निर्धारित रसीद कट्टों के स्थान पर नकली रसीद कट्टे की पर्ची सैलानियों को दी जा रही है पार्किंग का चार्ज दो पहिया वाहन के लिए 10 रूपये और चार पहिया वाहन के लिए 30 रूपये निर्धारित है लेकिन वाहन पार्किंग स्टाफ 30 रूपये प्रिंट वाली नकली रसीद थमा कर वसूली कर रहा है। निगम द्वारा निर्धारित राशि की रसीद के स्थान पर अपने द्वारा जारी की जा रही रसीदें दी जा रही है जिस पर पार्किंग शुल्क 4 घंटे तक 30, 4 घंटे से 12 घंटे तक 60 रूपये एवं 12 घंटे से 24 घंटे तक 120 रूपे दरें अंकित हैं। आपका उक्त कृत्य निगम की छवि को धूमिल करने वाला होकर निष्पादित अनुबंध की कंडिका क. 07 का स्पष्ट उल्लंघन है।

उत्तर मध्य रेलवे

No. JHS/C/DO/BWR-TKA Doubling/CRS/4/ Date:- 10.06.2025

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि बरुआसागर से टेहरका नई बड़ी द्वितीय रेल लाईन का तीव्र गति से दिनांक 12.06.2025 और 13.06.2025 को निरीक्षण/स्पीड ट्राइल टेस्ट किया जाना है। अतः उक्त क्षेत्र के आम नागरिकों, वाहन चालकों, किसानों एवं चरवाहों को अवगत कराया जाता है कि उक्त नवनिर्मित बड़ी द्वितीय रेल लाईन के आर पार जानवरों को न आने दे एवं रेल लाईन को पार करते समय उपरगामी/अधोगामी पुल से ही रेल लाईन को पार करें एवं आवश्यक सावधानी बरतें। उक्त स्पीड ट्राइल टेस्ट के दौरान रेल लाईन पर यदि कोई दुर्घटना होती है तो रेल प्रशासन का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

(शोभ नाथ)
उप मुख्य इंजीनियर (निर्माण-II),
उत्तर मध्य रेलवे, झाँसी

1011/25 (A8)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

संपादकीय

पीओके वापस लौटेगा

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के लोगों को भारतीय परिवार का हिस्सा बताते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि दिन दूर नहीं जब वे खुद भारत की मुख्यधारा में लौट आएंगे। भारतीय उद्योग परिसंघ के बिजनेस समिट में अपने संबोधन में सिंह ने कहा कि हमारा मानना है कि हमारा अपना हिस्सा पीओके वापस लौटेगा और कहेगा, मैं भारत हूं, वापस आ गया हूं। सिंह ने कहा कि वहां रहने वाले हमारे इन भाइयों की हालत कुछ ऐसी है, जैसे महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह की थी। जैसा कि महाराणा प्रताप शक्ति के अलग हो जाने पर कहते थे-तब कुपथ को छोड़, सुपथ पर स्वयं चला आएगा, मेरा ही भाई है मुझ से दूर कहां जाएगा। लेकिन महाराणा के भाई की याद करते हुए भूलना नहीं होगा कि रावण का भाई विभीषण ही उसके अंत का कारण बना था। पाकिस्तान पर सैन्य हमले, स्वदेशी रक्षा क्षमताओं के बेहतरीन प्रदर्शन और पहली दफा दुश्मन मुल्क में घुस कर आतंकवादी ठिकानों पर प्रभावी कार्रवाई से तय रूप से भारत के हौंसलों को बल मिला है। पाकिस्तान के आंतरिक हालात, राजनीतिक अस्थिरता, मंहगाई और बेरोजगारी से अवाम त्रस्त है। पीओके के उत्तरी इलाकों गिलगित, बाल्टिस्तान, डायमिर, गीजर और घांचे में तकरीबन पंद्रह लाख आबादी है। भारत विभाजन के बाद ही पाक ने जम्मू-कश्मीर के इस हिस्से पर हमला कर दिया था। तब से यह इलाका विवादों से घिरा है पर कश्मीर के तकरीबन 35त्न हिस्से पर पाक का कब्जा है परंतु भारत इसे अपना अभिन्न हिस्सा मानता है। यहां की आबादी मुख्यतया मुसलमानों की है, चुनिंदा ईसाई रहते हैं। उनके स्वयं भारत आने का इस तरह की काल्पनिक बातें करने से पहले केंद्रीय मंत्री को देश के भीतर रहने वाले मुसलमानों के प्रति सहिष्णुता दिखानी सीखना होगा। भाजपा के कार्यकाल में हो रहे सांप्रदायिक पक्षपात की अनदेखी नहीं की जा सकती। भारत-पाक के बीच संघर्ष व युद्ध विराम को दोनों मुल्कों की सरकारें जुबानी वाद-विवाद तथा आरोप-प्रत्यारोप द्वारा अपने-अपने देशवासियों को प्रभावित करने में भरसक जुटी दिख रही हैं। यह कोई बर्लिन की दीवार नहीं है, जो विभाजन को नेस्तनाबूद करने के लिए झटके से गिरा दी जाए।

छिपकली से भी डरने वाली लड़कियों का दुस्साहस

(डॉ. सुधाकर आशावादी-विनायक फीचर्स)

अपनी नाज़ुक कलाइयों पर खरोंच पड़ने से तिलमिलाती लड़कियाँ , संकोच के कारण अपने मन की बात कहने से डरने वाली लड़कियाँ, कमरे में छिपकली देखकर डरने वाली लड़कियाँ आख़िर इतनी निडर कैसे हो गई, कि अपने जीवन साथी को मौत के घाट उतारने में भी उन्हें संकोच नही होता। कभी भाड़े के हत्यारों को बुलाकर अपने पति की हत्या की साजिश रचती हैं। पति को सुनसान जंगल में ले जाकर मौत के हवाले कर शव को खाई में फेंकती हैं, कभी क़त्ल करके शव को किसी ड्रम में डालकर सीमेंट के घोल से पत्थर बनाने का असफल प्रयास करती हैं। कोई अपने प्रेमी के साथ पति का गला घोंटकर शव के ऊपर साँप को बिठाकर पति की मौत का कारण साँप के द्वारा डँसा जाना बताती हैं।

कोई विवाह के उपरांत से ही पति की कमाई पर कब्ज़ा करके अपने मायके वालों का पोषण करती हैं तथा पति को आतंकित करके मृत्यु का वरण करने हेतु विवश कर देती है। मेघालय में हनीमून ट्रिप पर गई नव विवाहिता सोनम की कहानी भी पुरानी कहानियों से इतर प्रतीत नहीं होती। यह केवल एक युवक राजा रघुवंशी का क़त्ल नही है, बल्कि विवाह जैसी पवित्र संस्था में व्यक्त किए गए विश्वास का क़त्ल है। जिसे समय के साथ नियति मानकर भुला दिया जाएगा। अब विवाह जैसे पवित्र परिणय बंधन के औचित्य पर भी प्रश्न उठने स्वाभाविक हो गए हैं, ख़ासकर उन वैवाहिक रिश्तों पर जिन्हें दो परिवारों की सहमति से पारंपरिक रीति रिवाजों से स्थापित किया गया हो।

यूँ तो प्रेम और आकर्षण मन के विषय हैं। समाज में शारीरिक आकर्षण के चलते कब वासना में अंधे होकर युवक युवती अपनी नैतिक और सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करके अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए अपने परिवार की इज्जत को दाँव पर लगाने से बाज न आएँ, मगर ऐसे कृत्य करने वालों को किसी और के विश्वास को छलने की छूट क्यों मिले ? दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति यह है कि वासना पूर्ति के लिए समाज में इतना खुलापन आ चुका है कि दैहिक संबंधों में न उम्र आड़े आ रही है और न ही आपसी रिश्ते। कहीं

सास अपने दामाद के साथ व्याभिचार में लिप्त है तो कहीं सगे कहे जाने वाले भाई बहन, बुआ भतीजे, ससुर बहु सहित अनेक रिश्ते भी कलंक की कथा लिखने में पीछे नही रह गए हैं। इंदौर के राजा रघुवंशी हों या मेरठ के सौरभ राजपूत, दोनों का क़सूर केवल यही तो था कि एक की सोनम बेवफा हो गई और दूसरे की मुस्कान । समाज में न जाने कितनी ही ऐसी मुस्कान, सोनम और निकिता हैं, जिनकी बेवफ़ाई से अनेक निर्दोष पति अपनी जान गँवाने के लिए विवश हो रहे हैं। मनोविज्ञानियों व समाजशास्त्रियों के लिए यह गंभीर चिंतन का विषय है, कि समाज किस दिशा में अग्रसर हो रहा है ? क्या विवाह जैसी संस्था का अस्तित्व चरमराने लगा है ? क्या नारी के सशक्तिकरण में इस प्रकार के आचरण को स्वीकारा जा सकता है। क्या हत्या, हत्या की साजिश जैसे कृत्यों के चलते अपराधी युवतियाँ किसी प्रकार की दया या संवेदना की पात्र हैं ? नित्य ही ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति प्रकाश में आ रही है। कुछ समय के लिए मीडिया को भी घटना के अनेक पहलुओं पर खोजबीन करके अपने अपने तरीक़े से घटना प्रस्तुत करने का अवसर मिल जाता है। सोशल मीडिया भी पक्ष विपक्ष में अपनी भड़ास निकालने लगता है। विचारणीय बिंदु यह है कि समाज में ऐसी घटनाओं को बेखौफ होकर अंजाम देने का दुस्साहस आख़िर बढ़ कैसे रहा है ?

शब्द सामर्थ्य -075

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. जीत, फतेह 3. राशन सामान बेचने वाली एक जाति, वैश्य 6. मुर्गी की जाति की एक पक्षी, आधा... आधा बटेर 7. कमल, पंकज, भारत के एक दिवंगत प्रधानमंत्री का नाम 8. नहाने का स्थान, स्नानागार 10. ख्वाब, स्वप्न 12. बुलावा, निमंत्रण 14. तबाही, बर्बादी 17. कत्ल, वध 18. क्षतिपूर्ति, मुआवजा 19. करार, चैन, आराम 21. दृष्टि, निगाह 23. नाश करने योग्य 24. लाडला, प्यारा 25. सीताजी, जनकनंदनी।

ऊपर से नीचे

1. शादी, ब्याह 2. अनाथ, निराश्रित 3. साल, वर्ष 4. दोस्ताना, यारी 5. सुर, देव, भगवान 9. मनुष्य, इंसान, आदमी 11. पाटा जाना, चुकता करना, बात तय करना 12. कार्यक्षेत्र, गोल घेरा, वृत्त 13. अधीनता, मातहती, अधिकार 15. नगर 16. गैरजरूरी 20. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 22. धरती, भूतल, धरातल।

1		2	■	3		4	■	5
	■	6			■	7		
8		9	■	10	11		■	
■		■	■	■		■	■	■
12		13	■	14		15	■	16
	■	17		■	■	18		
19	20		■	21	22		■	
■		■	■	■		■	23	
24			■	25			■	

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 074का हल

अं	त	■	म	री	ज	■	■	■
ग	ह	न	ता	■	ब	र	ब	स
■	की	■	धि	क्का	र	■	र	मा
■	का	■	का	■	द	वा	खा	ना
प	त	वा	र	■	स्त	र	■	■
ह	■	■	■	■	■	दा	मि	नी
ना	■	ए	ह	ति	या	त	■	लां
वा	च	क	■	हा	■	■	खू	ब
■	■	ता	ब	ड़	तो	ड़	■	र

कबीरदास जी के साहित्य में व्यंग्य

(विवेक रंजन श्रीवास्तव-विनायक फीचर्स)

कबीरदास जी का साहित्य भारतीय समाज और धर्म की गहन आलोचना प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यंग्य की विशेष भूमिका है। उनकी रचनाओं में व्यंग्य का प्रयोग सामाजिक कुरीतियों, पाखंडों और अंधविश्वासों के खिलाफ तीखा प्रहार करने के लिए किया गया है।

व्यंग्य की परिभाषा और कबीर का दृष्टिकोण

व्यंग्य वह साहित्यिक शैली है, जिसमें कथन के माध्यम से किसी विषय की आलोचना की जाती है, ताकि समाज में सुधार की दिशा में जागरूकता उत्पन्न हो। कबीरदास जी ने इस शैली का उपयोग धर्म और समाज की विकृतियों को उजागर करने के लिए किया।

कबीर के व्यंग्य का स्वरूप

धार्मिक आडंबरों पर प्रहार- कबीर ने मूर्तिपूजा और कर्मकांडों की आलोचना करते हुए कहा- ÷पाथर पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहाड़।÷ इसका अर्थ है कि यदि पत्थर की पूजा से भगवान मिलते हैं, तो मैं पहाड़ की पूजा क्यों न करूँ। मुल्ला-मौलवियों की आलोचना- कबीर ने मुल्ला-मौलवियों की धार्मिकता पर व्यंग्य करते हुए लिखा- मसजिद चढ़ क्यों बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।÷ यहाँ वे यह प्रश्न उठाते हैं कि मस्जिद में चिल्ला कर खुदा को क्यों बुलाना ? सामाजिक भेदभाव पर कटाक्ष-कबीर ने जातिवाद और सामाजिक भेदभाव की आलोचना करते हुए कहा- ÷एक बूँद तै सृष्टि रची है, कौन बभन कौन सूदा।÷ इसका तात्पर्य है कि एक ही ब्रह्म से सृष्टि की रचना हुई है, तो ब्राह्मण और शूद्र में भेद क्यों?

कबीर के व्यंग्य का उद्देश्य

कबीरदास जी का व्यंग्य केवल आलोचना तक सीमित नहीं था, उनका उद्देश्य समाज में सुधार और जागरूकता उत्पन्न करना था। वे चाहते थे कि लोग धर्म और समाज की वास्तविकता को समझें और अंधविश्वासों से मुक्त हों। कबीरदास जी का साहित्य व्यंग्य की शक्ति के सशक्त प्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसमें उन्होंने समाज और धर्म की विकृतियों को उजागर करने के लिए तीखा प्रहार किया। उनका व्यंग्य न केवल आलोचना का माध्यम था, बल्कि समाज सुधार की दिशा में एक प्रेरणा भी था।

प्रेम, अपराध और असंतुलन: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

लेखिका- डा0 निधि श्रीवास्तव

सोनम रघुवंशी कांड ने एक बार फिर यह प्रश्न सामने ला खड़ा किया है – क्या हर प्रेम वास्तव में प्रेम होता है? और जब रिश्तों में ईमानदारी न हो, तो क्या अपराध अपरिहार्य बन जाता है? जब एक नवविवाहिता, अपने पति की हनीमून के दौरान योजनाबद्ध हत्या करती है, तो मामला केवल अपराध का नहीं, मनोवैज्ञानिक असंतुलन का भी बन जाता है।

1. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस अपराध की परतेंः

द्वैत चेतना (Dual Consciousness)- सोनम जैसे अपराधी दो जीवन जीते हैं – एक समाज के सामने 'संस्कारी' जीवन और दूसरा भीतर पलती असंतुष्टि, आकर्षण, और अपराध की भावना से भरा।

संज्ञानात्मक असंगति (Cognitive Dissonance) -जब व्यक्ति अपने मूल्यों और व्यवहार के बीच असहमति अनुभव करता है, तो मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। सोनम की स्थिति में प्रेमी के लिए आकर्षण, पति से दूरी और सामाजिक विवाह – ये विरोध आपस में भिड़े और अंततः विस्फोट हुआ।

Emotionally Immature Personalit4 (भावनात्मक अपरिपक्वता)- ऐसे लोग रिश्तों में ईमानदारी और त्याग नहीं निभा पाते। वे त्वरित सुख, नियंत्रण और "मुझे क्या चाहिए" की भावना से संचालित होते हैं।

2. क्या यह सिर्फ? अपराध है या मनोरोग भी

Antisocial Personality Traits- झूठ बोलना,दूसरों को manipulate करना,पछतावे का अभाव अपराध के बाद सामान्य जीवन जीना।

Narcissistic Traits: आत्म-केंद्रितता- यह मानना कि ÷मुझे जो चाहिए, वो किसी भी कीमत पर मिलना चाहिए÷ यह जरूरी नहीं कि सोनम को कोई मानसिक बीमारी हो, पर उसमें कुछ पैथोलॉजिकल व्यक्तित्व लक्षण ज़रूर दिखाई देते हैं।

3. सोशल मीडिया और रिश्तों का मिथ्या संसारः

Perception vs. रियलिटी सोनम और राजा की शादी की तस्वीरें वायरल थीं – मुस्कुराते चेहरे, सजी हुई मंडप की सजावट... लेकिन उसके पीछे चल रही थी हत्या की योजना। सोशल मीडिया आज रिश्तों को %ब्रांड% की तरह दिखाने लगा है, जिससे असली भावनाओं को कोई जगह नहीं मिलती।

भावनाओं का प्रदूषणः रोमांस का मतलब 'रील' बनाना,शादी का मतलब 'इंस्टाग्राम स्टोरी', अपराध का मतलब 'ट्रेंड'

4. समाधान और मानसिक स्वास्थ्य की भूमिकाः

* विवाह पूर्व काउंसलिंग अनिवार्य हो

*Compatibility test, communication skills, और emotional readiness पर ध्यान दिया जाए।

स्कूल/कॉलेज में रिश्तों पर मनोचिकित्सकीय शिक्षा

युवा पीढ़ी को बताया जाए कि सच्चा संबंध क्या होता है।

Emotional intelligence को सिलेबस का हिस्सा बनाया जाए।

अपराधियों की मानसिक स्थिति का मूल्यांकन

हर हाई-प्रोफाइल अपराध में मनोवैज्ञानिक परीक्षण अनिवार्य हो। सोनम रघुवंशी की कहानी अपराध से कहीं अधिक एक बीमार मन, टूटे हुए संबंध और सामाजिक दिखावे की त्रासदी है। जब रिश्तों में संवाद नहीं, सिर्फ? साज़िश हो – तब हत्या केवल शरीर की नहीं, विश्वास, प्रेम और नैतिकता की भी होती है। इस घटना को अपराध की दृष्टि से देखने की बजाय पेरेंटिंग का विश्लेषण भी किया जाना चाहिए।

राशिफल

मेष

आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आज व्यावसायिक कार्य योजना में बदलाव करना जरूरी है। अनुभवी लोगों का मार्गदर्शन आपकी ग्रोथ के लिए मददगार रहेगा, फिलहाल आपकी इनकम पहले जैसी ही रहेगी। नौकरी कर रहे लोगों को जल्दी ही स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। आज पारिवारिक सुख-शांति का माहौल रहेगा। लोगों के मन में आपके प्रति सम्मान का भाव रहेगा यह देखकर आपको खुशी होगी। नौकरी में कार्यरत लोगों को कोई बड़ी उपलब्धि मिलने से खुशी होगी।

वृषभ

आज का दिन आपके लिए शानदार रहने वाला है। आज अत्यधिक कार्यभार बना रहेगा, इसलिए आलस और सुस्ती त्याग करना पड़ेगा। आज अपने संपर्क सूत्रों को और अधिक सुदृढ़ करें क्योंकि यह आपके लिए बहुत अधिक लाभदायक साबित होने वाले हैं। कोई नई जानकारी भी हासिल होगी। बच्चे पढ़ाई में फोकस रहेंगे। आप जानते हैं कि आपका काम मुश्किल नहीं है बस आपका हौसला कम हो गया है इसलिए आज किसी की सलाह मिलने से आपका हौसला बढ़ेगा और आप काम को बढ़िया तरीके से करेंगे।

मिथुन

आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। आज परिवार का कोई संपत्ति संबंधित विवाद सुलझ सकता है, जिसमें आपको वरिष्ठ सदस्यों की मदद भी मिलेगी। आज घर के वरिष्ठ सदस्यों के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान रखेंगे। आज खर्चों की अधिकता की वजह से मन कुछ परेशान रहेगा। परंतु जल्दी ही परिस्थितियां आपके अनुकूल हो जाएंगी, इसलिए धैर्य बनाकर रखें। आज दोस्त की किसी समस्या को सुलझाने में आपका सहयोग जरूरी है। भाई व बहनों का सहयोग आपको भरपूर मात्रा में मिलेगा और मां की किसी इच्छा की पूरी होने से आप खुश रहेंगे।

कर्क

आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। आपका जो उद्देश्य है, उससे जुड़े विचारों पर ध्यान देने की कोशिश करें। अगर बिजनेस बढ़ाने के लिए योजनाएं बना रहे हैं तो उन पर काम करने के लिए अनुकूल समय है। किसी प्रभावशाली इंसान की सलाह और मदद से आपको नई उपलब्धि मिल सकती है। आज सरकारी नौकरी कर रहे लोगों पर काम ज्यादा रहेगा। अधिकारियों का दबाव भी रहेगा। मित्रों के साथ बिताए हुए समय की वजह से आनंद मिलेगा। आज आपका किसी नए वाहन खरीदने का सपना पूरा होगा।

सिंह

आज का दिन आपके अनुकूल रहने वाला है। परिवार में अपना उचित समय देना वातावरण को मधुर बनाकर रखेगा। आज दिन भर दौड़-धूप और मेहनत की अधिकता रहेगी, परंतु कार्य की सफलता आपकी थकान को दूर भी कर देगी। किसी जरूरतमंद मित्र की मदद करने से आत्मिक शांति मिलेगी। इस राशि के युवाओं को अपने करियर संबंधी प्रयासों में मन मुताबिक परिणाम मिलेंगे। फैमिली की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए खर्च और खरीदारी करते समय संतुलन बनाकर चलना होगा, बचत की ओर खासतौर पर ध्यान देना होगा। सेहत के मामले में सावधान रहें।

कन्या

आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। आज इस बात का भी ध्यान रखें कि भावनाओं में आकर कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। पेरेंट्स अपने बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार बनाकर रखें, क्योंकि ज्यादा अंकुश लगाना उनके आत्मबल में कमी कर सकता है। आज किसी भी तरह की आवाजाही करने से समय और पैसा खर्च हो सकता है। आज आप अपनी योग्यता व प्रतिभा द्वारा किसी विषम परिस्थिति का सामना करने में सक्षम रहेंगे। स्वयं का विकास करने के लिए समय अनुसार अपने स्वभाव में थोड़ा स्वार्थी होना भी जरूरी है।

तुला

आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आज ऑफिस में वर्कलोड बढ़ सकता है लेकिन आपके द्वारा किया गया काम आपके बॉस को इम्प्रेस करेगा। आज आलस या दूसरों की वजह से अपने महत्वपूर्ण काम को नजरअंदाज न करें। आर्थिक मामलों में बजट आदि का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। आज समझदारी और सावधानी से काम लेने का समय है। आज दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप ना करके अपने कार्यों में ही व्यस्त और मस्त रहेंगे। इस राशि के स्टूडेंट आज अपनी पढ़ाई में विशेष ध्यान देंगे जल्द ही आपकी सफलता के योग बन रहे हैं।

वृश्चिक

आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहने वाला है। आज आपका पूरा ध्यान अपने कार्य में सुधार करने में रहेगा आज बच्चे आपने माता-पिता का ज्यादा ध्यान रखेंगे और बात भी मानेंगे। आज का दिन बहुत ही सुकून भरा रहेगा। परिवार के साथ मनोरंजन ऑनलाइन शॉपिंग जैसी गतिविधियों में सुखद बीतेगा। अपनी व्यवहार कुशलता आपको अपने आर्थिक और व्यावसायिक मामलों में भी सफलता प्रदान करेगी।

धनु

आज का दिन आपके लिए खास होने वाला है। दिन भर भागा- दौड़ी की स्थिति रहेगी। कुछ समय आध्यात्मिक गतिविधियों में भी व्यतीत करने से मानसिक सुकून मिलेगा। अगर प्रॉपर्टी से संबंधित कोई मुद्दा चल रहा है तो आज उसके परिणाम आपके पक्ष में आने की संभावना है। इस राशि के लोग अपने भविष्य को लेकर गंभीर रहेंगे, आपको जल्दी ही कोई शुभ समाचार भी मिलने वाला है। आज का दिन महिलाओं के लिए विशेष तौर पर अनुकूल रहेगा। आज आपकी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात होगी जिससे आपको प्रभावित होंगे।

मकर

आज का दिन आपके लिए सामान्य रहने वाला है। आज आप किसी व्यक्ति विशेष के बारे में सोच कर रोमांचित रहेंगे। आज आपको कुछ नए अनुभव मिल सकते हैं। आज पारिवारिक अथवा व्यक्तिगत कारणों की वजह से व्यवसाय के स्थान पर अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परंतु फिर भी फोन द्वारा अधिकतर काम सुचारू रूप से संपन्न हो जाएंगे। आज वर्कस्पेस पर सीनियर्स और बॉस के द्वारा कुछ बताया जा रहा है तो उसे गंभीरता से लें और अपनी कमियों को जानकर उसे सुधारने का प्रयास करें।

कुंभ

आज का दिन आपके लिए नई उमंग से भरा रहने वाला है। आज आस-पास के लोगों के लिए आपका व्यवहार अच्छा रहेगा, आपके अंदर नई ऊर्जा का संचार होगा। आज रोजमर्रा की दिनचर्या से सुकून पाने के लिए आज किसी धार्मिक स्थल पर जाने का प्रोग्राम बनेगा, जिससे तन और मन दोनों प्रफुल्लित रहेंगे। किसी नए कार्य की शुरुआत करने में प्रभावशाली व्यक्ति का उचित सहयोग मिलेगा। आज आपका कोई सपना भी साकार होगा। माता जी आपसे कुछ फरमाइश कर सकती है, जिसको पूरा करने पर वह खुश होंगी।

मीन

आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा जिससे आपकी सकारात्मकता बढ़ेगी। आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। आज कुछ ना कुछ चुनौतियां भी रह सकती हैं। कोई भी विपरीत परिस्थिति आने पर घबराएं नहीं और समाधान ढूंढने का प्रयास करेंगे तो सब ठीक हो जायेगा। साथ ही वाणी व गुस्से पर भी नियंत्रण रखेंगे। इससे मित्र अथवा पड़ोसी के साथ अच्छा सम्बन्ध रहेगा। करियर का बिजनेस कर रहे कारोबारियों को आज फायदा मिलेगा।

कबीर जयंती (11 जून) विशेष

मानव जीवन को प्रेरणा और दिशा प्रदान करता कबीर का चिंतन

(संदीप सृजन-विभूति फीचर्स)

भारतीय भक्ति आंदोलन के एक महान संत, कवि और समाज सुधारक थे कबीरदास, जिनके विचार और चिंतन आज भी मानव जीवन को प्रेरणा और दिशा प्रदान करते हैं। उनकी रचनाएँ, विशेष रूप से दोहे और साखियाँ, सरल भाषा में गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक संदेशों को समेटे हुए हैं। कबीर का चिंतन न केवल आध्यात्मिकता तक सीमित है, बल्कि यह जीवन के हर पहलू सामाजिक, नैतिक, और व्यक्तिगत को समग्रता प्रदान करता है। उनका चिंतन सत्य, प्रेम, समानता, आत्म-जागरूकता, और निष्काम कर्म जैसे मूल्यों पर आधारित है, जो मानव जीवन को संतुलित और सार्थक बनाते हैं। कबीर का चिंतन मानव जीवन के सभी पहलुओं को एक सूत्र में पिरोता है। वे न तो केवल आध्यात्मिक गुरु थे, न ही केवल समाज सुधारक, बल्कि एक ऐसे दार्शनिक थे, जिन्होंने जीवन को एक समग्र इकाई के रूप में देखा। उनका चिंतन व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को संतुलित करने का मार्ग दिखाता है। कबीर के चिंतन का मूल आधार सत्य की खोज है। वे मानते थे कि सत्य ही जीवन का आधार है, और इसके बिना जीवन अधूरा है। जब कबीर कहते है-

"सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके जी में सांच है, ताके जी में आप।"

इस दोहे में कबीर ने सत्य के समान कोई तपस्या नहीं और झूठ के समान कोई पाप नहीं बताया। सत्य को अपनाने वाला व्यक्ति न केवल अपने जीवन को शुद्ध बनाता है, बल्कि वह परमात्मा के निकट भी पहुँचता है। कबीर का यह चिंतन हमें आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है, क्योंकि सत्य की खोज बाहरी दुनिया से अधिक भीतरी यात्रा है। वे कहते हैं-

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।"

यह दोहा आत्म-निरीक्षण का महत्व दर्शाता है। कबीर का मानना था कि दूसरों में दोष ढूंढने से पहले हमें अपने भीतर झाँकना चाहिए। यह आत्म-जागरूकता जीवन को समग्रता प्रदान करती है, क्योंकि यह हमें अपनी कमियों को सुधारने और बेहतर इंसान बनने का अवसर देती है। कबीर के चिंतन में प्रेम और करुणा का विशेष स्थान है। वे प्रेम को जीवन का सार मानते थे, जो न केवल व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत करता है, बल्कि सामाजिक समरसता को भी बढ़ाता है। उनका एक दोहा हैः

"प्रेम न बारी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
रजा न रंक प्रेम का, सबके हिय समाय।"

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि प्रेम न तो खेत में उगता है, न बाजार में बिकता है। यह सभी के हृदय में समान रूप से बसता है, चाहे वह राजा हो या रंक। यह चिंतन हमें निष्कपट और निस्वार्थ प्रेम की ओर ले जाता है, जो जीवन को समृद्ध और संपूर्ण बनाता है। कबीर का प्रेम केवल मानव तक सीमित नहीं था, बल्कि यह ईश्वर और समस्त सृष्टि के प्रति था। उनकी भक्ति में प्रेम और करुणा का समन्वय जीवन को समग्रता प्रदान करता है। कबीर अपने समय के सामाजिक कुरीतियों, जैसे जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, और असमानता, के कट्टर विरोधी थे। उनका चिंतन सभी मनुष्यों को समान मानता था, और वे बाहरी रूढ़ियों को महत्व देने के बजाय आंतरिक गुणों पर जोर देते थे। जैसे-

"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।"

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि साधु की जाति नहीं, उसके ज्ञान को पूछना चाहिए। व्यक्ति का मूल्य उसकी बाहरी पहचान से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान और गुणों से होता है। यह चिंतन समाज में समानता और एकता को बढ़ावा देता है, जो एक समग्र और संतुलित समाज की नींव रखता है। कबीर का यह दृष्टिकोण आज के समय में भी प्रासंगिक है, जब समाज में भेदभाव और असमानता अभी भी मौजूद हैं। कबीर का चिंतन समय के मूल्य और कर्म के सिद्धांत पर भी बल देता है। वे मानते थे कि समय क्षणभंगुर है, और इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। कबीर कहते है-

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।

यह दोहा हमें वर्तमान में जीने और अपने कार्यों को समय पर पूरा करने की प्रेरणा देता है। साथ ही, कबीर कर्म के सिद्धांत को भी रेखांकित करते हैंः

"करम गति टारे नहिं टरै, जब लगि घट में प्रान।
जैसा बीज बोइए, तैसो ही फल जान।"

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि कर्म का फल अवश्य मिलता है। जैसा बीज बोया जाता है, वैसा ही फल मिलता है। यह चिंतन हमें अपने कर्मों के प्रति सचेत रहने और अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है, जो जीवन को संतुलित और सार्थक बनाता है। कबीर का चिंतन सादगी और संतोष को जीवन का आधार मानता है। वे लालच और माया के भ्रम से बचने की सलाह देते थे। उनका एक प्रसिद्ध दोहा हैः

"साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।"

सादगी और संतोष का यह संदेश जीवन को तनावमुक्त और सुखी बनाता है। कबीर का यह चिंतन हमें यह सिखाता है कि सच्चा सुख भौतिक संपत्ति में नहीं, बल्कि संतुष्टि और दूसरों की मदद में है। कबीर का चिंतन निर्गुण भक्ति पर आधारित था, जिसमें वे ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापी मानते थे। उनका मानना था कि ईश्वर मंदिर-मस्जिद में नहीं, बल्कि हर हृदय में निवास करता है। वे कहते है-

"मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं मंदिर, ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।"

यहाँ कबीर कहते हैं कि ईश्वर को बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं, वह हमारे भीतर ही है। यह चिंतन हमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ आत्मिक शांति की ओर ले जाता है। कबीर की भक्ति बाहरी कर्मकांडों से मुक्त थी और प्रेम, सत्य, और आत्म-जागरूकता पर आधारित थी। यह जीवन को एक आध्यात्मिक समग्रता प्रदान करता है। कबीर ने वाणी के संयम पर विशेष जोर दिया। वे मानते थे कि मधुर और सकारात्मक वाणी जीवन में शांति और सद्भाव लाती है। उनका एक दोहा हैः

"ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।"

इसके साथ ही, कबीर सत्संग के महत्व को भी रेखांकित करते थे। वे मानते थे कि सत्संग मनुष्य को सही मार्ग दिखाता है और उसे भ्रम से मुक्त करता है। उनका यह चिंतन जीवन को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाता है। कबीर का चिंतन आज के आधुनिक युग में भी उतना ही प्रासंगिक है। आज का मानव भौतिक सुखों की दौड़ में अपनी आंतरिक शांति खो रहा है। कबीर का चिंतन हमें सादगी, संतोष, और आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है। उनकी शिक्षाएँ सामाजिक समानता, प्रेम, और सत्य जैसे मूल्यों को बढ़ावा देती हैं, जो एक बेहतर समाज की नींव रखते हैं। कबीर का यह दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि जीवन का सच्चा सुख बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और नैतिकता में है।

कमिश्नर ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से की आपदा प्रबंधन की समीक्षा

आपदा प्रबंधन से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें : कमिश्नर

रीवा,कासं.। कमिश्नर कार्यालय में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने बाणसागर परियोजना से जुड़े जिलों में बाढ़ की स्थिति में राहत एवं बचाव तैयारियों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी जिलों के अधिकारी बाढ़ संभावित क्षेत्रों का दौरा करके 25 जून तक राहत एवं बचाव कार्य से जुड़ी तैयारियां पूरी कर लें। बाढ़ की स्थिति में राहत शिविर लगाने के लिये स्थान के चयन से लेकर बचाव दल, राहत के उपकरण, दवाओं, खाद्य सामग्री की आपूर्ति तथा बिजली एवं पानी की व्यवस्था से जुड़ी कार्यवाहियां सुनिश्चित करें। बाढ़ पर नियंत्रण के लिये समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान आवश्यक है। जिला तथा तहसील स्तर पर बाढ़ नियंत्रण केन्द्र स्थापित करके इनमें प्रशिक्षित कर्मचारी तैनात कर दें। सूचनाओं का एक दूसरे को लगातार आदान-प्रदान करते रहें। बांधों से पानी छोड़े जाने अथवा लगातार वर्षा की स्थिति में सभी जिले सतत संपर्क में रहें। बाढ़ से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें। कमिश्नर ने कहा कि बाणसागर बांध की अप स्ट्रीम तथा डाउन स्ट्रीम में बाढ़ संभावित क्षेत्र चिन्हांकित हैं। सभी एसडीएम अपने क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर लें। बाढ़ से बचाव के लिये व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारियों को जोड़ें। इस ग्रुप में गांव के कुछ व्यक्तियों तथा पटवारी, ग्राम पंचायत सचिव, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जैसे मैदानी कर्मचारियों को भी शामिल करें। समय पर सही सूचना मिलने से राहत और बचाव कार्य में आसानी होगी। बाणसागर बांध की डाउन स्ट्रीम में सीधी तथा सिंगरौली जिले के 129 गांव बाढ़ संभावित हैं। आपदा प्रबंधन के लिये संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश पत्र जारी कर दिये गये हैं। इनके अनुरूप कार्यवाही करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए पर्याप्त दवाएं भण्डारित करा दें। बैठक में आईजी रीवा रेंज गौरव राजपूत ने कहा कि बाढ़ से बचाव के लिए समय रहते तैयारियां कर ली गईं तो कोई परेशानी नहीं होगी। बाणसागर बांध में अधिकत जल स्तर तक पानी आने से पहले ही उसे नियंत्रित रूप से छोड़ना शुरू कर दें। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम के सदस्यों तथा होमगार्ड्स एवं राहत और बचाव से जुड़े अधिकारियों के मोबाइल नम्बर व्हाट्सएप ग्रुप में अपडेट कर लें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नाव के साथ-साथ पर्याप्त संख्या में लाइफ जैकेट भी भण्डारित कराएं। जल संसाधन विभाग, राजस्व विभाग तथा पुलिस विभाग के अधिकारी तत्परता से बाढ़ संबंधी सूचनाओं का आदान-प्रदान करें। सभी कंट्रोल रूम एक दूसरे की सूचनाएं साझा करें।

बैठक में मुख्य अभियंता गंगा कछार अशोक डेहरिया ने बाणसागर बांध के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि बांध के जल भराव क्षेत्र में 79 गांव आंशिक रूप से डूब में आते हैं। इन गांवों में ही बाढ़ की समस्या होती है।

बांध के पूरे क्षेत्र को 6 जोन में बांट कर जोनल अधिकारी तैनात कर दिये गये हैं। कटनी जिले के 27 गांव तथा उमरिया जिले के 18 गांव बांध के बैक वाटर से प्रभावित होते हैं। बैठक में लोक निर्माण विभाग को अति वर्षा की स्थिति में जलमग्न होने वाले पुल-पुलियों में संकेतक तथा बैरियर लगाने के निर्देश दिये गये। बैठक में अपर कमिश्नर नीतू माथुर, चीफ इंजीनियर पीडब्ल्यूडी संजय खाण्डे, कार्यपालन यंत्री मनोज तिवारी, कार्यपालन यंत्री आरपीएस कंवर, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ एमएल गुप्ता, उपायुक्त श्रेयस गोखले, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में वर्चुअल माध्यम से आईजी शहडोल, डीआईजी शहडोल, कलेक्टर शहडोल, कलेक्टर सीधी, कलेक्टर मैहर तथा विभिन्न जिलों के पुलिस, राजस्व एवं जल संसाधन विभाग के अधिकारी शामिल हुए।

कलेक्टर ने 129 आवेदकों की सुनी समस्यायें

दिव्यांग कुंजबिहारी को तत्काल वैशाखी उपलब्ध कराने के कलेक्टर ने दिये निर्देश

रीवा,कासं.। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने 129 आवेदकों की समस्यायें सुनी तथा संबंधित आवेदनों को विभागीय अधिकारियों को प्रेषित कर संतुष्टिपूर्वक कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने जनसुनवाई के दौरान डिहिया निवासी दिव्यांग कुंजबिहारी वर्मा को तत्काल वैशाखी उपलब्ध कराने के निर्देश सामाजिक न्याय विभाग के अधिकारी को दिये। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित जनसुनवाई में घूमन निवासी अवधराज पाण्डेय, चोरगड़ी निवासी रामप्रसाद पटेल, भाटी निवासी गोपालशरण पाण्डेय तथा तिघरा निवासी बालमीक शुक्ला के सीमांकन कराने के आवेदनों को संबंधित तहसीलदार को प्रेषित कर कार्यवाही करने के निर्देश कलेक्टर द्वारा दिये गये।

इसी प्रकार मदरी के संतोष पटेल ने सीमांकन कराकर नक्शा तरमीम किये जाने का आवेदन दिया जिसे तहसीलदार गंगेव को तथा देवगांव निवासी ममता तिवारी के नामांतरण के आवेदन को तहसीलदार मनगवां को कार्यवाही करने हेतु प्रेषित किया गया।

जनसुनवाई में प्रदीप कुमार शाहपुर ने खसरा सुधार का आदेश कम्प्यूटर में फीड कराने का आवेदन दिये जिस पर एसडीएम सिरमौर को कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया। रामलाल श्रीवास्तव मझिगवां ने पुलिस की उपस्थिति में सीमांकन कराने का आवेदन प्रस्तुत किये कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही के निर्देश दिये। इसी प्रकार पिपरी जोकहा के निवासियों के प्रचलित रास्ता से अतिक्रमण हटाकर पुन~ प्रारंभ करने तथा मिट्टीकरण कराने आवेदन को तहसीलदार सिरमौर को, बालेन्द्र शेखर गौतम जुड़वानी निवासी के अतिक्रमण हटाने के आवेदन को तहसीलदार सेमरिया को तथा स्थगन के उपरांत सीमांकन की जांच के संबंध में चुनरी निवासी प्रतिभा सिंह के आवेदन को एसडीएम त्योंथर को कार्यवाही किये जाने हेतु प्रेषित किया गया। अंबिका प्रसाद तिवारी अतरैला ने मुआवजा राशि का बैंक द्वारा प्रेषण न करने का आवेदन दिया। कलेक्टर ने एलडीएम को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में तमरा निवासी अल्कारानी सिंह के लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत प्रमाण पत्र दिलाये जाने के आवेदन पर कलेक्टर ने जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर तथा संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय ने भी लोगों की समस्यायें सुनीं।

किसान फसलों में उर्वरकों का संतुलित उपयोग करें : उप संचालक कृषि

किसानों को डीएपी के स्थान पर एनपीके के उपयोग की सलाह

रीवा,कासं.। जिले के कृषकों को सलाह दी गई है कि वह डीएपी के स्थान पर एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करें। कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी सलाह में कहा है कि डीएपी में केवल दो तत्व नाइट्रोजन व फास्फोरस प्राप्त होते हैं। जबकि एनपीके उर्वरक से फसलों के लिए आवश्यक सभी तीन मुख्य पोषक तत्वों नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की उपलब्धता होती हैं।

इस प्रकार एनपीके उर्वरक से नत्रजन एवं स्फुर के अलावा पौधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व पोटाश की पूर्ति किसान भाई सफलतापूर्वक कर सकते हैं। अत~ एनपीके उर्वरक का प्रयोग करने पर किसान भाईयों को अलग से पोटाश डालने की जरूरत नहीं पड़ती है व लागत में कमी आती है। उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने किसान भाईयों के लिए डीएपी के स्थान पर एनपीके खाद का उपयोग करने की सलाह दी है। उप संचालक ने कहा है कि फसलों में उर्वरकों का संतुलित उपयोग लाभदायक होता है। डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट और एनपीके का उपयोग अधिक लाभदायी है। इससे जमीन को सल्फर की प्राप्ति होती है।

सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग खेत की तैयारी के समय किया जाता है। जिससे यह फसलों में अधिक कारगर रहता है। डीएपी में उपलब्ध 18 प्रतिशत नाइट्रोजन में से केवल 15 प्रतिशत नाइट्रोजन तथा 46 प्रतिशत फास्फोरस में से 39 प्रतिशत फास्फोरस पानी में घुलकर मिट्टी को प्राप्त होता है। शेष फास्फोरस मिट्टी में जमा हो जाता है जिससे मिट्टी कठोर हो जाती है। इसकी जल धारण क्षमता घटती है। उप संचालक ने बताया है कि आगामी फसल में शंकर धान एवं शंकर मक्का के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश एनपीके खाद का उपयोग अधिक लाभकारी होगा। दलहन एवं तिलहन फसलों में 80~40~30 एनपीके तथा सल्फर का उपयोग लाभदायी होगा। उप संचालक ने बताया है कि किसान नैनो तकनीक पर आधारित खाद का भी उपयोग कर सकते हैं। फसलों के लिए 20 प्रतिशत नाइट्रोजन से युक्त नैनो यूरिया तथा 8 प्रतिशत नाइट्रोजन एवं 16 प्रतिशत फास्फोरस से युक्त नैनो डीएपी उपलब्ध है। इनके निर्धारित मात्रा में उपयोग से फसलों को संतुलित मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। सामान्य तौर पर एक स्वस्थ पौधे में नाइट्रोजन की मात्रा 1.5 से 4 प्रतिशत तक होती है।

कृषि वैज्ञानिक विकसित कृषि संकल्प अभियान में दे रहे उन्नत खेती की जानकारी

रीवा,कासं.। जिले के सभी विकासखण्डों में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत लगातार शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में कृषि विभाग के अधिकारी और कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक किसानों को उन्नत खेती का मंत्र दे रहे हैं। शिविरों में किसानों को कृषि, पशुपालन तथा मछली पालन विभाग की योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ जल प्रबंधन और जल संरक्षण के लिए भी जागरूक किया जा रहा है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि 10 जून को रीवा विकासखण्ड के ग्राम सुमेधा और बिहरा में शिविर लगाए गए। इनमें कृषि वैज्ञानिक डॉ चन्द्रजीत सिंह ने किसानों को फसलों की कतार से कतार में बोनी, खरपतवार नियंत्रण तथा फसल में खाद के संतुलित उपयोग की जानकारी दी। किसानों को उनके खेतों की माटी का परीक्षण कराकर मृदा हेल्थ कार्ड बनाने की समझाइश दी गई। शिविर में किसानों को मिल रही उपयोगी जानकारी की प्रशंसा करते हुए सरपंच बिहरा तथा प्रगतिशील किसान अजय सिंह ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की सलाह दी गई। किसानों को कई आधुनिक कृषि उपकरणों के उपयोग की जानकारी दी। कृषि विभाग किसानों के बीच जाकर सदैव मार्गदशन करे।

संक्षिप्त समाचार

शेयर बाजार तेजी के साथ ग्रीन जोन में खुला, सेंसेक्स 132 अंक उछला, निफ्टी 25,196 पर

मुंबई, ए.। कारोबारी सप्ताह के दूसरे दिन शेयर बाजार हरे निशान पर खुला. बीएसई पर सेंसेक्स 132 अंकों की बढ़ोतरी के साथ 82,577.39 पर ओपन हुआ. वहीं, एनएसई पर निफ्टी 0.37 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 25,196.05 पर खुला. सकारात्मक वैश्विक संकेतों के बीच, 10 जून को भारतीय सूचकांक निफ्टी 25150 के आसपास मजबूती के साथ कारोबार कर रहा। आज के कारोबार के दौरान वीडोल कॉर्पोरेशन, एस्ट्राजेनेका फार्मा इंडिया, फोर्स मोटर्स, जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज, टेक महिंद्रा, आईटीडी सीमेंटेशन इंडिया, प्रोटीन ई-गवर्नेंस टेक्नोलॉजीज, निबे, आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपर्स, जन स्मॉल फाइनेंस बैंक, कैप्री ग्लोबल कैपिटल और प्रीमियर एनर्जीज के शेयर फोकस में रहेंगे। कारोबारी सप्ताह के पहले दिन शेयर बाजार तेजी के साथ ग्रीन जोन में बंद हुआ. बीएसई पर सेंसेक्स 256 अंकों की बढ़ोतरी के साथ 82,445.21 पर क्लोज हुआ. वहीं, एनएसई पर निफ्टी 0.40 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 25,103.20 पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी पर बजाज फाइनेंस, कोटक महिंद्रा बैंक, एक्सिस बैंक, जियो फाइनेंशियल, ट्रेंट के शेयर टॉप गेनर के लिस्ट में शामिल रहे. जबकि आईसीआईसीआई बैंक, टाइटन कंपनी, एमएंडएम, भारती एयरटेल, इटरनल के शेयर टॉप लूजर के लिस्ट में शामिल रहे। रियल्टी को छोड़कर बाकी सभी सेक्टोरल इंडेक्स हरे निशान में कारोबार किए. जिनमें आईटी, पीएसयू बैंक 1-1 फीसदी ऊपर रहे. बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स में 1-1 फीसदी की तेजी आई।

बैंक में इस सप्ताह तीन दिन नहीं होगा कामकाज

नई दिल्ली, ए.। जून 2025 का दूसरा सप्ताह शुरू हो चुका है और इस सप्ताह भी भारतीय रिजर्व बैंक के अवकाश कैलेंडर के अनुसार देश के अलग-अलग हिस्सों में 3 दिन बैंकों की छुट्टियां रहेंगी. संत गुरु कबीर जयंती के अवसर पर कई राज्यों में बैंक बंद रहेंगे. अगर आपको भी इस सप्ताह बैंक से जुड़ा कोई काम है तो इन कामों को समय रहते निपटा लें वरना आपको असुविधा का सामना करना पड़ सकता है. 11 जून 2025 (बुधवार)- संत गुरु कबीर जयंती/सागा दावा (इस दिन सिक्किम (गंगटोक) और हिमाचल प्रदेश (शिमला) में बैंक बंद रहेंगे. यह बैंकिंग अवकाश संत गुरु कबीर जयंती और सागा दावा के अवसर पर मनाया जाएगा) 14 जून 2025 (शनिवार), दूसरा शनिवार- आरबीआई के नियमों के अनुसार, देश भर के बैंक हर महीने के दूसरे और चौथे शनिवार को बंद रहते हैं. 15 जून 2025 (रविवार), साप्ताहिक अवकाश- रविवार को सभी बैंकों में नियमित साप्ताहिक अवकाश रहता है। कबीर जयंती, जिसे कबीर प्रकट दिवस के रूप में भी जाना जाता है. भारत में एक प्रसिद्ध कवि और रहस्यवादी संत कबीर के प्रकट होने के उपलक्ष्य में मनाई जाती है. यह हिंदू महीने ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन साल में एक बार मनाया जाता है, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार मई या जून का महीना है. उपासकों का मानना है कि कबीर का जन्म इसी दिन 1398 ई. में हुआ था. कहा जाता है कि कबीर सतलोक से प्रकाश का शरीर धारण करके आए थे और कमल के फूल पर अवतरित हुए थे।

क्रेड ने 620 करोड़ रुपये की फंडिंग जुटाई, वैल्यूएशन 45 प्रतिशत घटा

नईदिल्ली, ए.। फिनटेक कंपनी क्रेड ने 3.5 अरब डॉलर के घटे हुए वैल्यूएशन पर 7.5 करोड़ डॉलर (लगभग 620 करोड़ रुपये) की फंडिंग जुटाई है। कुणाल शाह की कंपनी ने यह निवेश सिंगापुर के वेल्थ फंड जीआईसी की अगुवाई में हासिल की है। पिछली बार 2022 में इसका वैल्यूएशन 6.4 अरब डॉलर था, जो अब 45 प्रतिशत कम हो गया है। सीरीज- जी फंडिंग राउंड में आरटीपी कैपिटल, सोफिना और खुद शाह की कंपनी क्यूईडी इनोवेशन लैब्स ने भी पैसा लगाया है। क्रेड का राजस्व 71 प्रतिशत बढ़कर 2,397 करोड़ रुपये हो गया, लेकिन घाटा भी 22 प्रतिशत बढ़कर 1,644 करोड़ पहुंच गया।

निकोलस पूरन ने अचानक इंटरनेशनल क्रिकेट से लिया संन्यास

नई दिल्ली,ए.। आधुनिक युग के वेस्टइंडीज के विस्फोटक और भरोसेमंद सफेद गेंद वाले क्रिकेटरों में से एक, निकोलस पूरन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की. उन्होंने 29 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया. वेस्टइंडीज के लिए सबसे ज्यादा टी20 रन और मैच खेलने वाले बाएं हाथ के बल्लेबाज ने इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए अपने फैसले का खुलासा किया. उन्होंने पोस्ट में उल्लेख किया कि यह उनके लिए मुश्किल था, लेकिन उन्होंने इस फैसले पर पहुंचने से पहले काफी सोचा था. पूरन ने लिखा, मैरून रंग की शर्ट पहनना, राष्ट्रगान के लिए खड़ा होना और हर बार मैदान पर कदम रखते ही अपना सबकुछ देना... यह शब्दों में बयां करना मुश्किल है कि यह मेरे लिए वास्तव में क्या मायने रखता है. कप्तान के तौर पर टीम का नेतृत्व करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है जिसे मैं हमेशा अपने दिल के करीब रखूंगा. पूरन ने खेल के सबसे छोटे फॉर्मेट में अपनी बल्लेबाजी का हुनर दिखाया और टी20ढ्ढ में राष्ट्रीय टीम के लिए सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी के तौर पर उभरे. हालांकि, उनके करियर में कुछ उतार-चढ़ाव भी आए जैसे 2019 में अफगानिस्तान के खिलाफ बॉल टैंपरिंग के लिए कुछ समय के लिए निलंबन. उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज के दौरान पोलार्ड की अनुपस्थिति में टीम की कप्तानी भी की और टीम को 4-1 से जीत दिलाई. पूरन ने 106 टी20ढ्ढ में 136.39 के स्ट्राइक रेट से 2275 रन बनाए हैं. उन्होंने राष्ट्रीय टीम के लिए 61 वनडे मैच भी खेले हैं जिसमें उन्होंने 3 शतक बनाए हैं और 2019 विश्व कप में भी टीम का हिस्सा थे. उल्लेखनीय है कि पिछले दो महीनों में रिटायरमेंट लेने वाले पूरन 5वें बल्लेबाज हैं।

पूरन ने इंडियन प्रीमियर लीग 2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए अहम भूमिका निभाई और 14 मैचों में 196.25 की शानदार स्ट्राइक रेट से 524 रन बनाए. क्रिकेट वेस्टइंडीज ने उनके योगदान के लिए उनकी तारीफ की और स्टार कैरेबियाई बल्लेबाज को धन्यवाद भी दिया।

लग गई मुहर, विराट कोहली की जगह नंबर 4 पर खेलेगा ये युवा बल्लेबाज

नई दिल्ली,ए. । भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने 12 मई को टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया था. इसके बाद से भारतीय टेस्ट क्रिकेट टीम में नंबर 4 का स्थान खाली हो गया है. अब टीम इंडिया इंग्लैंड के खिलाफ 20 जून से पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने वाली है. ऐसे में विराट कोहली की जगह पर नंबर 4 पर बल्लेबाजी कौन करेगा इसको लेकर सवाल जस का तस बना हुआ है। भारत के लिए इंग्लैंड में नंबर 4 पर खेलने के लिए कई दावेदार मौजूद हैं. इन विकल्पों में खुद कप्तान शुभमन गिल का नाम भी शामिल है. वो इससे पहले भारत के लिए नंबर 4 पर बल्लेबाजी कर चुके हैं. इसके साथ ही करुण नायर का नाम भी नंबर 4 के विकल्प के तौर पर देखा जा रहा है.

अभिमन्यु ईश्वरन और साई सुदर्शन जो भारतीय क्रिकेट टीम में बतौर ओपनर शामिल हुए हैं. उनके नाम पर भी कोहली की जगह नंबर 4 पर खेलने के लिए चर्चाएं हो रही हैं। इस सब के बीच इंग्लैंड के पूर्व स्पिनर मोंटी पनेसर ने कहा है कि विराट कोहली की जगह पर नंबर 4 पर साई सुदर्शन खेल सकते हैं. उन्होंने कहा, भारत की टीम में कुछ अच्छे युवा खिलाड़ी हैं. एक खास बल्लेबाज सरे का खिलाड़ी साई सुदर्शन भी है. वह बहुत आक्रामक और निडर दिखता है. वह ऐसा खिलाड़ी है जिसने इंग्लिश परिस्थितियों में और सरे के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है. मुझे लगता है कि वह भारतीय क्रिकेट का अगला सुपरस्टार हो सकता है और नंबर चार पर विराट कोहली की भूमिका निभा सकता है. मैं विराट की विरासत को आगे बढ़ते देखना चाहता हूं. जिस तरह से उन्होंने टेस्ट क्रिकेट खेला मैं युवा भारतीय टेस्ट खिलाड़ियों को भी वैसा ही खेलते देखना चाहता हूं। आपको बता दें कि साई सुदर्शन ने अभी तक भारत के लिए टेस्ट डेब्यू नहीं किया है. अब उनके पास मौका होगा कि अगर उन्हें नंबर 4 पर खेलने को मिलता है तो वो टीम इंडिया के लिए शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं।

भारतीय टीम से एक और स्टार खिलाड़ी का कटेगा पत्ता? कोच गंभीर के सामने कठिन फैसला

नई दिल्ली,ए.। भारत और इंग्लैंड के बीच 20 जून से पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का आगाज होगा. टीम इंडिया के खिलाड़ी पहले ही इंग्लैंड के लिए रवाना हो चुके हैं और अभ्यास मैच में भाग ले रहे हैं. टीम इंडिया नए कप्तान के साथ टेस्ट सीरीज खेल रही है. युवा खिलाड़ी शुभमन गिल को टीम का कप्तान नियुक्त किया गया है. ऋषभ पंत ने उपकप्तान की जिम्मेदारी संभाली है। इस बार भारत किसी भी कीमत पर इंग्लैंड की धरती पर जीत हासिल करने के लिए तैयार है. इससे पहले उन्होंने 2007-2008 में इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज जीती थी. उसके बाद से भारत पिछले 17 मैचों में कोई सीरीज नहीं जीत सका है. अगर भारत इस बार सीरीज जीतता है तो यह एक रिकॉर्ड होगा. इसके अलावा शुभमन गिल इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज जीतने वाले चौथे कप्तान बन जाएंगे। इस बीच कोच गंभीर अंग्रेजों को हराने के लिए एक मजबूत भारतीय टीम उतारने की तैयारी कर रहे हैं. इस बात पर चर्चा हो रही है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा की जगह कौन लेगा. इस बीच कोच गंभीर एक और वरिष्ठ भारतीय खिलाड़ी को झटका देने की तैयारी में हैं. इस बार कोच गंभीर अंग्रेजों को उनकी ही धरती पर हराने की तैयारी में हैं. वो इसके लिए एक अच्छी और मजबूत टीम तैयार करने की योजना बना रहे हैं. कुछ रिपोर्ट्स की मानें तो इस बात की संभावना है कि सीनियर और अनुभवी ऑलराउंडर को इसके लिए अंतिम टीम से बाहर कर दिया जाएगा. ऐसा कहा जा रहा है कि ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा को इस सीरीज से बाहर रखा जा सकता है। रवींद्र जडेजा कई वर्षों से भारतीय टीम के प्रमुख खिलाड़ी रहे हैं. विशेषकर भारतीय उपमहाद्वीप में वह अपनी स्पिन गेंदबाजी, बल्लेबाजी और फील्डिंग से अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं. हालांकि इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका जैसी विदेशी धरती पर गेंदबाज के तौर पर जडेजा का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। जडेजा ने पिछले पांच वर्षों में विदेश में खेले गए 13 टेस्ट मैचों में उन्होंने 37.22 की औसत से गेंदबाजी की है. यह उनके पूरी गेंदबाजी औसत (24.14) से अधिक है. उनकी बल्लेबाजी में सुधार हुआ है लेकिन स्पिनर के रूप में वह टीम को आवश्यक विकेट दिलाने में संघर्ष कर रहे हैं. इस पृष्ठभूमि में उनकी जगह वाशिंगटन सुंदर को चुने जाने की संभावना है. वाशिंगटन सुंदर का विदेश में अच्छा रिकॉर्ड है. बॉर्डर गावस्कर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ श्रृंखला में बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों से चमक बिखेरी. वो अच्छे फॉर्म में हैं और उनसे इंग्लैंड में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी।

खनिज विभाग की टीम को धमकाकर वाहन छुड़ाने वाले 6 आरोपी गिरफ्तार

कलेक्टर एवं एसपी के हस्तक्षेप के बाद हुई कार्रवाई

शिवपुरी ब्यूरो। कोलारस विधानसभा क्षेत्र में अवैध रेत खनन के खिलाफ माइनिंग विभाग की कार्रवाई में बाधा डालने वाले माफियाओं पर अब पुलिस ने शिकंजा कस दिया है। रविवार को सिंध नदी के रिताई घाट से जब्त किए गए वाहनों को छुड़ाने की घटना में अब तक कुल 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। वहीं, एक अन्य फरार आरोपी की तलाश जारी है। घटना के बाद पुलिस ने वीडियो फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर सात आरोपियों की पहचान कर ली थी। इनमें से छह को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने सोमवार को राजकुमार उर्फ बडारी रघुवंशी निवासी अनंतपुर, जितेन्द्र लोधी निवासी ग्राम भाटी, विनय उर्फ कल्लाम रघुवंशी निवासी जूर, मनीष सेन निवासी अनंतपुर को गिरफ्तार कर लिया था और आज दो अन्य आरोपी धर्मेन्द्र यादव पुत्र गजराज यादव उम्र 27 वर्ष निवासी ग्राम हिनोतिया, कान्हा सेन पुत्र जगदीश सेन उम्र 22 वर्ष निवासी ग्राम अनंतपुर को गिरफ्तार किया गया है। वहीं फरार चल रहे गोलू जाटव की तलाश में पुलिस लगातार संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है। गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने राजकुमार रघुवंशी से सोलिस कंपनी का ट्रैक्टर और मनीष सेन से जॉन डियर कंपनी का हाइड्रा वाहन बरामद किया है, जो माफियाओं द्वारा माइनिंग टीम से छुड़ाए गए थे। विदित हो कि रविवार को माइनिंग विभाग की टीम ने रिताई घाट से अवैध रेत से लदे ट्रैक्टर-ट्रॉली और हाइड्रा को जब्त किया था। जब टीम इन वाहनों को लेकर लुकवासा चौकी की ओर जा रही थी, तब रास्ते में रेत माफियाओं ने उन्हें घेर लिया, धमकाया और जब्त वाहन छुड़ा ले गए। शिकायत दर्ज कराने पहुंचे माइनिंग इंस्पेक्टर सोनू श्रीवास को कथित राजनीतिक दबाव के चलते चौकी से लौटा दिया गया था। इसके बाद कलेक्टर रविन्द्र कुमार चौधरी और एसपी अमन सिंह राठौड़ के हस्तक्षेप पर एफआईआर दर्ज की गई थी।

मेडिकल कॉलेज में एंकिलोग्लोसिया से पीड़ित 4 वर्षीय की मासूम की हुई जीभ-टाई सर्जरी

शिवपुरी ब्यूरो। श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिंधिया चिकित्सा महाविद्यालय और चिकित्सालय शिवपुरी के दंत रोग विभाग में मंगलवार को (एंकिलोग्लोसिया) से ग्रस्त 4 वर्षीय मासूम नैन्सी के परिजन उक्त समस्या लेकर आए थे। सर्वप्रथम जांचो के पश्चात उन्हे सर्जरी के बारे में पूरी प्रक्रिया समझाई गयी। जिसे ऑपरेशन कर डेंटल के डॉ शिरस सिंह धीर सहित डॉ. प्रियंका डेबडिया सहित स्टाफ के साथ मिलकर यह जटिल सर्जरी की गई। डॉक्टर शिरस ने बताया कि अधिष्ठाता डॉक्टर डी परमहंस, अधीक्षक आशुतोष चौऋषि के कुशल मार्गदर्शन में सभी प्रारंभिक जांच के बाद मरीज़ का जीभ की गांठ, जिसे चिकित्सकीय भाषा में एंकिलोग्लोसिया के नाम से जाना जाता है, यह जीभ की हरकत को सीमित कर देती है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब ऊतक का एक बैंड, लिंगुअल फ्रेनुलम, बहुत छोटा या तंग होता है, जो अक्सर जीभ के नीचे बहुत आगे तक जुड़ा होता है। फ्रेनुलम की जकड़न जीभ की सीमा को सीमित करती है, जो खाने, बोलने और निगलने के लिए आवश्यक है। जिसे ऑपरेशन कर हमने ठीक किया है फिलहाल मरीज स्वस्थ्य है। इसी के साथ प्रियंका डेबडिया, सीनियर रेजिडेंट का कहना था कि जब बच्चा बोलने, निगलने या स्तनपान करने में कठिनाई महसूस करता है, तो जीभ-टाई सर्जरी की आवश्यकता होती है। यह आम जन्म स्थिति, एंकिलोग्लोसिया, ऊतक के एक प्रतिबंधात्मक बैंड द्वारा चिह्नित होती है जो जीभ को मुंह के तल से बांधती है, जिससे रोजमर्रा के कार्य प्रभावित होते हैं। इस दौरान सहा. पीआरओ राहुल अष्ठाना सहित एवं अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

सिंधिया के प्रयासों से शिवपुरी जिले को मिली डीएपी खाद की तीसरी बड़ी खेप, किसानों ने जताया आभार

पारदर्शिता और प्राथमिकता के साथ खाद वितरण

शिवपुरी ब्यूरो। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के सतत प्रयासों के फलस्वरूप शिवपुरी जिले को डीएपी खाद की तीसरी बड़ी खेप प्राप्त हुई है। कुल 2758 मीट्रिक टन की यह खेप इंडियन पोटाश लिमिटेड (आईपीएल) के माध्यम से प्राप्त हुई है, जिसमें से लगभग 75 प्रतिशत यानी 2068 मीट्रिक टन खाद का वितरण आईपीएल द्वारा किया जाएगा। वितरण व्यवस्था के तहत शिवपुरी को 45 प्रतिशत (लगभग 948 मीट्रिक टन), श्योपुर को 40 प्रतिशत (लगभग 830 मीट्रिक टन), दतिया को 10 प्रतिशत (लगभग 200 मीट्रिक टन) और एग्रो व अन्य सहकारी समितियों को 5 प्रतिशत (लगभग 90 मीट्रिक टन) खाद आवंटित की गई है। यह उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी केंद्रीय मंत्री सिंधिया के प्रयासों से शिवपुरी को दो बड़ी खेपें लगभग 3200 मीट्रिक टन और 2700 मीट्रिक टन डीएपी प्राप्त हो चुकी हैं। प्राप्त खाद का वितरण पंजीकृत सहकारी समितियों और अधिकृत विक्रेताओं के माध्यम से किया जा रहा है। जिला प्रशासन और कृषि विभाग की निगरानी में यह कार्य पूर्ण पारदर्शिता और प्राथमिकता के साथ सुनिश्चित किया जा रहा है, ताकि किसी भी किसान को खाद के लिए कठिनाई न उठानी पड़े। समय पर खाद की आपूर्ति से उत्साहित किसानों ने केंद्रीय मंत्री सिंधिया के प्रति आभार जताया। किसानों ने कहा, सिंधिया जी हमेशा हमारे हितों की चिंता करते हैं, हमारी समस्याओं को सुनते हैं और समाधान भी सुनिश्चित करते हैं।

यात्रियों से भरी टेंपो ट्रैक्स खड़े कंटेनर से टकराई, 2 की मौत, 15 लोग घायल

शिवपुरी ब्यूरो। कोलारस थाना क्षेत्र में मंगलवार को दोपहर एनएच-46 पर सेसई सड़क गांव के पास श्रद्धालुओं से भरी एक टेंपो ट्रैक्स खड़े कंटेनर में पीछे से जा घुसी। हादसे में दो श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि 15 लोग घायल हो गए। पटेल एण्ड संस के संचालक भूपेन्द्र रावत ने घायलों को अपनी गाड़ी से जिला अस्पताल पहुंचाया। वहीं गंभीर रूप से घायलों को अस्पताल से मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। हादसा मंगलवार दोपहर करीब 4 बजे हुआ। राजस्थान के बारां जिले के छबड़ा तहसील के तड़िया हाट गांव निवासी मोहन लाल सेन अपने परिवार सहित हरिद्वार देव दर्शन के लिए गए थे। उनके साथ बेटों कमल सेन और दिनेश सेन के परिवार, पत्नी मुल्लो बाई समेत कुल 17 लोग यात्रा में थे। वापसी में जब वाहन कोलारस थाना क्षेत्र में सेसई सड़क के पास पहुंचा, तभी वह सामने खड़े कंटेनर में जा घुसा। टक्कर इतनी तेज थी कि एक व्यक्ति की मौके पर मौत हो गई, जबकि कमल सेन की इलाज के दौरान जिला अस्पताल में मौत हो गई। घायलों में दिनेश सेन, कमल सेन, भूरी सेन, रचना सेन, ममता सेन, दीपक सेन, सोनम सेन, काहना सेन, बिनीत सेन, हिमांशी सेन, मुल्लो बाई, मोहन लाल सेन, रूबी सेन, खुशी सेन, माखन सोनी और दिनेश सोनी शामिल हैं। हादसे की जानकारी मिलते ही कोलारस पुलिस मौके पर पहुंची। सभी घायलों को एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और मृतकों की पहचान की जा रही है।

ग्राम धौरिया में किराड़ क्षत्रिय समाज की महापंचायत, कुरीतियों को दूर करने का लिया संकल्प

सामूहिक विवाह सम्मेलन पर ज़ोर, डीजे, शराबबंदी जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर हुई चर्चा, पूर्व मंत्री सुरेश धाकड़ सहित समाज के वरिष्ठजन हुए सम्मिलित

शिवपुरी ब्यूरो। मंगलवार को पोहरी विधानसभा के ग्राम धौरिया में अखिल भारतीय किराड़ क्षत्रिय समाज जिला शिवपुरी की महापंचायत का आयोजन किया जिसमें समाज के कई प्रवध्जन उपस्थित हुए और अपने-अपने विचार स्वजातीय बंधुओं से साझा किये। सभी ने एक स्वर में समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रण लिया, इस महापंचायत मैं निम्न कुरीतियों को दूर करने का संकल्प सर्वसहमति से लिया गया जिसमें प्रमुख रूप से तीजे(उठावनी)के दिन भोजन एवम महिलाओं के फ़िरउआ पर रोक, त्रियोदशी (खर्च)के दिन पगड़ी रश्म के दिन मृतक के उत्तराधिकारी को ही पगडी पहनाई जाएगी(केवल एक व्यक्ति को नुक्ता किया जाएगा, मृत्यु भोज को सीमित करने की दिशा मैं चिट्ठी नहीं छापवाने का लिया निर्णय, वैवाहिक एवम अन्य मांगलिक कार्यक्रमों में डी.जे. एवम शराब पर प्रतिबंध गोदी (सगाई) समारोह में लोगों की संख्या सीमित की जाएगी, समाज के वैवाहिक सम्मेलन अधिक से अधिक आयोजित करने पर जोर, अनराये पर पानी डालने की प्रथा को बंद किया जाएगा। इसके अलावा सभी समाज बंधुओं ने अपने बच्चों को संस्कारित करने पर बल दिया।

अतवेई पंचायत के सरपंच और सचिव पर घटिया सड़क-नाली का निर्माण कराने का आरोप, ग्रामीणों ने की कलेक्टर से शिकायत

सरपंच ने करीब 10 बीघा शासकीय कृषि भूमि पर अवैध कब्जा कर खेती करना शुरू कर दिया

शिवपुरी ब्यूरो। जनपद पंचायत पोहरी की ग्राम पंचायत अतवेई में सरपंच, सचिव और सरपंच प्रतिनिधि पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। ग्रामीणों ने मंगलवार को कलेक्टर रविन्द्र कुमार चौधरी को शिकायत सौंपकर जांच और कार्रवाई की मांग की है। शिकायतकर्ता रघुराज यादव ने बताया कि पंचायत में जिस तरह से घटिया स्तर की सीसी रोड डाली जा रही है, वह एक बारिश में ही बह जाएगी। ग्रामीणों ने बताया कि सड़क बिना जरूरी अर्थवर्क के बनाई गई है, जो पहले ही उखडने लगी है। इसी तरह नालियों का निर्माण भी बिना मानक सामग्री के किया गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि मनरेगा योजना के तहत बिना काम कराए ही मजदूरी का भुगतान कर दिया गया है। कई अधूरे और घटिया कार्यों को पूरा दिखाकर भुगतान उठाया गया है। यहां तक कि पहले से बने कार्यों को नया दिखाकर दोबारा बजट निकाल लिया गया। गांव में स्वच्छता और पेयजल की स्थिति बेहद खराब है। ग्रामीणों ने बताया कि इन मदों में लाखों का बजट निकाला गया है, लेकिन ज़मीनी हालात इसके विपरीत हैं। सफाई नहीं होती और पेयजल की भी समस्या बनी हुई है। जब ग्रामीणों ने सरपंच और सचिव से सवाल किए, तो उन्हें धमकाया गया। ग्रामीणों ने बताया कि सरपंच के पति ने उन्हें जवाब दिया कि हम तो ऐसे ही काम करेंगे, जो करना है कर लो, हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ग्रामीणों का आरोप है कि सरपंच ने करीब 10 बीघा शासकीय कृषि भूमि पर अवैध कब्जा कर खेती करना शुरू कर दिया है। इससे गांव के मवेशियों के लिए चरने की जमीन नहीं बची। रघुराज यादव, राघव, मस्तराम, माखन यादव, सुरेश, मुलायम, बिहारी सहित दर्जनों ग्रामीणों ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

आईटीआई में अव्यवस्थाओं को लेकर एबीवीपी ने किया विरोध, निराकरण न होने पर आंदोलन की चेतावनी

शिवपुरी ब्यूरो। शासकीय आईटीआई कॉलेज में लगातार बढ़ रही अव्यवस्थाओं को लेकर मंगलवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने कॉलेज परिसर में जमकर प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने प्राचार्य कक्ष में धरना देते हुए संस्थान की अव्यवस्था को लेकर नाराजगी जताई। नगर मंत्री विक्रम गुर्जर ने जानकारी देते हुए बताया कि जब कार्यकर्ता कॉलेज पहुंचे तो न तो प्राचार्य अपने कक्ष में मौजूद थे और न ही कक्षाएं चल रहीं थी। कई ट्रेड रूम पर ताले लगे हुए थे। इसी को लेकर एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने विरोध जताया और प्राचार्य कक्ष में बैठकर धरना दिया। धरने के दौरान प्राचार्य व स्टाफ से बहस भी हुई, लेकिन बाद में प्राचार्य ने व्यवस्था सुधारने का आश्वासन दिया, जिसके बाद कार्यकर्ता शांत हुए। हालांकि, कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द ही छात्रों की समस्याओं का निराकरण नहीं किया गया तो एबीवीपी चरणबद्ध आंदोलन करेगी। इस मौके पर एबीवीपी के प्रांत कार्यकारिणी सदस्य ऋषभ रघुवंशी, मयंक रजक, देव शर्मा, प्रिंस यादव, अनिरुद्ध चौहान, मयंक कलावत, मोहित रजक, प्रवेंद्र यादव, कार्तिक शर्मा, आरिश कर्मावत, देव रघुवंशी, कृष्णा योगी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जल संसाधन मंत्री 11 जून को दौसा, करौली और धौलपुर की जल संरचनाओं का करेंगे लोकार्पण, शिलान्यास और भूमि पूजन

- वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान में तीनों जिलों को मिलेगी सौगातें

- धौलपुर में 7 जल संरचनाओं का निर्माण पूरा, लोकार्पित करेंगे जल संसाधन मंत्री

धौलपुर ब्यूरो। जल संसाधन मंत्री श्री सुरेश सिंह रावत 11 जून, 2025 को दौसा, करौली और धौलपुर की विभिन्न जल परियोजनाओं का लोकार्पण, शिलान्यास और भूमि पूजन करेंगे। %वंदे गंगा% जल संरक्षण-जन अभियान में तीनों जिलों के किसानों और आमजन को पर्याप्त जल उपब्लधता की सौगातें मिलेंगी। श्री रावत बुधवार सुबह 10 बजे मोरेल नदी पर ग्राम समेल लालसोट में निर्मित समेल एनिकट को लोकार्पित करेंगे। इसके बाद शाम 4 बजे पांचना बांध का पुर्नवास एवं सुधार कार्य सहित अन्य एनिकट निर्माण कार्यों का भूमि पूजन और शिलान्यास करेंगे। यहीं से धौलपुर की 61 करोड़ रूपए लागत से तैयार 07 एनिकट/सिंचाई परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया जाएगा। यह परियोजनाएं जल संरक्षण की दिशा में स्थायी समाधान और स्थानीय पर्यावरण सुधार में महत्वपूर्ण साबित होंगी।

धौलपुर में 61 करोड़ रूपए की 7 परियोजनाओं का होगा लोकार्पण-

रिहैबिलिटेशन ऑफ उर्मिला सागर मीडियम इरीगेशन प्रोजेक्ट% में 8.89 करोड़ रूपए लागत आई है। इससे धौलपुर विधानसभा क्षेत्र के 25 गांवों की 2900 हैक्टेयर भूमि को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध होगा। उर्मिलासागर बांध की शेष बची 21.87 कि.मी लम्बाई की नहरी तंत्र को पक्का करने, बांध सुदृढ़कीरण, फिल्टर टो एवं केच ड्रेन का कार्य, 3 डब्ल्यू.यू.ए भवन निर्माण और महिलाओं के लिए स्नानघाट और पशुओं के लिए कैटल रैम्प के कार्य कराए गए हैं। इनसे सीपेज की समस्या के समाधान से जल व्यर्थ नहीं बहेगा।

- 'पार्वती बांध की सैंपऊ ब्रांच का आर.डी 2100 मीटर से 4300 मीटर तक जीर्णोद्धार कार्य' 5.62 करोड़ रूपए से किया गया है। इससे 35 गांवों की 3400 हैक्टेयर भूमि को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो सकेगा।

- पार्वती नदी पर संजापुरी आश्रम के पास 220 मीटर लम्बाई, 2 मीटर ऊंचाई एवं 27.85 एमसीएफटी जलभराव वाले नवीन एनिकट निर्माण कार्य हुआ है, जिसमें 21.25 करोड़ रूपए व्यय हुए हैं। बसेड़ी तहसील क्षेत्र में कार्य से 12 गांवों (बरई, भगरीपुरा, बनौरा, अर्जुन का पुरा, कांकोर, पूंठ, कच्छपुरा, इब्राहिमपुर, धीमरी, गोटे का पुरा, खरगपुरा, खरगपुर कॉलोनी इत्यादि) के जलस्तर में वृद्धि होगी।

- रिपेयर, रिनोवेशन एंड रेस्टोरेशन ऑफ उमरेह बांध एंड कैनाल कार्य। इसमें 1.37 करोड़ रूपए से उमरेह बांध की नहरी तंत्र की लाईनिंग और बांध सुदृढ़ीकरण के कार्य हुए हैं। लागत 1.37 करोड़ रूपए। इससे बाड़ी विधानसभा क्षेत्र के 3 गांवों की 323.88 हैक्टेयर भूमि को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध होगा।

- पार्वती मुख्य नहर एवं माकरा ब्रान्च का 6.5 कि.मी लम्बाई में जीर्णोद्धार कार्य, जिसमें 9.95 करोड़ रूपए व्यय किए गए हैं। इससे सैंपऊ तहसील क्षेत्र के 42 गांवों की 5500 हैक्टेयर भूमि को सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। यहां नहर को पक्का करने से नहर में हो रहे सीपेज की समस्या का समाधान होगा। जल को व्यर्थ बहने से रोका जाएगा। क्षेत्र में कृषि उत्पादकता में अभिवृद्धि होगी, जिससे किसानों के सामाजिक और आर्थिक स्तर में सुधार आएगा।

- बामनी नदी पर आश्रम के पास, सरमथुरा-बाड़ी रोड पर 70 मीटर लम्बाई, 2 मीटर ऊंचाई एवं 3.177 एमसीएफटी जलभराव वाले नवीन एनिकट निर्माण कार्य 4.70 करोड़ रूपए लागत कराया गया है। एनिकट में पानी का भराव से 5 गांवों (चौखापुर, आदमपुर, सागौर, सलेमाबाद इत्यादि) के जलस्तर में वृद्धि होगी।

- पार्वती नदी पर बैनपुरा के पास 150 मीटर लम्बाई, 2 मीटर ऊंचाई और 40.31 एमसीएफटी जल भराव वाले नवीन एनिकट का निर्माण कार्य कराया गया है। इस पर 9.68 करोड़ रूपए व्यय हुए हैं। इस एनिकट से 7 गांवों (बैनपुरा, मदारीपुरा, भीमगढ़, टोंटरी, सन्डे का पुरा, अंगद का पुरा, जटपुरा आदि) में जलस्तर बढ़ने से किसान लाभान्वित होंगे।

जल संसाधन संरचना से स्थायी जल समाधान-

जल संसाधन मंत्री श्री रावत के नेतृत्व में विभाग ने राज्य में जल संरक्षण की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। विभाग द्वारा बनाई गई और निर्माणधीन संरचनाओं से भविष्य के लिए एक स्थायी जल उपलब्धता संभव हो सकेगी। जल संरचनाओं से पर्याप्त पेयजल और सिंचाई के लिए जल उपलब्ध हो सकेगा। मानसून के बाद भी खेती में निरंतरता बनी रहेगी।

'मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के मार्गदर्शन में प्रदेश में जल संरचनाओं के विकास को प्राथमिकता से गति दी जा रही है। तीनों जिलों के कार्यों से पेयजल और सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो सकेगा। यह संरचनाएं मील का पत्थर साबित होंगी। '- श्री सुरेश सिंह रावत, जल संसाधन मंत्री।

प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए सजग रहकर कार्य करें- जिला कलक्टर

धौलपुर ब्यूरो। आपदा प्रबंधन समिति की बैठक जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित की गई। उन्होंने कहा कि वर्षा ऋतु के दौरान अतिवृष्टि एवं संभावित बाढ़ की रोकथाम के लिए पूर्व से ही समस्त व्यवस्थाएं पूर्ण कर लें। जिला कलक्टर ने आपदा प्रबन्धन एवं वर्षा ऋतु के दौरान अतिवृष्टि एवं संभावित बाढ़ के दौरान बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों से आपदा आने पर रोकथाम व बचाव के बारे में विभागवार जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे व्यक्तिगत रुचि लेते हुए आपदा से सम्बन्धित की गई तैयारियों का जायजा लेकर कार्य करें। आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आपदा प्रबंधन से सम्बन्धित विभाग नियंत्रण कक्ष स्थापित करें। आगामी मानसून के मध्यनजर अतिवृष्टि/बाढ से बचाव की आवश्यक तैयारियों के संबंध में निर्देश दिये कि जिला जिला स्तरीय अधिकारी अनुमति लेकर ही मुख्यालय छोडें। स्टाफ को भी अनावश्यक छुट्टियां न दें। आपसी समन्वय रखकर कार्य करें। बाढ़ से प्रभावित होने वाले सम्भावित गांव ढांणियों की सूचना एकत्रित कर जिला मुख्यालय को भिजवायें। तहसीलदार, उपखण्ड अधिकारी सम्भावित क्षेत्रा का दौरा करलें जिससे राहत कार्यों में आसानी रहे। आवश्यक दूरभाष नम्बर तथा राहत कार्यों से संबंधित कार्मिकों के नाम पते उपलब्ध रहे। जिले में वर्षा नहीं होने के बावजूद भी चम्बल नदी के ऊपरी क्षेत्रों में अधिक वर्षा के फलस्वरूप बाढ़ के हालात बन जाते हैं जिससे निपटने के लिए आवश्यक तैयारियां रखें। प्रभावित लोगों को ठहरने, भोजन, दवाईयां, उपचार आदि का प्रबन्ध रखें। गोताखोर, टॉर्च, रस्सी, पानी निकालने के लिए पम्पसैट, डीजल, पैट्रोल, रसोईगैस, कैरोसीन आदि का पर्याप्त रिर्जव स्टॉक रखवाने की व्यवस्था के निर्देश दिये। इस दौरान लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए व्यवस्था करने, जल स्त्रोतो की सारसभाल एवं सुरक्षा के इन्तजाम करने तथा विद्युत की लाईनों की मरम्मत आदि की पुख्ता व्यवस्था के साथ ही समय पर विद्युत की आपूर्ति व आवश्यकता पड़ने पर विद्युत आपूर्ति रोकने के निर्देश दिये। नगर परिषद एवं नगर पालिकाओं में नालों की साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। पशुओं के उपचार, चारे की व्यवस्था एवं मृत पशुओं के शवों का निस्तारण करने के सम्बन्ध में भी निर्देश दिये। सार्वजनिक निर्माण विभाग अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश देते हुए जिले के सम्भावित बाढ़ प्रभावित नदी एवं नालों एवं सड़कों के दोनो ओंर लोहे के पिलर लगाकर चैन लगाने की व्यवस्था की जाये ताकि आपदा के समय यातायात रोका जा सके। इसके अतिरिक्त रपट वाले स्थानों पर नदी एवं नालों के दोनो ओंर भी चेतावनी बोर्ड लगाये जाना सुनिश्चित करें तथा सड़क मार्ग से गुजरने वाले नदी नाले रपट आदि पर होकर वर्षा का पानी बह रहा हो तो चिन्हित कर दोनों और साइन बोर्ड लगाकर यातायात प्रतिबंधित किया जावे। सभी उपखण्ड अधिकारी बाढ़ एवं अतिवृष्टि से निपटने के लिए पूर्व तैयारी के सम्बंध में अपने स्तर पर बैठक आयोजित करें एवं पंचायतों में सिंचाई विभाग से प्राप्त खाली कट्टो में मिट्टी भरकर ऐसे स्थानों पर रखवायें जहॉ बाढ़ का पानी भरने की सम्भावना हो। उन्होने कहा कि सभी सम्बंधित विभाग अपने-अपने विभाग का बाढ़ नियन्त्रण कक्ष स्थापित कर नोडल अधिकारी की नियुक्ति के साथ उनके नाम, पदनाम, दूरभाष नम्बर भिजवाना सुनिश्चित करेंगे। बैठक में सम्बंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

एक मुश्त योजना, 30 सितम्बर तक बकाया ऋण जमा कराने पर ब्याज एवं पेनल्टी छूट

धौलपुर ब्यूरो। राज्य सरकार के बजट घोषणा 2025-26 के तहत राज्य में पहली बार राजस्थान अनुसूचित जाति जनजाति वित्त एवं विकास सहकारी नि.लि. से अनुसूचित जाति, अनुसचिति जनजाति, सफाई कर्मचारी वर्ग, दिव्यांगजन एवं अन्य पिछडा वर्ग में विगत 31 मार्च 2025 तक वितरित किए गए ऋणों पर राहत प्रदान करते हुए अतिदेय मूलधन देय राशि 30 सितम्बर 2025 तक जमा कराये जाने पर अतिदेय ब्याज एवं शास्ति की राशि की शत प्रतिशत छूट दी जायेगी। परियोजना प्रबंधक मनीराम शर्मा ने बताया कि जिले के ऐसे ऋणी जिन्होंने कार्यालय अनुसचित जाति जनजाति वित्त एवं विकास निगम धौलपुर से स्वरोजगार हेतु ऋण लिया है ऐस समस्त बकायादार ऋणी इए एकमुश्त समाधान योजना का लाभ उठाए। उन्होंने बताया कि इस योजना का प्रथम चरण 30 सितम्बर 2025 तक लागू रहेगा जिसमें एक मुश्त भुगतान करने पर साधारण ब्याज एवं दण्डनीय ब्याज माफ किया जाएगा। इसके द्वितीय चरण के तहत 1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर 2025 तक केवल दण्डनीय ब्याज माफ किया जाएगा। योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए लाभार्थी कार्यालय परियोजना प्रबन्धक अनुजा निगम कलेक्ट्रेट परिसर धौलपुर के कमरा नंबर 17 एवं 18 में सम्पर्क कर सकते हैं।

वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान

जल संरक्षण की दिशा में होगा जन आंदोलन

धौलपुर ब्यूरो। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत जिला कलक्टर श्रीनिधि बीटी के निर्देशन में मंगलवार को जल ग्रहण विभाग द्वारा मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान-2.0 के प्रथम चरण के अंतर्गत विभिन्न ग्राम पंचायतों में आमजन के सहयोग से जल संग्रहण संरचनाओं पर श्रमदान व साफ-सफाई कार्य किया गया। अभियान के तहत आमजन एवं जनप्रतिधियों को एमजेएसए योजना के अंतर्गत जिलेभर में जल संरक्षण के कार्यों का अवलोकन करवाया गया। इस दौरान धौलपुर ब्लॉक की भैसेना ग्राम पंचायत में भैसेना का तालाब, सैपऊ ब्लॉक के नगला खरगपुर ग्राम पंचायत में तालाब निर्माण कार्य, बाडी ब्लॉक की बरपुरा ग्राम पंचायत में पी.टी. नियर निसार बोरवेल कार्य, बसेड़ी ब्लॉक की ताजपुर ग्राम पंचायत में पी.टी. नियर रास्ता कार्य, सरमथुरा ब्लॉक की आंगई ग्राम पंचायत में एम.पी.टी. नियर रोड-1 कार्य एवं राजाखेडा ब्लॉक की सिंघावली कलां ग्राम पंचायत में एम.पी.टी. निर्माण कार्य का आमजन व स्थानीय जनप्रतिनिधियों को अवलोकन कराया गया साथ ही उपस्थित जनसमूह को जल संकल्प की शपथ दिलाई गई और जल संरक्षण की शपथ लेकर जल संसाधनों के सतत उपयोग के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों द्वारा जल संरक्षण एवं वृक्षारोपण को लेकर आमजन को जागरूक किया । अभियान में बडी संख्या में आमजन में सहभागिता की।

गेहूं की समर्थन मूल्य पर खरीद 30 जून तक रहेगी जारी, एमएसपी 2425 रूपए पर राज्य सरकार ने घोषित किया 150 रुपए प्रति क्विंटल बोनस

धौलपुर ब्यूरो। गेहूं की समर्थन मूल्य पर खरीद 30 जून 2025 तक जारी रहेगी। राज्य सरकार द्वारा गेहूं के समर्थन मूल्य 2425 रूपए पर 150 रुपए प्रति क्विंटल बोनस की घोषणा की गई है। भारतीय खाद्य निगम मण्डल कार्यालय अलवर के मण्डल प्रबन्धक रामस्वरूप मीना ने बताया कि गेहूं बेचान के लिए किसानों को अपना पंजीकरण खाद्य विभाग राजस्थान सरकार की बेवसाइट https://food.rajasthan.gov.in पर दिए 'गेहूं खरीद हेतु किसान रजिस्ट्रेशन' के लिंक से स्वयं अथवा ई-मित्र या अटल सेवा केन्द्र के माध्यम से करवाना होगा। पंजीकरण के लिए जन आधार कार्ड आवश्यक है। किसान पंजीकरण की प्रक्रिया 25 जून 2025 सांय 7 बजे तक रहेगी। किसानों को उनकी उपज का भुगतान सीधे बैंक खाते में गेहूं बेचान के 48 घंटों में नियमानुसार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मण्डल कार्यालय अलवर के अधीनस्थ राजस्व जिलों अलवर, खैरथल-तिजारा, भरतपुर, डीग, धौलपुर एवं करौली में रबी विपणन वर्ष 2025-26 में खोले गए 33 खरीद केन्द्रों के तहत समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीद का लक्ष्य 67000 मैट्रिक टन निर्धारित किया गया था, जिसके विरुद्ध अब तक 95085 मैट्रिक टन की खरीद की जा चुकी है। इसी क्रम में 8980 किसानों का रजिस्ट्रेशन टारगेट निर्धारित किया गया था, जिसके विरुद्ध अब तक 18821 किसानों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है एवं 14007 किसान लाभान्वित हो चुके है।

कलेक्टर की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की समीक्षा बैठक संपन्न

स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं का लाभ सभी पात्र व्यक्तियों तक समयसीमा में पहुंचे

मुरैना,कांस। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत मैदानी क्षेत्र में चलने वाली योजनाओं का लाभ जो व्यक्ति पात्र है उनको मिले, इसके लिये स्वास्थ्य विभाग के मैदानी अधिकारी, कर्मचारी पूरे प्रयास करें। योजना में प्रगति कम पाये जाने पर संबंधित के खिलाफ सख्त कार्यवाही होगी। ये निर्देश कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना ने गत दिवस कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की समीक्षा बैठक के दौरान अधिकारियों को दिये। बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पदमेश उपाध्याय, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्री ओपी पाण्डे, सिविल सर्जन, संभागीय समन्वयक श्री रजनीश सक्सेना, बीएमओ सहित समस्त स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग के मैदानी कर्मचारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना ने मातृ स्वास्थ्य, नियमित टीकाकरण, नवजात शिशु सुरक्षा इकाई, एनीमिया मुक्त भारत अभियान आदि विभागीय योजनाओं पर समीक्षा की। इस दौरान कलेक्टर ने कहा कि मातृ स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत अनमोल एएनसी रजिस्ट्रेशन विकासखण्ड अम्बाह और पहाडगढ़ में कम किए गये है और अनमोल पोर्टल पर बिना समग्र आईडी के रजिस्ट्रेशन न होने पर नाराजगी व्यक्त की। कलेक्टर ने समस्त बीएमओ एवं सीडीपीओ को निर्देशित किया कि वर्ष 2024-25 में गर्वभति महिलायों एवं डिलीवरी का डेटा एकसाथ उपलब्ध हो एवं एएनसी से बाहर की गई महिलायों की जानकारी भी इसी में सम्मिलित हो।यह निर्देश उन्होंने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को दिये। कलेक्टर ने टीकाकरण अभियान की समीक्षा की। जिसमें कई स्थानों पर टीकाकरण का आंकड़ा बहुत कम पाया गया, उन्होंने समस्त बीएमओ को निर्देश दिये कि एएनएम के माध्यम से अभियान चलाकर उन स्थानों पर भी टीकाकरण कराया जाये, जहां लक्ष्य कम पाया गया है। कलेक्टर ने स्वास्थ्य अधिकारियों को निर्देश दिये कि रामपुरकलां और पहाडगढ़ क्षेत्र के ग्रामों में विगत 05 वर्षो में चिकनगुनिया, मलेरिया फैला हुआ था, उन गांवो की सूची के अनुसार वहां स्वच्छता का प्रयास करें। जिसमें कीटनाशक दवा का छिड़काव, अवेयरनेस और स्वच्छता अभियान चलावें। कलेक्टर ने कहा कि नगरीय निकायों के सीएमओ अपने-अपने क्षेत्र में 70 प्लस के आयुष्मान कार्ड बना रहे है, इसके लिये उन्हें टीएल बैठक में निर्देश दिये जा चुके है। समस्तम बीएमओ इस कार्य को प्राथमिकता के साथ करायें। कलेक्टर ने एनीमिया मुक्त भारत अभियान के तहत विस्तार से समीक्षा की। बैठक में संभागीय समन्वयक श्री रजनीश सक्सेना ने जिले की कवरेज रिपोर्ट की जानकारी दी तथा बताया कि प्रदेश द्वारा जारी एएमबी प्रोग्राम की नई गाइडलाइन के अनुसार 6 माह से 3 साल के सभी बच्चों को घर-घर जाकर एक-एक आयरन सिरप की बोतल आशा और आंगनवाड़ी वर्कर द्वारा देना है। 3 साल से 5 साल के सभी बच्चों को आंगनवाड़ी केंद्र में प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा पिलाई जाना है। सभी शासकीय स्कूल खुलने पर आयरन की गुलाबी और नीली गोली आशा के द्वारा पहुंचानी है, जिसकी मॉनीटरिंग सीएचओ, एएनएम द्वारा की जाएगी।

सभी ब्लॉकों में एसडीएम की अध्यक्षता में कोऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक करने के निर्देश कलेक्टर ने दिये।

पहाड़ गढ़ के घाड़ौर गांव में लगाया गया इंटीग्रेटेड हेल्थ कैंप

एच आई वी की जानकारी ही है, इस का बचाव- संदीप सेंगर

मुरैना,कांस। पहाड़ गढ़ ब्लॉक के ग्राम घाड़ौर में आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर मंगलवार को इंटीग्रेटेड हेल्थ का आयोजन किया गया जिसमें मेडिकल ऑफिसर डॉ अजय डंडोतिया द्वारा ग्राम वासियों को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करते हुए स्वास्थ्य परीक्षण किया गया वहीं आईसीटीसी के परामर्शदाता संदीप सेंगर द्वारा कैंप में आए हुए लोगों को एचआईवी एड्स के बारे में जागरुक करते हुए एचआईवी संक्रमण होने के चार कारणों को विस्तार से समझाया तथा एच आई वी संक्रमण के बचाव हेतु सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि एचआईवी की जानकारी ही इसका बचाव है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन साथी के प्रति वफादार रहना चाहिए एवं बीमारी के समय आवश्यकता पड़ने पर लाइसेंस प्राप्त ब्लड बैंक से जांच किए हुए रक्त का ही इस्तेमाल करना चाहिए एवं हर बार नई डिस्पोजेबल सुई व सिरिंज का ही इस्तेमाल हमारे साथ किया जाए इस हेतु हमें जागरूक रहना चाहिए तथा गर्भावस्था के दौरान एचआईवी की तीन माह के अंतराल पर जांचें कराते रहना चाहिए। शिविर में उपस्थित लैब टेक्नीशियन वीरेंद्र सिंह बंसल द्वारा लगभग 50 लोगों की एचआईवी,सिफलिश, हेपेटाइटिस बी-सी की जांचे की गई तथा एस टी एस दिनेश तिवारी एवं एस टी एल एस रणवीर गोयल द्वारा लोगों को टी वी रोग के प्रति जागरुक करते हुए टीवी मुक्त भारत हेतु शपथ दिलाई गई एवं टीवी लक्षण वाले व्यक्तियों की स्क्रीनिंग कर उन के स्पूटम कलेक्शन हेतु कंटेनर प्रदान किए गए इस अवसर पर सी एच ओ श्रीमती अंजू कुशवाहा द्वारा बी पी,सुगर आदि की जांचें करते हुए डॉ अजय डंडोतिया द्वारा मरीजों को लिखी गई दवाईयों का वितरण किया गया शिविर में आई सी टी सी सिविल हॉस्पिटल जोरा के परामर्शदाता संदीप सेंगर सहित वन स्टॉप सेंटर संस्था के सेंटर मैनेजर गंगाराम बंजारा, काउंसलर श्रीमती प्रीति बघेल,टी आई परियोजना के ओ आर डब्लू शिवम् चौहान एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती राजकुमारी यादव, श्रीमती गीता यादव,आशा कार्यकर्ता श्रीमती जानकी जाटव, विमला जाटव अनिला कुशवाहा आदि मौजूद थी ।

श्रद्धाभाव से आज मनाई जाएगी अमर शहीद बिस्मिल की 128वीं जयंती

डाइट में हवन पूजन के साथ बिस्मिल के अभिषेक से शुरू होगा कार्यक्रम

मुरैना,कांस। काकोरी कांड के अमर नायक, चंबल माटी के गौरव पं. रामप्रसाद बिस्मिल की आज 128वीं जयंती श्रद्धा, राष्ट्रप्रेम और संस्कृति के संगम के रूप में मनाई जाएगी। इस ऐतिहासिक अवसर को लेकर तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। बिस्मिल शिक्षा एवं जनकल्याण सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉ नरेश सिंह सिकरवार जानकारी देते हुए बताया कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की आज 128वीं जयंती पर मुख्य कार्यक्रम डाइट परिसर स्थित शहीद मंदिर पर आठ बजे से प्रारंभ होगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मुरैना श्योपुर सांसद शिवमंगल सिंह तोमर, विशिष्ट अतिथि महापौर शारदा सोलंकी, भाजपा जिलाध्यक्ष कमलेश कुशवाह, पूर्व विधायक रघुराज कंसाना, महामंत्री अरविंद सिंह सिकरवार गुड्डुआ विशेष तौर पर शामिल रहेंगे। जहां सभी उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर नमन करेंगे। सबसे पहले बिस्मिल के अनुयायियों द्वारा सुबह मंदिर परिसर की साफ सफाई की जाएगी और साज सज्जा कर प्रतिमा का चंबल क्षेत्र की सभी नदियों के पवित्र जल से अभिषेक किया जाएगा। इनके बाद माल्यार्पण कर आरती की जाएगी। अतिथियों द्वारा इस मौके पर ध्वजारोहण भी किया जाएगा। साथ ही शहीद बिस्मिल संग्रहालय पर प्रतिमा पर माल्यार्पण किया जाएगा।

युवा पीढ़ी को प्रेरित करने होंगे कई कार्यक्रम

युवा पीढ़ी को बिस्मिल जी के कृतत्व व जीवन आदर्श और महान क्रांतिकारी की विरासत से परिचित कराने यह आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर भूतपूर्व सैनिकों एवं समाजसेवियों और प्रतिभाशाली छात्रों को सम्मानित किया जाएगा। साथ ही पौधारोपण व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। शहर के प्रबुद्ध वर्ग, शिक्षक, समाजसेवियों से राष्ट नायक के सम्मान में कार्यक्रम में सहभागिता की अपील की गई है। अपील करने वालों में डॉ एसपीएस तोमर, डॉ एसपीएस तोमर, डॉ नरेश सिंह सिकरवार, अशोक शर्मा, प्रमिला तोमर, रघुराज परमार, रामबरन सिंह पायथा, विमलेश यादव, डॉ हरेंद्र तोमर, रामावतार सिंह चंबल, डॉ सुधीर आचार्य, जगदीश शर्मा, सतंजय मिश्रा, धर्म सिंह तोमर, बिहारी सिंह तोमर, जगेंद्र जादौन, भोलेराम शर्मा, पंकज शर्मा, कमलेश शर्मा, जगमोहन सेमिल, तिलक सिंह, रूप सिंह, भुवनेश्वर यादव, कुलदीप कुलश्रेष्ठ, नरेंद्र सिकरवार, मुकेश प्रजापति आदि शामिल हैं।

मारपीट के बाद भी नहीं हुई एफआईआर, पीड़ितों ने एसडीओपी से लगाई न्याय की गुहार

(चम्बलसुर्खी संवाददाता)

विजयपुर। विजयपुर क्षेत्र के अगरा थाना अंतर्गत ग्राम लारदेह निवासी एक आदिवासी परिवार ने गांव के ही दो लोगों पर जमीन हड़पने और मारपीट करने का गंभीर आरोप लगाते हुए एसडीओपी विजयपुर को आवेदन सौंपा है। पीड़िता हसीना पति संतोष आदिवासी ने आरोप लगाया कि पुलिस द्वारा कई दिनों तक शिकायत के बावजूद भी आरोपियों के खिलाफ कोई कायमी नहीं की गई, जिससे पीड़ित परिवार भयभीत और असहाय महसूस कर रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, प्रार्थीगण का भूखंड ग्राम लारदेह सहराना में आबादी क्षेत्र के अंतर्गत स्थित है, जिस पर वे पिछले 50 वर्षों से काबिज हैं। पीड़िता के अनुसार, दिनांक 01 जून 2025 की शाम करीब 3-4 बजे गांव के ही भारत यादव और पप्पू उर्फ प्रकाश यादव पुत्रगण रामजीलाल उनके प्लॉट पर पहुंचे और ज़बरन कब्जा करने की नीयत से गाली-गलौच करते हुए धमकी देने लगे। जब प्रार्थीगणों ने विरोध किया, तो आरोपियों ने महिला के साथ हाथापाई की और उसके पति के साथ भी मारपीट की। पीड़िता के अनुसार, घटना की जानकारी देने पर थाना अगरा पुलिस ने शिकायत दर्ज करने से इनकार कर दिया और उन्हें थाने से भगा दिया। पीड़िता ने यह भी बताया कि घटना के बाद से आरोपी लगातार उनके घर आकर जान से मारने की धमकी दे रहे हैं और रिपोर्ट करने पर गांव से निकालने की चेतावनी दे रहे हैं। पीड़ित पक्ष ने इस मामले में तत्काल कानूनी कार्यवाही की मांग करते हुए शिकायत की है। पीड़िता हसीना व संतोष आदिवासी ने मांग की है कि भारत यादव और पप्पू उर्फ प्रकाश यादव के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए और उन्हें न्याय दिलाया जाए।

घाटों के आसपास के क्षेत्र में धारा 163 का आदेश पुनः जारी किया जाये - कलेक्टर

मुरैना,कांस। घाटों के आसपास के क्षेत्र में धारा 163 का आदेश पुनः जारी किया जाये, वन विभाग अवैध रेत उत्खनन पर कार्रवाही करने के लिये पुलिस की सहायता लें। राजघाट से अलावेली पर बड़े-बड़े बेरिकेट लगाकर रास्तों को अवरूद्ध किया जाये। खनिज विभाग ड्रोन लोगबुक को संधारित करके रखें। ये निर्देश कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना ने मंगलवार को जिला टास्क फोर्स समिति की अध्यक्षता करते हुये दिये। बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री समीर सौरभ, वनमंडलाधिकारी श्री सुरजीत आर पटेल, अपर कलेक्टर श्री सीबी प्रसाद, खनिज अधिकारी श्री सुखदेव निर्मल, अधीक्षक राष्ट्रीय चम्बल अभ्यारण्य देवरी श्री श्याम सिंह चौहान उपस्थित थे। समिति में अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भंडारण को रोकने के बारे में विस्तार से चर्चा हुई, जिसमें कलेक्टर ने राजघाट से अलावेली तक रास्ता अवरूद्ध करने, जिससे अवैध वाहनों को जाने से रोका जा सके, के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि वन विभाग को जो अतिरिक्त कंपनी मिली है, उनकी फोर्स के ज्यादा से ज्यादा जवान राजघाट पर तैनात किये जायें। कलेक्टर ने ड्रोन ट्रेकिंग की लॉगबुक संधारित करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने अलावेली के पीछे घाट के रास्ते को बंद करवाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि घाट के पहले बड़े मैदान को समतल करवाया जाये। कलेक्टर ने 06 घाटों चिन्नोनी, देवगढ़, झुण्डपुरा, राजघाट, हरिगिरी, भानपुरा पर फोर्स द्वारा कार्रवाही करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने कहा कि वन विभाग कार्रवाही करते समय पुलिस की मदद लें। घाटों के आसपास धारा 163 का आदेश पुनः जारी किया जाये, परिवहन अधिकारी बिना फिटनेस वाले ट्रेक्टर जो कृषि कार्य में संलग्न नहीं है, उनको तत्काल बंद करवायें और उन पर कार्रवाही करें। कलेक्टर ने कहा कि बरवासेन घाट पर कार्रवाही करने के लिये उपयुक्त नीति बनाई जाये। कलेक्टर ने कहा कि पहाडगढ़ ब्लॉक से लगे चम्बल क्षेत्र में अतिक्रमण पर भी कार्यवाही की जाये एवं अवैध पत्थर खनन पर भी कड़ी कार्रवाही की जाये। पुलिस अधीक्षक श्री समीर सौरभ ने कहा कि एसडीएफ बल की संख्या बढ़ाई जाये, ताकि कार्रवाही करने में वन विभाग को परेशानी का सामना न करना पड़े। पुलिस अधीक्षक ने वन विभाग को चम्बल राजघाट क्षेत्र के आसपास अवैध रेत उत्खनन को रोकने के लिये अवरोध उत्पन्न करने की बात कही। उन्होंने कहा कि जितने भी ट्रेक्टर-ट्रॉली पकड़ी जाये, उनको राजसात किया जाये। समिति में वनमंडलाधिकारी ने बताया कि उनके द्वारा अभी तक 47 वाहनों को राजसात कर उनकी नीलामी कर दी गई है। समिति में खनिज अधिकारी श्री एस. के. निर्मल द्वारा जानकारी दी गई कि पिछले साल अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भंडारण के 807 प्रकरण दर्ज किये गये। जिसमें 01 जनवरी 2024 से लेकर 30 मई 2025 तक 334 वाहन पकड़े गये। 75 वाहनों पर राजसात की कार्रवाही की गई। 98 वाहनों पर एफआईआर दर्ज की गई एवं 266 पर वन विभाग द्वारा पीओआर दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भंडारण के मामलों में अभी तक 393 लोग शामिल पाये गये।

विभागीय परामर्शदात्री समिति की बैठक 18 जून को

मुरैना,कांस। शासन के निर्देशानुसार समस्त विभागों के संयुक्त परामर्शदात्री समिति की बैठक 18 जून को कलेक्ट्रेट सभागार मुरैना में अपरान्ह 03 बजे कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना की अध्यक्षता में आयोजित की गई है। बैठक में कर्मचारियों के हितो के संबंध में की गई कार्यवाही एवं लंबित प्रकरणों की जानकारी सहित अनिवार्यतः नियत स्थान पर उपस्थित होने के निर्देश संबंधित विभागों को जारी किये गये है। बैठक संबंधी एजेण्डानुसार जानकारी 13 जून तक अपर कलेक्टर कार्यालय में भेजने का पत्र जारी किया गया है।

जनसुनवाई में प्राप्त होने वाले आवेदनों का अधिकारी शीघ्रता से निराकरण करें - कलेक्टर

जिला मुख्यालय पर जनसुनवाई में 134 आवेदनकर्ताओं को सुना

मुरैना,कांस। मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को प्रातः 11 से दोपहर 01 बजे तक जनसुनवाई करने के निर्देश हैं। निर्देशों के तहत जिला मुख्यालय पर कलेक्ट्रट मुरैना में कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना ने जनसुनवाई की।

जनसुनवाई के दौरान 134 आवेदन प्राप्त हुये। जिसमें 128 आवेदन सामान्यतः विभागों को निराकरण करने के लिये समक्ष में बुलाकर निर्देश दिये। शेष 06 आवेदन ऐसे पाये गये, जिनका टीएल में निराकरण किया जाना संभव था, उन्हें उत्तरापोर्टल पर अपलोड करने के निर्देश एनआईसी को दिये। जनसुनवाई के दौरान अपर कलेक्टर श्री सीबी प्रसाद, संयुक्त कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार सहित समस्त विभागों के जिला अधिकारी मौजूद थे। जनसुनवाई में अधिकतर नेशनल हाइवे 552 में जमीन के मुआवजा, सेवानिवृत्ति के पश्चात् होने वाला भुगतान, आंगनवाड़ी सहायिका का वेतन भुगतान, अतिथि शिक्षक का मानदेय, कैलारस में रेलवे लाइन हेतु भूमि स्वामी के भूखंड का मुआवजा, पारिवारिक विवाद, बीपीएल कार्ड, पेंशन, आवास संबंधी आवेदन प्राप्त हुये। जिनका कलेक्टर ने बार-बारी से निराकरण कराने हेतु अधिकारियों को निर्देश दिये।

झुलसा देने वाली गर्मी से हाल बेहाल लोग, सड़कों पर पसरा सन्नाटा

गर्मी के कारण बाजारों में कोई चहल पहल नहीं

कैलारस। शरीर झुलसा देने वाली तेज गर्म हवाएं और बढ़ते तापमान के कारण लोगों के हल बेहाल हे कैलारस के बाजारों में इस कारण सन्नाटा पसरा हुआ हे सुबह 10 बजे के बाद लोगो का घर से निकलना दूभर हो जाता हे मौसम का तापमान बढ़ता जा रहा हे, मंगलवार को सुबह से ही चिलचिलाती धूप ने लोगों को झुलसाने वाली गर्मी से रूबरू करवा दिया वही कैलारस शहर के लोग गर्म हवाओं ओर गर्मी से बेहाल हो गए। मंगलवार को सुबह से ही गर्म हवाओं झलसने बाली गर्मी पड़ने लगीं गर्म हवाओं से कैलारस शहर की सड़कें सूनी हो गई भीड़ भाड़ बाली सड़को पर भी कर्फ्यू सा लग गया 10 बजे ही गर्म हवाएं चलने लगी दोपहर से तो हालत यह हो गई, मानो आसमान से आग बरस रही है। झुलसाने वाली धूप के साथ लू के थपेड़ों ने जनजीवन बेहाल कर दिया। दोपहर के समय सड़कों और बाजारों में सन्नाटा छा गया। गर्मी का यह रौद्र रूप शाम तक रहा शाम5 बजे के बाद सड़क व बाजारों में चहल-पहल बढ़ी। शाम के समय धूप की तपन कम हुई, लेकिन चिपचिपाने वाली उसमभरी गर्मी लोगों को बेहाल करने लगी। देर रात तक कूलर की हवा भी उमस से राहत नहीं दे पा रही हैं। मौसम विभाग के अनुसार आगामी सप्ताह गर्मी के मिजाज ऐसे ही रहेंगे। इस सप्ताह गर्मी रहेगी प्रचंड रूप में मौसम विभाग के अनुसार वही दो तीन दिन से लगातार गर्म हवाएं चल रही हैं यानी नौतपा में जिस गर्मी से राहत रही, उस गर्मी का अब सामना करना पड़ेगा। मंगलवार को अधिकतम तापमान 45 डिग्री तक पहुंच गया वहीं इस संबंध में डॉ एस आर मिश्रा ने बताया कि गर्मी के मौसम लू लगने की संभावना रहती हे शरीर को ढक कर रखे और पानी अधिक पिए।

संगठन श्रृजन के तहत जिला मुख्यालय पर कांग्रेस के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक ने कार्यकर्ताओं से लिये सुझाव, सभी वर्ग के उत्कृष्ट नेतृत्व को दी जाएगी जिम्मेदारी : जी. रूद्र राजू

मुरैना,कांस। कांग्रेस संगठन को जिला स्तर पर मजबूत करने के लिये संगठन श्रृजन अभियान के तहत कांग्रेस की जिला स्तरीय बैठक का आयोजन गांधी मैरिज होम में किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से नियुक्त केन्द्रीय पर्यवेक्षक एवं आंध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष जी. रुद्र राजू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने आज सभी वरिष्ठ व कनिष्ठ कार्यकर्ताओं से संगठन को मजबूत बनाने के लिये सुझाव लिये। इसी तरह आगामी दो दिवस में विधानसभा स्तर पर बैठक के माध्यम से कार्यकर्ताओं के सुझाव लेकर जिला कांग्रेस अध्यक्ष का पैनल बनाकर राष्ट्रीय कार्यालय में प्रतिवेदन के साथ प्रस्तुत किया जायेगा। केन्द्रीय पर्यवेक्षक जी. रूद्र राजू ने पत्रकारों से चर्चा करते हुये बताया कि राष्ट्रीय नेतृत्व के अनुसार संगठन ने एससी-एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यक वर्ग के उत्कृष्ट नेतृत्व को जिले से राष्ट स्तर तक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जायेगी। हालांकि सामान्य वर्ग के लिये उन्होंने कहा कि वह पूर्व से ही राष्ट्रीय नेतृत्व दल में शामिल है। इस अवसर पर भाजपा की केन्द्र सरकार के 11 साल की उपलब्धियों को झूठ का पुलिंदा बताते हुये एक पत्र सार्वजनिक किया। वहीं भाजपा सरकार द्वारा जीएसटी को लेकर वन नेशन वन टेक्स के दावे को भी गलत बताते हुये कहा कि इससे मध्यम वर्ग की कमर टूट रही है। एक ही विषय व स्थान को लेकर अलग-अलग टेक्स गठित किया गया है। जिसमें अनेकों विसंगति है। कांग्रेस ने वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर कमेटी गठित की है। रिपोर्ट आने पर आगामी निर्णय लेने का दावा किया है। श्री राजू ने बताया कि देश का पहला इलेक्शन 1952 में वन नेशन वन इलेक्शन के मान से ही हुआ था। राज्यों की परिस्थितियों के अनुकूल यह अलग-अलग होने लगा है। आईपीएल की विजेता आरसीबी के विजय उत्सव में हुई मौतों को लेकर उन्होंने दावा किया कि जिम्मेदार पर कर्नाटक सरकार कार्यवाही कर रही है। इस अवसर पर सिद्धार्थ कुशवाह विधायक सतना एवं प्रभारी शहर जिला कांग्रेस कमेटी मुरैना, डॉ महेंद्र सिंह चौहान पर्यवेक्षक (प्रभारी प्रकोष्ठ एवं विभाग) के साथ जिला कांग्रेस अध्यक्ष ग्रामीण मधुराज सिंह तोमर, जिला कांग्रेस शहर अध्यक्ष दीपक शर्मा, विधायकगण दिनेश गुर्जर मुरैना, पंकज उपाध्याय जौरा, लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी एवं सुमावली के पूर्व विधायक सत्यपाल सिंह सिकरवार, प्रदेश कांग्रेस पदाधिकारी रामलखन डण्डौतिया, नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष विनीत कंषाना, जिला कांग्रेस कमेटी प्रवक्ता हरीश पाठक भी मौजूद थे। वहीं बैठक में कांग्रेस के राष्ट्रीय व राज्य प्रतिनिधी, पूर्व सांसद व विधायक देवेन्द्र रामनारायण सखबार, भगवान सिंह तोमर, राकेश यादव, राजेन्द्र यादव, मानवेन्द्र सिंह सिकरवार, राजेश राठौर यूनिस पठान पोरसा सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर का समापन एवं पुरुस्कार वितरण सम्पन्न

श्योपुर ब्यूरो। खेल एवं युवक कल्याण विभाग अंतर्गत गत एक माह से जारी खेल प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक श्री वीरेन्द्र जैन ने कहा कि खेलो से युवाओं का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। समर कैम्प के माध्यम से युवाओं एवं किशोरो को विभिन्न खेलो में प्रशिक्षण के अवसर पर उपलब्ध कराये गये है। बायपास पार्क में आयोजित समापन समारोह के दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर, खो-खो हॉकी संघ के अध्यक्ष श्री बिहारी सिंह सोलंकी, भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य श्री रामलखन नापाखेड़ली विधायक प्रतिनिधि श्री सिराज दाउदी, खेल संघ के पदाधिकारी श्री राघवेन्द्र जाट, पार्षद श्री राजेन्द्र मित्तल, जिला खेल अधिकारी श्री अरूण सिंह चौहान आदि उपस्थित थे। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर ने कहा कि खेलो से अनुशासन की भावना विकसित होती है, उन्होने कहा कि ग्रामीण अंचल में भी खेलो के विकास के लिए कार्य किये जायेगे। पंचायतो में खेल मैदानों को विकसित किया जायेगा। इसके पूर्व जिला खेल अधिकारी श्री अरूण चौहान द्वारा विभागीय अधोसंरचना एवं अन्य योजनाओं जैसे खेलो बढ़ो अभियान, मां तुझे प्रणाम, खेलो एम.पी. इत्यादि के बारे में बताया गया, उन्होने कहा कि एक माह और 5 दिन तक आयोजित खेल शिविर के माध्यम से कराते, हॉकी, फुटबॉल, खो-खो, वेट लिफ्टिंग, टेबिल टेनिस आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया, समर कैम्प में 640 खिलाड़ियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान समर कैम्प के प्रशिक्षकों को अतिथियों द्वारा ट्रैकसूट प्रदान कर सम्मानित किया गया एवं प्रशिक्षण भाग लेने वाले सभी खिलाडियों को प्रमाण पत्र भेंट किये गये। साथ ही सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किये गये। इस अवसर पर श्री आशीष दुबे युवा समन्वयक कराहल श्रीमती बिन्दू शर्मा युवा समन्वयक श्योपुर, श्री डेलन सिह जिला खेल प्रशिक्षक ग्रेड 02, श्री पकज शर्मा सचिव जिला खो-खो संघ, डॉ. मनु प्रताप सिंह भदौरिया खेल अधिकारी पी.जी. कॉलेज, श्री सचिन वैष्णव सचिव जिला हॉकी संघ, श्री विक्रम सिंह परिहार सचिव जिला फुटबाल संघ, श्री सोनू शर्मा, श्री कुणाल गौड फुटबाल प्रशिक्षक, श्री मनन गुप्ता खो-खो प्रशिक्षक, श्री सूरज भदौरिया वेटलिफ्टिंग प्रशिक्षक, श्री गौरव राजपूत टेबल टेनिस प्रशिक्षक श्री उदय सिंह राजावत, श्री दुर्गेश चौहान, सुश्री मुस्कान गुर्जर कराते प्रशिक्षक, श्री बलवीर गुर्जर जिम प्रशिक्षक खेल विभाग, श्री वीरेन्द्र सोलंकी बॉलीबाल प्रशिक्षक, श्री अभिषेक परिहार, श्री अजय रजक, श्री मुरारी गोयल, श्री गणेश अग्रवाल श्री सोनू अग्रवाल, श्री नितिन गुप्ता एवं बड़ी संख्या में खिलाडी तथा उनके अभिभावक उपस्थित रहें।

सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना में होगा 20 हजार करोड़ रुपये का निवेश : मुख्यमंत्री

छोटे निवेशक होंगे लाभान्वित, किसान भी बनेंगे निवेशक

मध्यप्रदेश के सोलर ऊर्जा उत्पादन से नई दिल्ली में चल रही है मेट्रो ट्रेन

प्रदेश में ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में हुई है अभूतपूर्व प्रगति

पड़ौसी राज्यों के साथ मिलकर 6-6 महीने के लिए शुरू किए जाएंगे सोलर प्रोजेक्ट

बड़े पैमाने पर सोलर तथा पवन ऊर्जा का हो रहा है उत्पादन

भोपाल ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सिरमौर बनाने के लिये प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा देश में वर्ष 2030 तक 500 गीगावॉट तक सौर ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के स्वप्न को साकार करने में मध्यप्रदेश शत-प्रतिशत योगदान देगा। उन्होंने कहा कि भोपाल में सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना समिट में देश एवं प्रदेश के 350 से अधिक निवेशकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की है। सभी के उत्साह का ही परिणाम है कि योजना में 20 हजार करोड़ से अधिक राशि का निवेश होना संभावित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में %सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना% समिट को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्लोबल एक्सपर्ट एवं जेआईजेड के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री बर्नार्ड क्रूजबर को तकनीकी सहयोग के लिए सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्?द्र मोदी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नायक हैं। श्री मोदी के नेतृत्व में हर क्षेत्र में विकास हो रहा है। ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। प्रदेश में सोलर तथा पवन ऊर्जा का बड़े पैमाने पर उत्पादन हो रहा है। मध्यप्रदेश के सोलर ऊर्जा उत्पादन से नई दिल्ली में मेट्रो ट्रेन चल रही है और कई घरों को बिजली मिल रही है। निकट भविष्य में पड़ोसी राज्यों के साथ मिलकर 6-6 महीने बिजली उपलब्धता के लिए सोलर प्रोजेक्ट शुरू किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के कार्यकाल में राज्यों के बीच सौहार्द्र का वातावरण बना है। मध्यप्रदेश ने उत्तरप्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के साथ नदी जोड़ो परियोजनाएं शुरू की हैं। ऊर्जा उत्पादन में नागरिकों को जोड़कर अभियान चलाया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सूर्य अनंत ऊर्जा का भंडार है। सूर्य देव हमारे सौरमंडल में ऊर्जा के प्रमुख केंद्र हैं। ऋषि-मुनियों ने बताया है कि सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। प्रकाश से ही जीवन मिलता है।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी आवेदकों की समस्याएं जनसुनवाई में 126 आवेदन प्राप्त हुए

भोपाल ब्यूरो।

कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने मंगलवार को जिले से जनसुनवाई में आए नागरिकों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान अनेक समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया गया। जनसुनवाई में आए नागरिकों से 126 आवेदन प्राप्त हुए एवं कुछ प्रकरणों का मौके पर ही निराकरण किया गया। इस मौके पर एडीएम श्री भूपेन्द्र गोयल, श्री अंकुर मेश्राम, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती इला तिवारी एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। कलेक्टर श्री सिंह ने जनसुनवाई में आए हर एक आवेदक से धैर्यपूर्वक उनकी समस्याओं पर चर्चा की और उन्हें उनके शीघ्र निराकरण का आश्वासन भी दिया। उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को नागरिकों से प्राप्त आवेदनों पर संवेदनशील रूख अपनाते हुए निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने आवेदकों की समस्याओं पर संबंधित क्षेत्र के अधिकारियों को कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

सामाजिक सुरक्षा पेंशन धारी समग्र आईडी में शीघ्र केवाईसी करायें: जौहरी

ग्वालियर कांस। अनुसार वरिष्ठ समाजसेवी ओर राष्ट्रीय शसक्त आत्मनिर्भर ट्रस्ट नई दिल्ली के राष्ट्रीय सलाहकार अनूप जौहरी ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम जनकल्याण विभाग से प्राप्त जानकारी से पेंशन हित ग्राहियों में विकलांग, वृद्ध, विधवा एवं परित्यागता निराश्रित अपनी परिवार समग्र आई डी में आपके परिवार के जितने भी सदस्य है उन सभी के एवं अपने स्वयं के आधार कार्ड को समग्र आईडी में , अपने क्षेत्र के वार्ड में , या एमपी ऑन लाइन, एवं अपने क्षेत्र के लोक सेवा केन्द्र में जाकर केवाईसी नि:शुल्क शीघ्र करवायें अन्यथा आपकी पेंशन एवं राशन बन्द हो जायगा भविष्य में होने वाली परेशानी से बचने के लिए शीघ्र ही केवाईसी करायें इसके अलावा जिस बैंक में आपकी सामाजिक सुरक्षा पेंशन आती है, अपनी अपनी बेंक में भी जाकर केवाईसी शीघ्र करवायें अन्यथा केवाईसी नहीं कराने की स्थिति में बैंक भी आपको भुगतान नहीं करेगी। जिन पेंशन हित ग्राहियों ने अपनी केवाईसी समग्र आई डी में कराली है ।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु 19 जून को आएंगी मध्यप्रदेश : मुख्यमंत्री

विश्व सिकल सेल दिवस पर बड़वानी जिले की ग्राम पंचायत तालून में होगा कार्यक्रम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रि-परिषद की बैठक प्रारंभ होने के पहले की मंत्रीगण से चर्चा

भोपाल ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया कि राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का आगामी 19 जून को मध्यप्रदेश आगमन प्रस्तावित है। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु विश्व सिकल सेल दिवस पर बड़वानी जिले की ग्राम पंचायत तालून में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में शासकीय सेवकों के स्थानांतरण अब 17 जून तक किए जा सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को मंत्रालय में मंत्रि-परिषद की बैठक प्रारंभ होने के पहले मंत्रीगण से चर्चा कर रहे थे। उन्होंने राज्य सरकार की प्राथमिकताओं के संबंध में मंत्रीगण से विचार विमर्श किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के सफल कार्यकाल के 11 वर्ष पूर्ण होने पर मंत्रि-परिषद प्रसन्नता व्यक्त करती है। सुशासन के संकल्प के प्रति मंत्रि-परिषद प्रधानमंत्री का अभिनंदन का प्रस्ताव पारित करती है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अन्नदाता, नारी, युवा और गरीब सहित विभिन्न वर्गों का जीवन बदलने के लिए और उन्हें अधिक से अधिक रोजगार एवं विकास के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए कार्य किया जा रहा है। इस अवधि में केंद्र सरकार द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

सभी मंत्रीगण केंद्र की 11 वर्ष की योजनाओं की उपलब्धियां और मध्यप्रदेश शासन की डेढ़ वर्ष की उपलब्धियां नागरिकों तक पहुंचाएंगे। इस संबंध में संकल्प से सिद्धि अभियान भी संचालित होगा, जिसमें जनप्रतिनिधियों को दायित्व सौंपे जाएंगे।

स्पिरिचुअल एवं वैलनेस समिट

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि गत 5 जून को उज्जैन में स्पिरिचुअल एंड वैलनेस समिट का आयोजन हुआ, जिसमें स्वामी चिदानंद सरस्वती सहित अनेक वैलनेस के क्षेत्र में कार्य कर रहे आध्यात्मिक गुरुओं ने हिस्सा लिया।

समस्यायें शीघ्र हल न होने पर ऊर्जा मंत्री को महिलायें पहनाएंगी चूडियां, गली-गली में जलाए जायेंगे पूतले: विधायक डॉ. सिकरवार

- कांग्रेस के धरने में हजारों का उमड़ा जनसैलाब, मुख्यमंत्री के नाम 10 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा

ग्वालियर। शहर में हो रही बेतहाशा अघोषित बिजली कटौती एवं बिजली विभाग से जुडी अन्य समस्याओं को लेकर आज बिजली विभाग के मुख्य कार्यालय रोशनी घर पर विधायक डॉ. सतीश सिकरवार के नेतृत्व में जंगी धरना प्रदर्शन किया गया। इसमें हजारों महिला-पुरूष शामिल हुये। साथ ही इस दौरान 10 सूत्रीय समस्यायुक्त ज्ञापन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम अधीक्षण यंत्री बिजली विभाग नितिन मांगलिक को कांग्रेसजनों द्वारा सौंपा गया। विधायक डॉ. सिकरवार ने धरना-प्रदर्शन को संबोधित करते हुये ऐलान किया कि अगर अतिशीघ्र ज्ञापन में उल्लेखित समस्याओं को समाधान नहीं किया गया तो 50 हजार महिला-पुरूषों के साथ ऊर्जा मंत्री के निवास पर धरना प्रदर्शन किया जायेगा और गली-गली में पुतले जलाये जायेंगे। धरना प्रदर्शन में कांग्रेस पार्टी, सोनिया गांधी, मलिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, जीतू पटवारी एवं उमंग सिंघार के जिंदाबाद के नारे गूंजते रहे। धरने पर बैठे लोग ऊर्जा मंत्री होश में आओं, बिजली समस्या हल कराओं के नारे लिखी तख्तियां लिये हुये थे। विधायक डॉ. सिकरवार ने धरना प्रदर्शन में उमड़े जन सैलाब को संबोधित करते हुये कहा कि गरीबों को बढे हुये बिजली के बिल भेजे जा रहे है और मंत्री जी पार्क में टेंट लगाकर सो रहे हैं। आखिर वे कब तक इस तरह की नौटंकी और ड्रामा करते रहेंगे। टेंट में सारी सुविधायें उपलब्ध है, जिसमें वह सरकारी धन का दुरपयोग कर अधिकारियों-कर्मचारियों को भी परेशान कर रहें है, ये सब हाथों पर हाथ रखे खड़े रहते हैं। उन्होंने कहा कि मंत्री जी जब विपक्ष में थे तब नसेनी कंधे पर रखकर चलते थे और बिजली के तार जोड़ते थे। मगर आज सत्ता में इतने मद-मस्त हैं कि लोगों के बिजली कनेक्शन कटवा रहे हैं।

परिवार की रक्षा के लिए साहस और दृढ़ता से सामना करना चाहिए: पंडित सतीशचंद

कथा के पांचवें दिन भगवान कृष्ण की तमाम लीलाओं का किया वर्णन, श्रद्धालु हुए मंत्र मुग्ध

मुरैना,कांस। श्री श्री 1008 दुर्जन बाबा मंदिर ग्राम डोंगरपुर किरार मैं आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के पांचवें दिन पंडित सतीश चंद्र पाराशर ने संगीतम वाणी से कथा का श्रवण कराते हुए कहा कि भगवान को भी अपने परिवार की रक्षा के लिए गोकुल छोड़ना पड़ा द्य परिवार की रक्षा के लिए साहस और दृढ़ता से सामना करना चाहिए, यह बात भगवान श्री कृष्ण ने चरितार्थ की है। उन्होंने मंगलवार को पूतना वध, बाल लीला, माखन चोरी लीला, गोकुल त्याग लीला, वृंदावन लीला, गिरिराज पूजन एवं 56 भोग दर्शन की कथा का रसपान श्रद्धालुओं को कराया द्य श्री पाराशर ने बताया कि पूतना वध की कथा श्री कृष्ण के बाललीला के सबसे महत्वपूर्ण अंशों में से एक है। कंस ने पूतना को, जो एक राक्षसी थी, को बाल कृष्ण को मारने के लिए भेजा था। पूतना ने सुंदर स्त्री का रूप धारण किया और गोकुल में कृष्ण को ढूंढ निकाला। उसने कृष्ण को दुग्धपान कराया, लेकिन कृष्ण ने पूतना के असली रूप को पहचान लिया और पूतना को मार डाला द्यश्रीकृष्ण की बाल लीलाओं में माखन चोरी की लीला सुप्रसिध्द है। वैसे तो कान्हा ग्वालिनों के घरो में जाकर माखन चुराकर खाया करते थे, लेकिन आज उन्होंने अपने ही घर में माखन चोरी की और यशोदा मैया ने उन्हें देख लिया। सूरदासजी ने श्रीकृष्ण की चतुराई का जिस प्रकार वर्णन किया है, वैसा कही नहीं मिलता। गोकुल त्याग लीला कृष्ण के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है, जो बताती है कि कंस के अत्याचारों से बचने के लिए कृष्ण और उनका परिवार गोकुल को छोड़ वृंदावन चले गए। यह लीला कृष्ण की बाल लीलाओं में से एक है और उनकी दृढ़ता और जिम्मेदारी की भावना को दर्शाती है। श्री पाराशर ने बताया कि कंस के डर से वासुदेव ने नवजात कृष्ण को यमुना नदी पार गोकुल में यशोदा के यहाँ पहुँचाया था। कृष्ण ने गोकुल में कुछ समय बिताया, जहां उन्होंने कई बाल लीलाएं कीं। बाद में, कंस के अत्याचारों से डरकर और कृष्ण के परिवार की सुरक्षा के लिए, वासुदेव और यशोदा ने गोकुल को छोड़ वृंदावन में बसने का फैसला किया। गोकुल त्याग लीला कृष्ण के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है, क्योंकि यह उनकी दृढ़ता, जिम्मेदारी की भावना और कंस के अत्याचारों से डरने की बात को रेखांकित करती है। यह दर्शाता है कि कृष्ण ने अपने माता-पिता और परिवार की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास किया। गोकुल त्याग लीला हमें यह सिखाती है कि हमें हमेशा अपने परिवार की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए और मुश्किल समय में भी साहस और दृढ़ता से सामना करना चाहिए। यह हमें सिखाती है कि हमें हमेशा न्याय और सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए और अत्याचार और अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। गोवर्धन पूजा का रसपान कराते हुए कहा कि इंद्र देव के प्रकोप से ब्रजवासियों की रक्षा के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठाया और सात दिन तक ब्रजवासियों को उसकी छाया में शरण दी।

यह लीला गोवर्धन पूजा के रूप में मनाई जाती है, जिसमें भगवान कृष्ण को अन्नकूट का भोग लगाया जाता है और गोवर्धन पर्वत की पूजा की जाती है द्य श्री पाराशर ने बताया कि जब भगवान कृष्ण ने ब्रजवासियों को इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत उठाया था, तो उन्होंने 7 दिनों तक कुछ नहीं खाया था द्य फिर ब्रजवासियों और यशोदा ने अपनी कृतज्ञता के रूप में 56 विभिन्न प्रकार के भोगों का प्रसाद चढ़ाया, जिससे 56 भोग की परंपरा शुरू हुई।

उत्तर मध्य रेलवे

पत्रांकः झाँसी/एरा/106/प्रेस विज्ञप्ति — दिनांकः 09.06.2025

सार्वजनिक अधिसूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि झांसी मंडल के बरुआसागर-टेहरका खंड के 2nd लाइन विद्युतीकरण के सम्बंध में दिनांक 11.06.2025 को PCEE/NCR का निरीक्षण एवं 12.06.2025 तथा 13.06.2025 को रेल सुरक्षा आयुक्त पूर्वोत्तर परिमंडल लखनऊ द्वारा इस खंड में निरीक्षण एवं गति परीक्षण निरीक्षण के पश्चात् इस खंड की 2nd लाइन का विद्युतीकरण संचालित कर दिया जाएगा। आस पास के सभी नागरिकों से अनुरोध है की विद्युत के तार और खम्भों से दूर रहे, रेल लाइन के आस-पास न बैठे, और न ही अनाधिकृत रूप से पार करें एवं अपने मवेशियों को रेल पटरी से दूर रखें। ऐसा करना रेलवे अधिनियम के अन्तर्गत दंडनीय अपराध है और इसके लिये जुर्माना व जेल अथवा दोनों हो सकते हैं।

वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी, उत्तर मध्य रेलवे, झाँसी

1005/25(A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

पत्र सं JHS/Comm/e-Auction/25/109 — दिनांक - 09.06.2025

ई-नीलामी सूचना

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

ई-निविदा सूचना

997/25(A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

मरीजों व तीमारदारों की सुविधा के लिए मलखान सिंह जिला चिकित्सालय में की गई विशेष व्यवस्थाएं

अलीगढ़ ब्यूरो।

गर्मी के मौसम में मरीजों व उनके साथ आए तीमारदारों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए मलखान सिंह जिला चिकित्सालय में व्यापक स्तर पर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। यह जानकारी मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ0 जगवीर सिंह वर्मा द्वारा दी गई है।

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ जगवीर सिंह वर्मा ने बताया कि चिकित्सालय परिसर में विभिन्न स्थलों पर शीतल जल की उपलब्धता, छांव में बैठने की समुचित व्यवस्था व ठंडी हवा के लिए पंखों व कूलर की व्यवस्था की गई है, ताकि मरीजों को राहत मिल सके। एक्स-रे एवं अल्ट्रासाउंड अनुभाग में आने वाले मरीजों को भी विशेष सुविधा दी जा रही है। पर्चे एकत्र कर मरीजों को क्रम से बुलाया जाता है, जिससे लाइन में खड़े होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इनके लिए भी ठंडे पेयजल, छायादार प्रतीक्षालय व कूलर व पंखों की पर्याप्त व्यवस्था है। उन्होंने बताया कि पर्चा काउंटर, सभी ओपीडी कक्षों, दवा वितरण केंद्र, पैथोलॉजी, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड एवं आकस्मिक अनुभाग के समीप भी मरीजों एवं उनके परिजनों की सुविधा के लिए शीतल जल, बैठने व ठंडी हवा की समुचित व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि जिला अस्पताल प्रशासन जनसुविधाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है और आने वाले समय में मरीजों के हित में अन्य सुविधाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

ग्वालियर स्टेशन पर यूनीफाइड पेंशन स्कीम जागरुकता शिविर आयोजित

ग्वालियर,नसं.।

मंडल रेल प्रबंधक महोदय के निर्देशन तथा वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी राजेश कुमार शर्मा के मार्गदर्शन एवं मंडल कार्मिक कार्मिक अधिकारी अरुण सिंह तोमर के दिशानिर्देशों में तथा कार्मिक एवं लेखा शाखा के समन्वय से ग्वालियर स्टेशन पर यूनीफाइड पेंशन स्कीम जागरुकता शिविर आयोजित किया गया । कैरिज एन्ड वैगन एवं ई.टी. एल अनुभाग हेतु कैरिज एन्ड वैगन सभागर में प्रातः 10.30 बजे से जागरुकता शिविर आयोजित किया गया जिसमें लगभग 80 कर्मचारियों ने अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की। दोपहर 3 बजे से ड्राइवर-गार्ड लौबी पर जागरुकता शिविर आयोजित किया गया जिसमें लगभग 40 कर्मचारियों ने अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की। जागरुकता शिविर के दौरान 115 कर्मचारियों को विस्तार से यूनीफाइड पेंशन स्कीम के बारे जानकारी प्रदान की गई तथा कर्मचारियों के मध्य यूनीफाइड पेंशन स्कीम के सम्बंध में विध्यमान प्रचलित मिथकों को दूर करने का प्रयास किया गया।

उत्तर मध्य रेलवे

पत्र सं.- JHS/Commercial/e-Auction/2025/110 — दिनांक : 09.06.2025

ई-नीलामी सूचना

ई-नीलामी प्रारम्भ होने की तिथि व समय : दिनांक 23.06.2025 को समय- 11:00 से

ई-नीलामी समाप्त होने की तिथि व समय : दिनांक 23.06.2025 को समय- 12:20 तक

938/25 (MC)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है। कि उत्तर मध्य रेलवे के आगरा मंडल में आगरा-पलवल सेक्शन में किमी. 1418/08-10 पर समपार (फाटक) संख्या 538 (सिवाना-अकबरपुर रोड) दिनांक 12.06.2025 से रेल फाटक ओवर ब्रिज कार्य के लिए बंद किया जा रहा हैं और समपार संख्या 538 से गुजरने वाले ट्रैफिक को रेलवे समपार (फाटक) संख्या 537 एवं समपार (फाटक) संख्या 539 के रास्ते से डाईवर्ट किया जाना है। जन-साधारण से अनुरोध है कि उक्त कार्य में सहयोग प्रदान करें।

1012/25(DG)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक रामविलास शर्मा द्वारा चम्बल प्रिंटिंग प्रेस इण्डस्ट्रीज एरिया बानमोर से मुद्रित व एस 12 द्वितीय तल रायल प्लाजा पुराने हाईकोर्ट के सामने ग्वालियर से प्रकाशित । प्रधान संपादक रामविलास शर्मा मोबा.- 9329077393
email-chambalsurkhi@yahoo.com आर.एन.आई. पंजीयन नं MPHIN/2007/20705 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र मुरैना रहेगा। कानूनी सलाहकार युवराज कुलश्रेष्ठ एडवोकेट मो.9229842150 फोन- (07532)- 225779,9827679954